Niamat Singh Jain Tract Series No 20

ॐ

सती

मैनासुन्दरी नाटक

Sati Maina Sundari Natak

प्रणेता
न्यामत सिंह जैनी
हिसार (पंजाब)

Niamat Singh Jain Tract Series No 20

न्यामत सिंह रचित जैन ग्रंथ माला अंक २०

मैना सुन्दरी नाटक

इसमें तक़दीर व तदबीर का फ़ोटो व सती मैनासुन्दरी व महाराजा श्रीपाल का चारित्र भली प्रकार दिखाया गया है

जिसको

न्यामतसिंह जैनी सेक्रेटरी डिस्टरिक्ट बोर्ड हिसार ने सर्व साधारण के हितार्थ रचा।

प० मातीराम त्रिपाठी के देशोपकारक प्रेस

लखनऊ में छपा।

श्रीवीर निर्वाण सम्वत् २४५० (१९२४ ई०)

सप्तमा वृत्ति १००० कापी मूल्य २॥)

(नोटिस)

न्यामतसिंह रचित जैन ग्रन्थमाला के निम्न लिखित भाग तय्यार हो चुके हैं परन्तु अभी तक वह ही भाग छपे हैं जिनके सामने मूल्य लिखा गया है अन्य भाग भी छप रहे हैं शीघ्र ही प्रकाशित होने वाले हैं ॥

		नागरी	उर्दू
१ जिनेन्द्र भजन माला	...	।-)	०
२ जैन भजन रत्नावली	...	।)	०
३ मूर्ति मंडन प्रकाश (जैन भजन पुष्पावली)	...	।)	०
४	...	०	०
५	...	०	०
६ भविसदत्त तिलकासुन्दरी नाटक		१॥)	॥)
७ जैन भजन मुक्तावली		।)	०
८ राजुल भजन एकादशी	...	-)	०
९ श्री गान जैन भजन पचीसी	...	=)	०
१० कलियुग लीला भजनावली	...	=)	-)॥
११ कुन्ती नाटक	...	≡)	०
१२ चिदानन्द शिवसुन्दरी नाटक	...	॥।)	।=)
१३ अनाथ रुदन	.	-)	०
४	...	०	०
५	..	०	०
६	...	०	०
७	..	०	०
८ जैन भजन शतक	...	।=)	०
९ प्रेटीकल जैन भजन मंजरी	...	≡)	=)
० मैनासुन्दरी नाटक (बड़ासाइज मोटे अक्षर मोटा कागज)		२॥)	०

पुस्तक मिलने का पता—

न्यामतसिंह जैनी सेक्रेटरी डिस्ट्रिक्ट बोर्ड मु० हिसार (पंजाब)

Niamat Singh Jain,

Secretary District ...SAR (P...

नियम

(१) चिट्ठी में पता साफ नागरी व उर्दू व अंग्रेजी में लिखना चाहिये ॥

(२) यदि किसी चिट्ठी का जवाब न पहुँचे तो दूसरी चिट्ठी साफ़ पते की आनी चाहिये ॥

(३) ५) रुपये से कम पर कोई कमीशन नहीं दिया जाएगा ५) रु० पर या ५) रु० से ज्यादे पर २० सैकड़ा कमीशन दिया जावेगा ॥

(४) कोई साहेब बी० पी० वापिस न करें वरने डाक महसूल उनको देना होगा ॥

(५) चिट्ठी में साफ लिखना चाहिये कि पुस्तक नागरी की दरकार है या उर्दू की ॥

पुस्तक मिलने का पता—

बाबू न्यामतसिंह जैनी सेक्रेटरी डिस्ट्रिक्ट बोर्ड मु० हिसार (पंजाब)

B. NIAMAT SINGH JAINI

Secretary District Board Hissar.

HISSAR Distt (Punjab)

विशेष सूचना।

(१) यह मैनासुन्दरी नाटक सन् १९०६ में बनाना प्रारम्भ किया था॥ १६ दिसम्बर १९१२ को समाप्त होनेपर छपवाकर सर्व भाइयोंके हितार्थ प्रकाशित किया गया था यह नाटकभी पाल चरित्र शास्त्रानुसार रचा गया है॥

(२) इस नाटक को किस्सा कहानी समझकर इसकी अविनय नहीं करनी चाहिये बल्कि जैनशास्त्र समझ कर इसको विनय पूर्वक पढ़े क्योंकी इसमें श्रीजैनशास्त्रका रहस्य दिखाया गया है॥

(३) इस नाटक को भादों में और खासकर अठाई के पर्व में श्रीमन्दिरजी में रातके समय सभाके बीचमें नाटकके तौर पर पढना चाहिये और नाटकपात्र अलग अलग होने चाहियें॥

(४) इस नाटक के वास्ते हारमोनियम बाजा और तबला अवश्य होने चाहियें॥

(५) चूंकि यह धार्मिक नाटक है इसलिये इसके पढते सुनते समय किसी प्रकार की अविनय या अनुचित हंसी मसखरी नहीं होनी चाहिये॥

(६) प्रथम अडीशन छपने के समय शीघ्रता के कारण इस पुस्तक पर विशेष ध्यान नहीं दिया जा सका था सो कहीं २ इसमें त्रुटी रह गई थीं वह दूसरी अडीशन (सन् १९१५) में पूरी करदी गई थीं इस कारण भजनों की तादाद बढ़ गई थी। जो ग़ैर जरूरी बात समझी गई थी वह निकाल दीगई थी॥

(७) इस नाटक की अबतक सात एडीशन इस प्रकार प्रकाशित हुई है॥

१ प्रथमा वृत्ति	सन्	१९१२	में	१०००	कापी	मूल्य	१॥)
२ द्वितीया वृत्ति	,,	१९१५	,,	२०००	,,	,,	१॥)
३ त्रितीया वृत्ति	,,	१९१८	,,	१०००	,,	,,	१॥)
४ चतुर्था वृत्ति	,,	१९१९	,,	१०००	,,	,,	२॥)
५ पचमा वृत्ति	,,	१९२१	,,	१०००	,,	,,	२॥)
६ षष्ठमा वृत्ति	,,	१९२३	,,	१०००	,,	,,	२॥)
७ सप्तमा वृत्ति	,,	१९२४	,,	१०००	,,	,,	२॥)

न्यामत सिंह जैन—२० मई सन् १९२३ ई०

१२ सितम्बर सन् १९२२

श्रीवीतरागायनमः

नाटक पात्र पुरुषों के नाम

—:❀:—

अरीदमन—चम्पापुर नगरका राजा (श्रीपालका पिता

वीरदमन—राजा अरीदमनका भाई (श्रीपालका चचा

श्रीपाल—राजा अरीदमनका पुत्र

पहुपाल—उज्जैन नगरीका राजा (मैनासुन्दरीका पिता

कनककेतू—हंसद्वीपका राजा (रैनमंजूषाका पिता)

भूमंडल—कुमकुमद्वीपका राजा (गुणमालाका पिता)

धवल सेठ—कोशंबीपुर नगरका सेठ ॥

सुमत प्रकाश—धवल सेठका मंत्री

कुमत प्रकाश—धवल सेठका मंत्री

नाटक पात्र स्त्रियोंके नाम

कुन्दप्रभा—राजा अरीदमनकी पटराणी (श्रीपालकी माता

निपुणसुन्दरी—राजा पहुपालकी पटराणी

सुरसुन्दरी—राजा पहुपालकी बड़ी पुत्री

मैनासुन्दरी—राजा पहुपालकी छोटीपुत्री (श्रीपालकी पटराण

कंचनमाला—राजा कनककेतू की पटराणी

रैनमंजूषा—राजा कनककेतू की पुत्री (श्रीपालकी राणी

वनमाला—राजा भूमंडलकी पटराणी

गुणमाला—राजा भूमंडलकी पुत्री (श्रीपालकी राणी)

—:❀:—

मैना सुन्दरी नाटक

पहिला ऐक्ट

राजा पहुपाल और मैनासुन्दरी की
तक़दीर व तदबीर पर तकरार ॥
मैना सुन्दरी का श्रीपाल कुष्टी के
साथ ब्याह होना और बनको
चला जाना ॥

श्रीजिनेन्द्रायनमः

सीन १

दरबार का परदा

१

नोट—चौथे काल (सतयुग) में भारत वर्ष के एक देश में चम्पानगर एक बहुत बडा शहर था ॥ उस नगर में महाराजा अरीदमन कोटी भट (करोड़ आदमियों का बलवाला) राज करता था ॥ यह राजा जैन धर्मावलम्बि था और उसकी पटराणी का नाम महाराणी कुन्दप्रभा था उसके कुवर श्रीपाल कोटीभट एक पुत्र था ॥ और महाराजा अरीदमन के छोटे भाई का नाम वीरदमन (कुवर श्रीपाल का चचा) कोटीभट था।

२

महाराजा अरीदमन व पटराणी कुन्दप्रभा का दरबार में बैठे हुये नजर आना और परियों का श्रीजिनेन्द्र भगवान का मंगलाचरण गाना ॥

चाल—(नाटक) मुबारकबादी गावो शादी शाहेजादी की ॥

गावो प्यारी महिमा न्यारी जग हितकारी की ॥
वह वीतरागी गुणधारी ॥ शिवमग नेतारी ॥
भवदुखटारी-सब सुखकारी ॥ की गावो० ॥
कुमति विनाशी-सुमति प्रकाशी-घटघट अंतरयामी है ॥
न्यामत वह आनन्द विहारी ॥ निकलम्-विमलम्-अलखम्
अनुपम्-कलमल हारी की ॥ गावो० ॥

३

परियोंका कअर श्रीपाल कोटीभट के दरबार में आने की मुबारकबादी गाना ॥

चाल—(नाटक) गावोरी सब मिलके बधय्या ॥

छाएरी धन शुभके बदरवा । आए हैं कोटी भट राजा ।
चुनचुनके फूल बरसावोरी–जश गावोरी-गुण गावोरी–
धन शुभके बदरवा ॥ छाएरी० ॥
१ परी–सागरसा धीर देखो–बीरों मे बीर देखो ॥
हां बेनज़ीर देखो–सबका हितकार है ॥
२ परी–प्यारी युवराज देखो–सरपै है ताज देखो ॥
सारी समाज देखो–जय जय जयकार है ॥
३ परी–नैना पसार देखो–आनन्द अपार देखो ॥
मोतियनका हार देखो–देता बहार है ॥
४ परी–कैसी है आन देखो–तरकशमें बान देखो ॥
करमें कमान देखो–भुजबल अपार है ॥

४

श्रीपालका दरबारमें आना और राजाका युवराज पद (वलीअहद) देना ॥

चाल—(समाच) सेवें सारे सुर नर मुनि तेरा द्वार ॥

आवो कोटी भट सुत श्रीपाल राज ॥ टेक ॥
तू कुल भूषण रहित विदूषण । धर्म निपुण रघुकुलकी लाज ॥१॥

अरिदलखंडन अति बलमंडन। दूं तोहेपदयुवराज आज ॥ २॥
तु जग प्यारा प्राणाधारा। धरूं सर पर मोतियनका ताज ॥ ३॥
(सर पर ताज रखना)

५

परियोंका मुबारक बाद गाना ॥
चाल—(नाटक) जयऋषभेश्वरकृपाकरो॥ भवसागरसे पार करो ॥

कोटीभट युवराज बना-हां सबका सरताज बना ॥ टेक ॥
हितकारी युवराज तुही-बलधारी महाराज तुही ॥
सबको तु सुख दायक, है सरताज बना ॥ कोटी० ॥ १ ॥
हो तेरा इक़बाल बड़ा-जश फैले जग माहीं सदा ॥
तू है सब गुण लायक, कुलकी लाज बना ॥ कोटी० ॥ २ ॥
हम सब मिल अर्दास करें, तन मन धन सब वार करें ॥
परमानन्द शुभ दायक, है दिन आज बना ॥ कोटी० ॥ ३ ॥

सीन २

राज महलका परदा ॥

६

महाराज अरिदमनका नरजाना और रानी कुन्दप्रभाका राजा के बियोग में रंज करते हुये नजर आना और श्रीपालका मांताको धीर बंधाना ॥

चाल—(गजल सोहनी) में यही हूं प्यारी शकुन्तला तुम्हें यादहो कि न यादहो

प्यारी मां भजो जिनराज को, जरा दिलको सब्रोक़रार दो।

जो कुछ होनाथा सोतो होचुका, अब रंजोग़मको निवारदो॥१॥
सर मौत सब के सवार है—यहां रहना दिन दो चार है ॥
नहीं जग में कोई भी सार है, ज़रा दिलमें अपने विचारलो॥२॥
मेरे तात-तुम बेज़ार हो, कैसे जीको मेरे क़रार हो ॥
अब मात तुम्हीं मुख़तार हो, तुम्हीं तात तुम्हीं सरकार हो ॥३॥
तेरा क्षत्री कुल अवतार है, तेरा कोटी भट सा कुमार है ॥
फिर क्यों यह हालते ज़ार है, ज़रा दिलको अपने करारदो ॥४॥
मैं निभाऊंगा अपना परन, नहीं टारू तेरे कभी वचन ॥
करूं सेवा आपकी रातदिन, जैसा हुक्म करके विचार दो ॥५॥

७

माता का जवाब ॥

चाल—(ग़ज़ल) पहलू में यार है मुझे उसकी खबर नहीं ॥

बेटा पती का रंज निवारा नहीं जाता ॥
मैं क्या करूं यह दर्द सहारा नहीं जाता ॥ १ ॥
तू आप जाके तख्त को अपने सम्हार ले ॥
मेरेसे कोई काम संवारा नहीं जाता ॥ २ ॥
नीती से राज कीजियो राजा का धर्म है ॥
बस और मुझ से ज्यादे विचारा नहीं जाता ॥ ३ ॥

८

श्रीपाल का जवाब ॥

चाल—(गजल) कहां लेजाऊं दिल दोनों जहां में इसकी मुश्किल है ॥

तुझे यूं छोड़ कर दुख में राज करने को जाऊं मैं ॥

मेरे से हो नहीं सकता हुक्म कैसे बजाऊं मैं ॥ १ ॥
तुम्हें क्या रंज अय माता जो मैं हाज़िर हूं सेवा में ॥
धरम जो पुत्र का होगा निभा करके दिखाऊं मैं ॥ २ ॥
बनेगा जैसा कुछ मुझ से करूंगा आपकी सेवा ॥
रहूंगा तेरी आज्ञा में चरन में सर झुकाऊं मैं ॥ ३ ॥
छोड़ कर रंज अय माता करो आज्ञा जो मर्ज़ी हो ॥
हुकम जो आपका होगा सर आंखों से बजाऊं मैं ॥ ४ ॥

९

माता का शोक तजना और श्रीपाल को राज करने की आज्ञा देना और श्रीपाल के सिर पर ताज रखना ॥

चाल—(गजल) कहां लेजाऊं दिल दोनों जहां में इसकी मुशकिल है ॥

राज के काम में मनको लगाना ही मुनासिब है ॥
राज का भार सर अपने उठाना ही मुनासिब है ॥ १ ॥
प्रजा की पालना करना यही है धर्म राजा का ॥
तुम्हें इस धर्म को बेटा निभाना ही मुनासिब है ॥ २ ॥
न कर कुछ सोच तू मेरा सबर अब कर लिया मैंने ॥
तुझे मेरी तरफ से ग़म हटाना ही मुनासिब है ॥ ३ ॥
चिरनजीवो मेरे बेटा धरूं सिरपे ताज तेरे ॥
पिता का ताज सर अपने सजाना ही मुनासिब है ॥ ४ ॥

१०

श्रीपाल का सिंहासन पर बैठना परियों का आना और मुबारकबाद गाना

चाल—(नाटक) तेरी छमछम है न्यारी ॥

प्यारे बादे बहारी चली चम्पा मंझारी ।

हुई आनंद सारी नगरिया आन ॥
तेरे सरपे विराजे ताज हीरों का साजे ।
सारे राजों में राजा तुही बलवान ॥
दूनी दूनी हो शान—होवें दुशमन हैरान ।
तावे हों सारे ज़मीन आसमान ॥
हो मुबारक यह ताज—तुझे चम्पा का राज-बोलो सारी समाज
होवे जय जय जय, जय जय जय, जय जय जय, ॥प्यारी०॥

सीन ३

दरबार का परदा

११

कुछ वर्ष राज करने के बाद राजा श्रीपाल और उसके सातसौ वीरों को कुष्ट होना ॥ शहर में दुर्गंध फैलना ॥ प्रजा का दुखित होकर वीरदमन (श्रीपाल का चचा) को साथ लेकर राजा श्रीपाल के दरबार में आना और अर्ज करना ।

चाल—अपनी हमें भक्ती का कुछ दीजो दान ॥

परजा की अर्जी को सुनिये सरकार ॥
तू दयावान हितकारी । है धर्मराज सुखकारी ॥
सुनो तुम सबकी पुकार ॥ १ ॥
तेरे राज महा सुख पायो । दुख भयका नाम नसायो ॥
सभी जाने ससार ॥ २ ॥

अब कष्ट भयो इक भारी। नहीं मुखसे जाए उचारी ॥
तेरे आए दरबार ॥ ३ ॥
यह कर्म महा अन्याई। तुम भयो कुष्ट दुख दाई ॥
हमें है सोच अपार ॥ ४ ॥
फैली दुर्गंध अती भारी। दुर्गंधित नगरी सारी ॥
भए व्याकुल नर नार ॥ ५ ॥
इस नगर रहा नहीं जावे। सब प्रजा महा दुख पावे ॥
शोक सागर मंझधार ॥ ६ ॥
कुछ करुणा चित में कीजे। अब आयस हमको दीजे ॥
चलें तज कर घर बार ॥ ७ ॥

१२

बीरदंमन का राजा श्रीपाल से कहना ॥

चाल—यह कैसे बाल बिखरे हैं यह क्यों सूरत बनी गमकी ॥

प्रजा की धीर अय राजा बंधानाही मुनासिब है।
बसे जिस तौर से परजा बसाना ही मुनासिब है ॥ १ ॥
रय्यत बिन नहीं शोभा कहेगा कौन फिर राजा।
मेल राजा में परजा में बनानाही मुनासिब है ॥ २ ॥
प्रजा रहती है राजा के अमन आमान साए में।
तुम्हें परजा का दुख बेटा मिटानाही मुनासिब है ॥ ३ ॥

१३

प्रजा की अर्जी सुनकर राजा श्रीपालका सिंघासन से उठ खड़ा होना। प्रजा की धीर बंधाना और अपने चचा वीरदमन को राज सौंपकर आप वन में जाने को तय्यार होना ॥

चाल—(नाटक) छूटो छाने का कैसा बहाना हुआ ॥

महाराजा की आज्ञा को सिरपे धरूं महाराजा की ॥
अपनी परजाकी सब पीर छिनमें हरूं-महाराजा की ॥ टेक ॥
लोसंभालो यह राज,रखियोपरजाकी लाज, रक्खोसरपेयहताज
मैं नगर तजके बनको पयाना करूं ॥ १ ॥
रखियो परजाकी कान, समझो पुत्र समान, प्रजा राजाके प्रान।
इनकी खातिर मैं मंजूर जाना करूं ॥ २ ॥
सुन, गया श्रीपाल, होगी माता बेहाल, उसका रखना खयाल।
सारा घर बार तेरे हवाले करूं ॥ ३ ॥
जो बचें मेरे प्रान, होके इन्द्र समान, फिर संभालूंगा आन।
वरना बनही मे जांको रवाना करूं ॥ ४ ॥
सुनलो परजाके बीर, टुक धरो दिलमें धीर, ऐसे होना अधीर।
मैं अभी जाके बनमें ठिकाना करूं ॥ ५ ॥

१४

राजा श्रीपालको जाते हुय देखकर प्रजाका राजा को रोकना और अर्ज करना ॥

चाल—(गजल चलत) अब हिज्रमें रहना हमें मंजूर नहीं है ॥

महाराज का जाना हमें मंजूर नहीं है ॥

मंजूर नहीं है हमें मंजूर नहीं है ॥ महाराज० ॥ टेक ॥
आज्ञा हमें दीजे कि हम परदेशको जावें ।
बनोबास जाना आपका मंजूर नहीं है ॥ १ ॥
विपता पड़ेगी हमपे जो सहलेंगे सारी ।
दुखपाना महाराज का मंजूर नहीं है ॥ २ ॥

१५

राजा भोपाल का फिर प्रजा को समझाना और आप बनोबास को सातसौ क्षत्री वीरों को लेकर रवाना होना ॥

चाल—यह कैसे बाल बिखरे हैं यह क्यों सूरत बनी ग़म की ॥

दुखी परजामें सुख भोगूं यह हरगिज हो नहीं सकता ।
मुझे जानेदो मत रोको कि ऐसा हो नहीं सकता ॥ १ ॥
प्रजापे जान देदेना यही है धर्म राजाका ॥
तजूं मैं धर्मकी मर्य्याद ऐसा हो नहीं सकता ॥ २ ॥
हुकम जो दे दिया मैंने सुनो अबतो वही होगा ॥
वचन क्षत्रीका उलटा हो सो हरगिज हो नहीं सकता ॥३॥
जो अच्छा होगया तो फिर मैं आकर राज भोगूंगा ॥
मगर अबतो मेरा रहना यहां पे हो नहीं सकता ॥ ४ ॥
मैं जाता हूं सुखी रहना नहीं ग़म मेरे जानेको ॥
करममें जो लिखा होगा कमोबेश हो नहीं सकता ॥ ५ ॥

सीन ४

चम्पापुर नगर का परदा ।

१६

चम्पापुर की प्रजा का राजा श्रीपाल के वियोग में रोते हुवे नजर आना
चाल—तूने फलक यह क्या किया हाय गजब सितम गजब ॥

तूने करम यह क्या किया हाय ग़जब सितम ग़जब ॥
वनोवास में राजा गया हाय ग़जब सितम ग़जब ॥ १ ॥
माताको रोती छोड़के राजसे मूंहको मोड़के ॥
हमरे लिये यह दुख सहा हाय ग़जब सितम ग़जब ॥ २ ॥
राजा हमारा प्रानथा सारी प्रजाका मानथा ॥
सूना नगर यह होगया हाय ग़ज़ब सितम ग़ज़ब ॥ ३ ॥

सीन ५

राज महल का परदा ।

१७

नोट—

(१) मालवा देश में उज्जैन नगरी एक बहुत बड़ा शहर था जिसमें राजा पहुपाल राज करता था ॥ इस राजा के निपुण सुन्दरी पट रानी थी और

सुरसुन्दरी बड़ी और मैनासुन्दरी छोटी दो पुत्री थीं ॥ मैनासुन्दरी अति सुन्दरी और सुशीला थी और राजा व रानी व सब दरबारी उसको अधिक प्यार करते थे ॥ मैनासुन्दरी का जैन मतकी श्रद्धा थी ॥ जब यह दोनो पुत्री आठ वर्ष की होगईं तो राजा ने इनको विद्या पढ़ने के लिये भेज दिया ॥

(२) सुरसुन्दरी एक पांडे जीके पास पढने लगी जब वह सब विद्या पढ चुकी तो पांडे जी सुरसुन्दरी को लेकर राजा के दरबार में आते हुवे ॥

(३) मैनासुन्दरी ने प्रथम एक श्रीमती अरजकाजी के पास अनेक विद्या पढी और फिर एक श्री मुनी महाराज के पास धार्मिक विद्या पढने लगी। जब यह समस्त विद्या पढ चुकी तो श्रीमुनी महाराज से आज्ञा लेकर वापिस अपने घर माता के पास आती हुई ॥

१८

मैनासुन्दरी का अपनी माता के पास आना और बात चीत करना ॥

मैना०-जयजिनेन्द्र,माताजी,आपके चरणार्विन्दको नमस्कार

माता—आवो बेटी मैनासुन्दरी राजदुलारी मेरे प्राणों से प्यारी (छाती से लगाना) ॥

मैना—माता जी मैने श्रीमती अरजकाजी और श्रीमुनी महाराज की कृपामे श्री जैनधर्म के समस्त शास्त्रों को पढ़ लिया है ॥ आज अपने गुरूकी आज्ञा लेकर आपके चर्णों में आई हूं ॥

माता—धन्न हो बेटी जो तुमने ऐसी छोटी अवस्था में श्री जैन धर्म के शास्त्रों को पढ़ लिया ॥ तुम चिरकाल जीवो और संसारके सुख भोगो ॥

मैना०-हेमाता पिताजी कहां हैं उनके दर्शन करने की अभिलाषा है ॥

माता०-बेटी महाराजा दरबारमें हैं चलो मैं तुमको ले चलती हूं ॥

मैना०-माताजी यदि आपकी आज्ञा हो तो मैं प्रथम श्रीमंदर जी में जाकर भगवान की पूजा कर आऊं तो मेरी समस्त विद्या सुफल हो, फिर आपके साथ दरबार में चलूंगी ॥

माता०-बहुत अच्छा बेटी जाओ पूजाकी सर्व सामग्री लेजाओ ॥ (मैनासुन्दरी का चला जाना)

सीन ६

श्रीजैनमंदिर का परदा

१९

मैनासुन्दरी का भगवान की पूजा करना ॥

(चाल) पद्धडी छन्द ॥

जय जय जय ॥ निस्सर्यताम, निस्सर्यताम, निस्सर्यताम ॥
जय सत पंथ दर्शक निर्विकार ।

जन मन हरशक महिमा अपार ॥
जय अजर अमर जग तरन तार ॥
चित दृग बल सुख मंडित अपार ॥ १ ॥
जय परमशांत मूरत अनूप ।
तुम चरण नमत सब इन्द्र भूप ॥
जय जग भूपन चेतन सरूप ।
परमातम परम पावन अनूप ॥ २ ॥
जय सकल ज्ञेय ज्ञायक जिनंद ।
अरि दोष रहित आनंद कंद ॥
जय निज आनंदरस लीन धीर ।
दुख पाप हरण सुख करण बीर ॥ ३ ॥

सीन ७

दरबार का परदा

२०

राजा पहुपाल का मन्त्री सहित दरबार में बैठना ॥ पांडे जी का सुरसुन्दरी को लेकर दरबार में आना ॥

पांडे—महाराज की जयहो

राजा—आइये महाराज विराजिये आपके चर्णोंमें नमस्कार हो।
(पांडे का कुरसी पर बैठ जाना)

सुर०—पिता जी आपके चर्णारबिन्द को नमस्कार हो ।

राजा—बेटी सुरसुदरी मेरी प्यारी राजकंवारी चिरंजीव रहो।
(छाती से लगाकर कुरसी पर बिठाना)

पांडे—हे राजन मैंने आपकी पुत्री सुरसुंदरी को बड़े परि-
श्रमसे अनेक विद्या पढ़ाई हैं अब यह समस्त विद्या
पढ़ चुकी है आपके सामने हाज़िर है ।

राजा—हे महाराज आपने बड़ी कृपा की यह (एक थाली में
बहुत सी असरफियां लेकर (दान आपकी भेट है।

पांडे—(दान लेकर) महाराजा की जय हो और यह पुत्री
सुरसुंदरी मन वांछित राज के सुख भोगियो ।
(चला जाना)

राजा—हे राजदुलारी सुरसुंदरी कहो कौन कौन अपूर्व
बस्तू पुन्य से प्राप्त होती हैं ॥

सुर०—(दोहा)विद्या जोबन रूप धन, और पती का नेह॥
राजा पुन्य से मिलत हैं, मन बांछित सुख येह ॥

राजा—(दोहा) पुत्री जो बर मन बसो, सो मांगो इस आन।
साफ बता मोसे कहो, करो नहीं कुछ कान ॥

सुर०—(दोहा) कोशम्भीपुर राय का, पुत्र महा गम्भीर ।
सोही मेरे मन बसो, हरिवाहन बरवीर ॥

राजा—बेटी उसही वीर से करूं तुम्हारो व्याह ॥
सुख भोगो संसार में यही हमारी चाह ॥

२१

परियों का दरबार में आना और मैनासुन्दरी के आने की मुबारकबाद गाना ॥

चाल—(नाटक) बादे बहारी आ के पुकारी गुलकी सवारी आती है ॥

आज हमारी राजदुलारी मैना प्यारी आती है ॥
मानो प्यारी आनन्दकारी बादे बहारी आती है ॥ १ ॥
राजा की प्यारी राज कंवारी प्रान पियारी आती है ॥
छब है न्यारी जोबन वारी वह मतवारी आती है ॥ २ ॥
उठती जवानी में सुन जिन बानी पढ़कर आई जैन का शासन ॥
है सुखदानी धर्म निशानी सुनकर बानी खुश हो तन मन ॥३॥
मद भरे नैना कोयल बैना चन्दर बदना चन्दर आनन ॥
तारों में चन्दर मैना सुन्दर धर्म धुरंदर शील शरोमन ॥ ४ ॥
समकित धारा भर्म निवारा विद्या पाई फिर कर बन बन ॥
तन मन वारें धनको निसारे गुण उचारें उसका छिन छिन ॥५॥

२२

महारानी निपुणा सुन्दरी का मैनासुन्दरी सहित दरबार में आना ॥
राजा व सब दरबारियों का खड़ा होना (वार्तालाप) ॥

सुर०—(खड़े होकर) माता जी को प्रणाम ॥

माता–(छाती से लगाकर) प्रसन्न तो है बेटी सुर सुन्दरी

सुर०–माता जी आपकी कृपा है ॥

मैना०—जयजिनेन्द्र ॥ पिता जी आपके महा आनन्दकारी चर्णारविन्द को बारम्बार प्रणाम है ॥

राजा—आवो बेटी मैनासुन्दरी मेरी प्यारी राजदुलारी।
आज तुझको देख मेरे चितको हुवाहै आनन्द भारी
(मैना सुन्दरी को छाती से लगा कर प्यार करना और कुरसी पर बिठाना और रानी जी को सिंघासन पर बिठाना)

मैना०-हेपिताजी श्रीमती अरजिकाजी व श्रीमुनी महाराज जी की कृपासे मैं श्री जैन धर्मकी समस्त विद्या पढकर आज आपके चर्णों में आई हूं ॥ और श्री जिनेन्द्र भगवान का पूजन करके यह (कटोरी सामने करके) गंदोदक आपके लिये लाई हूं लीजिये मस्तक पर चढाइये ॥

राजा—(गंदोदक की कटोरी लेकर राजा और रानी ने गंदोदक मस्तक पर चढाया) बेटी मैनासुन्दरी इस गंदोदक की शास्त्रों में क्या माहिमा है वर्णन करो

मैना०—बहुत अच्छा महाराज सुनिये ॥

२३

मैनासुन्दरी का गंदोदक की महिमा वर्णन करना ॥
चाल–(नाटक) महाराज गावें अब हम ॥

महाराज लाई हूं मैं । जलन्हवन श्रीजिनवर का ॥ टेक ॥

इंद्रादिक याको तरसें । परसत आनन्द रस बरसे ॥
यह गंदोदक सुखकारी । यानी है दुख परहारी ॥
हो जनम सुफल सुर नर का ॥ १ ॥
इसको जो अंग लगावे । कुष्टी सुन्दरता पावे ॥
अंधा संसार निहारे । यह पाप करम को जारे ॥
दे पद हरीबल और हर का ॥ २ ॥
जब जनम हुवा तिर्थंकर । सागर जल लाए भर कर ॥
सुरपत गागर कर धारे । श्रीजिनवर के सर ढारे ॥
हर्षा मन शची इन्दर का ॥ ३ ॥

२४

राजा का धनवाद देना और मेनासुन्दरी से दूसरा सवाल करना ॥

राजा—(शैर) धन है जो तेरा धर्म में ऐसा विचार है ॥
सब राज पाट मेरा तेरे पे निसार है ॥ १ ॥
लौकीक विद्या कौन कौन सी पढ़ी तूने ॥
बतला सो सही मुझे का मेरा विचार है ॥ २ ॥

२५

मैनासुन्दरी का जवाब ॥
चाल—छप्पय छन्द ॥

ब्रह्मज्ञान चातुरी, बान विद्या हय बाहन ॥
परम धरम उपदेश, बाहुबल जल अवगाहन ॥ १ ॥

सिद्ध रसायन करण, ताल लय सत स्वर गावन।
वरसङ्गीत प्रमाण, नृत्य वाजित्र बजावन ॥ २ ॥
व्याकर्ण पाठ मुख न्यायनय, ज्योतिष चक्र विचार कर।
वैद्यक विधान नर चिन्हता, पढ़ी विद्यादशचारवर ॥ ३ ॥

२६

राजा का खुश होना और तीसरा सवाल करना ॥ [शेर]

खुशी से देताहूं बेटी बहुत धनवाद म तुझको।
धर्म अरु कर्म में क्या क्या पढ़ा वोभी बता मुझको ॥

२७

मैनासुन्दरी का जवाब (शेर)

चार अनुयोग की विद्या पढ़ी मैंने ध्यान करके।
रतन त्रय धर्म दश लक्षण समझ लिये हैं ज्ञान करके ॥ १ ॥
स्याद्वादांग की चरचा जो जिनमत की निराली है ॥
न्याय और तर्क षट दर्शन सभी देखे छान करके ॥ २ ॥
करम मीमांसा जिनमतकी है मशहूर दुनियां में।
पढ़ी है खासकर मैंने ठीक मनमें मान करके ॥ ३ ॥

२८

राजा का खुश होना और चौथा व पांचवां सवाल करना ॥ (शेर)

बतला तो बेटी दुनियां में मुशकिल है कौन चीज ॥
सारे जगतमें सबसे अमोलक है कौन चीज ॥

२९

मैनासुन्दरी का जवाब ॥

चाल—यह कैसे बाल हैं बिखरे यह क्यों सूरत बनी गमकी ॥

ज्ञान दुर्लभ है दुनियां में धरम सबसे अमोलक है ॥
यही भगवान ने भाषा धरम सबसे अमोलक है ॥ १ ॥
रखो तन अपना धनदेकर बचाओ लाज तनदेकर ।
धरमपर वारदो सबको धरम सबसे अमोलक है ॥ २ ॥
धरमके सामने सब हेच राज और पाट दुनियां का ॥
धरमही सारहै जगमें धरम सबसे अमोलक है ॥ ३ ॥
धरमके वास्ते सीता किया परवेश अगनी में ।
रामतज राज बन पहोंचे धरम सबसे अमोलक है ॥ ४ ॥
धरमके वास्ते गर जान भी जाए तो देदीजे ।
समझ लीजे यकीं कीजे धरम सबसे अमोलक है ॥ ५ ॥

३०

राजा का खुश होना और छठा सवाल करना [शेर]

है धन्यबाद बेटी तू है गुण भरी ॥
जो छोटी उमर में यह विद्या पढ़ी ॥ १ ॥
बहुत खुश हुआ मैं तुझे देखकर ॥
तू जा कर पसंद अब कोई ताजवर ॥ २ ॥

३१

पिता की बात सुनकर मैनासुन्दरी का लज्जा करना और उदास होकर जवाब देना ॥

चाल [ठुमरी] बिंदी लेरे लेरे लेरे मेरे माथे का सिंगार

स्वामी बोलो बोलो बोलो ज़रा वाणी को संभार ॥ टेक ॥

क्या प्रश्न आपने किया तजी क्यों लज्जा सुखकार ॥
सुन बात आपकी होता है हृदयमें दुख भार ॥ १ ॥
है लज्जाही परधान श्रीजिन शासन के मंझार ॥
बेटी से पिताको लज्जा रखनी चहिये हरबार ॥ २ ॥
जो फिरूं देखती आपवरूं कोई राज कुंवार ॥
मेरे लगे शील को दाग़ शील सतियों का है सिंगार ॥ ३ ॥

३२

राजा का जवाब [शैर]

बेटी तू करती किस लिये सोचो विचार है ।
क्या धर्म और शीलका इसमें बिगार है ॥ १ ॥
कहदे तू साफ जो तेरे मनमें विचार है ॥
जा कर पसंद कोई तुझे अखतियार है ॥ २ ॥

३३

मैनासुन्दरी का जवाब

चाल—(गजल) यह कैसे बाल बिखरे हैं यह क्यों सूरत बनी गमकी ॥

पिताजी आपका उत्तर मेरे से हो नहीं सकता ।
मैं अपने आप वर देखूं यह हरगिज़ हो नहीं सकता ॥१॥
पिताजी है सरासर ना मुनासिब आपकी बातें ।
सुनूं यह पापकी बातें सती से हो नहीं सकता ॥ २ ॥
जो कुलवंती सती होती हैं लोका लाज रखती हैं ॥
वह अपने आप वर ढूंढें सो ऐसा हो नहीं सकता ॥ ३ ॥
सुकछ और कछने दी नन्दा सुनन्दा आदि ईश्वर को ।

वही मारग हमारा है सो उलटा हो नहीं सकता ॥ ४ ॥
न वर मांगा ब्रह्मी सुन्दर अराजिका हो गई दोनो ॥
तजूं में रीति सतियों की सो ऐसा हो नहीं सकता ॥ ५ ॥

३४

राजा का जवाब (शैर)

सुरसुन्दरी ने जिस तरह मांगा है अपना वर ।
उसको पती दिया है कोशम्भी का ताजवर ॥ १ ॥
इसही तरह से तू भी किसीको पसन्द कर ।
मुल्कों में देश द्वीप समंदर में ढूंढकर ॥ २ ॥

३५

मैनासुन्दरी का जवाब

चाल-(गजल) यह कैसे बाल बिखरे हैं यह क्यों सूरत बनी गमकी ॥

पिताजी धर्म के प्रतिकूल मुझसे हो नहीं सकता ॥
जो सर चाहो तो लेलीजे मगर यह हो नहीं सकता ॥ १ ॥
जो सुरसुन्दरने वर मांगा कुगुर संगत का फल जानो ॥
मैं जिन शासन की वेता हूं मेरे से हो नहीं सकता ॥ २ ॥
मात और तात अच्छा देख वर कन्या को देते हैं ॥
फिर आगे भाग कन्याका कमोबेश हो नहीं सकता ॥ ३ ॥
जिसे चाहो उसे दीजे पिताजी आपकी मरजी ।
करममें जो लिखा होगा वह उलटा हो नहीं सकता ॥ ४ ॥
जगतमें जितने सुख दुख हैं वह सब करमों से मिलते हैं ।

जो मेटे कर्म की रेखा किसी से हो नहीं सकता ॥ ५ ॥
फिरूं बर ढूंडती मेरे शीलमें दाग़ लगता है ॥
लगाऊं दाग़ अपने शील को सो हो नहीं सकता ॥ ६ ॥

३६

राजा का जवाब (शेर)

न कर बेटी मेरे से इस तरह इन्कार की बातें ।
नहीं लगती मुझे अच्छी तेरी तकरार की बातें ॥ १ ॥
पसंद करले किसी राजा को जाकर मानले कहना ॥
धरी रहने दे तू अपने शील सिंगार की बातें ॥ २ ॥

३७

मैनासुन्दरी का जवाब ॥
चाल—अब कैसे भरू जमना गहरी ॥

मत बेटी पे रोष करो जी पिता ॥
सीस धरूं तुमरे चरणन में ॥ कर करुणा जी नेक पिता ॥टेक॥
आप का हुक्म बजालाने में कुछ आर नहीं ॥
लाज तजने को मगर राजा मैं तय्यार नहीं ॥
धर्म प्रतिकूल कोई बात नहीं मानूंगी ॥
सर मेरा चाहो तो लेलो ज़रा इन्कार नहीं ॥
मत नाहक दोष धरो जी पिता ॥ मत० ॥ १ ॥
हे पिता आप जिसे चाहें उसे दे दीजे ॥
आप बर ढूंढने जाने को मैं तय्यार नहीं ॥
लाज है धर्म सती का इसे छोड़ूं क्यों कर ॥
धर्म के बदले में दुनिया की खरीदार नहीं ॥

टुक नीति को सोच करो जी पिता ॥ मत० ॥ २ ॥

३८

राजा का सातवाँ सवाल (दोहा)

अच्छा बेटी जो तुझे, यह नहीं बात सुहाय ॥
तो मैं तेरे वास्ते, वर ढूंढूं खुद जाय ॥ १ ॥
पर तू जो यह कहत है, सुख दुख करमन हाथ ॥
जो सुख मैं तोहे देत हूं, वह है किसके हाथ ॥ २ ॥

३९

मैनासुन्दरी का जवाब ॥

चाल—(गज़ल) एक तीर फेंकता जा तिरछी कमान वाले ।

फैला हुआ है राजा, करमों का जाल सारे ।
दरिया पहाड़ नारे क्या चांद सूर्य तारे ॥ १ ॥
त्रियंच नर सुरा सुर, ब्रह्मा ऋषी हरिहर ।
फिरते हैं सब चराचर, कर्मों के मारे मारे ॥ २ ॥
क्या आन कान वारे, क्या शाह शानवारे ।
करमों के आगे सबके, जाते हैं मान मारे ॥ ३ ॥
रावण ने हरनाकुश ने क्या क्या नहीं किया था ।
आखिर करम बली से, सबही गये हैं हारे ॥ ४ ॥
सुख और दुख का देना, करमों के हाथ में है ।
चलती नहीं किसी की, करलो यतन अपारे ॥ ५ ॥

४०

राजा का सवाल [शैर]

सुख तुझे मैंने दिया और तू कहे तकदीर ने ।

क्या यही तुझको पढ़ाया है गुरु मुनिवीर ने ॥ १ ॥
करदिया हैरां मुझे उलटी तेरी तक़रीरने ॥
कुछ नहीं तक़दीर बतलाया यही तदबीरने ॥ २ ॥

४३

मैनासुन्दरी का जवाब ॥
चाल—(सारंग) कोई चातुर ऐसी सखी न मिली ॥

राजा निन्दा गुरू की न कीजे ज़रा ।
ऐसी पाप की बातें मुझे ना सुना ।
करें चित्र विचित्र यह क्या क्या करम ।
तुझे करमों का राजा नहीं है पता ॥ १ ॥
मैंने पहले जनम शुभ कर्म किये ।
भोगे भोग सो घर तेरे जन्म लिया ॥
राजा मेरे करम में यही था लिखा ।
इसमें तूने किया क्या बात तो ज़रा ॥ २ ॥
पहले भवमें जो करती मैं पाप करम ।
किसी नीच के घर मेरा होता जनम ।
दुख पाती जो सहती मैं सीत गरम ।
क्या तू करता मदद मेरी दे तो बता ॥ ३ ॥
क्या तू सुख मोहे देनेका मान करे ।
राजा मानका करना नहीं है भला ॥
देखो मान किया गढ़लंक पती ।
भई कैसी गती क्या नहीं है सुना ॥ ४ ॥
देखो चक्रसभूमने मान किया ।

सो वह सागर बीचमें जाके मरा ।
मान करने का अच्छा समर है नहीं ।
मत मान करे मेरा मान कहा ॥ ५ ॥

४२

राजा का क्रोध करना और जवाब देना (शेर)

बस बस क़बूल बात यह करती अक़ल नहीं ॥
इनसां के आगे कोई करम की असल नहीं ॥ १ ॥
करमों की क्या मजाल जो सुख दुख दें किसी को ।
इनसांके काम में है करम का दखल नहीं ॥ २ ॥
देखूंगा मैं भी तेरे करमके ज़हूर को ।
जल्दीही कुछ दिनों में अगर आज कल नहीं ॥ ६ ॥

४३

जवाब मन्त्री का ॥

चाल—इलाजे दर्द दिल तुमसे मसीहा हो नहीं सकता ॥

अगरचे बीच में मेरा बोलना ना मुनासिब है ॥
मगर इस वक्त चुपरहना भी मेरा ना मुनासिब है ॥ १ ॥
समझके बोलना कन्या से है मर्य्याद शासन की ।
तुम्हें बेटी से यूं तकरार करना ना मुनासिब है ॥ २ ॥
करम बलवान हैं दुनिया में अय राजा समझलीजे ।
मानमें आके झगड़े का बढ़ाना ना मुनासिब है ॥ ३ ॥
किया था मान रावनने हुई थी क्या गती देखो ।
धरमको छोड़कर जाना कुमारग ना मुनासिब है ॥ ४ ॥

कोप को दूर कर राजा सुमत धारो विचारो तो।
कुमत को अपने हृदय में बसाना ना मुनासिब है ॥ ५ ॥

४४

जवाब राजा का (शेर)

मंत्री कायल नहीं हूं मैं किसी तक़दीर का ॥
दुनिया जो कुछ है नतीजा है सिरफ़ तदवीर का ॥ १ ॥
मैनासुन्दरी को हुवा निश्चय जो है तकदीर का ।
यह सरासर है कसूर उसताद बद तदवीर का ॥ २ ॥
देखलूंगा मैं भी बल इस मैना की तकदीर का ।
मानती जो है नहीं दावा मेरी तदवीर का ॥ ३ ॥

४५

जवाब मैनासुन्दरी का

चाल (मारग)—कोई चातुर ऐसी सखी ना मिली ॥

मेरे करमों को राजा तू देखेगा क्या ।
तुझे कर्म बिना राज कैसे मिला ॥
मुझे निश्चय है राजा कहूंगी यही ।
मुझे जो कुछ मिला है करम से मिला ॥ १ ॥
हे पिता जी करम की विचित्र गती ।
चाहे छिनमें यह राजा को रंक करे ॥
इन करमों की रेख में मेख धरे ।
मुझे कोई भी ऐसा बशर ना मिला ॥ २ ॥
राजा राम का था दरबार लगा ।
उसे राजतिलक जब होने लगा ॥

देखो राजा यह कर्म हैं कैसे बली।
बनोवास मिला है छतर ना मिला ॥ ३ ॥
श्री कृष्ण ने लाखों ही यत्न किये।
किसी तौर से द्वारका शहर बचे ॥
जब आगलगी किसुकी ना चली।
जल ढूंडा तो जल भी किधर ना मिला ॥ ४ ॥
सती सीता अगन परवेश हुवा।
तब देवों ने अगनी को नीर किया ॥
जब रावण सीता को लेके चला।
क्यों ना कोई भी सुर या असुर ना मिला ॥ ५ ॥
श्री आदि जिनेश्वर ज्ञानी बड़े।
जिनकी सेवा में इन्द्र धनेन्द्र खड़े ॥
जब आकरके करमों के बन्द पड़े।
बारा मास लों जल किसी घर ना मिला ॥ ६ ॥
राजा कर्म लिखा टाला टलता नहीं।
चाहे कोई अनेक उपाय करे।
यही निश्चय करो मत मान करो।
कभी मान का अच्छा समर ना मिला ॥ ७ ॥

४६

जवाब राजा का (शेर)

हे सुता करती है क्या मुझको नसीहत उलटी।
मुझको लगती है तेरी सारी नसीहत उलटी ॥ १ ॥

मानले कहना मेरा छोड़ करमका निश्चय ।
वरना करदूं तेरी तकदीरको उलटी पुलटी ॥ २ ॥

४७

जवाब रानी का (शैर)

तर्ज (कल्याण)—इलाजे दर्द दिल तुमसे मसीहा हो नहीं सकता ॥

असर जिनमतका दिलमें सबके पैदा होही जाता है ।
इसे जो देख लेता है वह शैदा होही जाता है ॥ १ ॥
ख़ता क्या इसमें अय राजा कहो तो मेरी बेटीकी ।
जैनवाणी से तो करमोंका निश्चय होही जाता है ॥ २ ॥
अभी क्या उम्र है इसकी दूध के भी नहीं टूटे ।
बालपन में सुनो राजा कि ऐसा होही जाता है ॥ ३ ॥
जमाना झूट बातों का दिलोंपर सख्त मुशकिल है ।
सचाई का असर जल्दी से पैदा होही जाता है ॥ ४ ॥
खफ़ा मत हूजिये राजा माफ़ कीजे खता इसकी ।
चलो जाने दो नादानी में ऐसा होही जाता है ॥५॥

४८

जवाब राजा का (शैर)

यह बातें करती हो मेरे से क्या सुनो तो सही ।
मुझे उड़ाती हो बातों में क्या सुनो तो सही ॥ १ ॥
मेरा कहा जो न मानेगी मैनासुन्दर अब ।
तो कैसे दुख उठाएगी देखियो तो सही ॥ २ ॥

४९

मैनासुन्दरी का जवाब देना और दरबार से चला जाना ॥

चाल—हाय अच्छे पिया वही देश बुलाओ हिन्द में जी घबरावत है ॥

जोडूं हाथ पिता जी मैं तुम आगे—चरणां में सीस नमावत हूं॥
जैसा जी चाहे करो आपकी मरज़ी साहेब ॥
सर जुदा तनसे करो आपकी मरज़ी साहेब ॥
खींच शूलीपे धरो आपकी मरज़ी साहेब ॥
या बनोवास करो आपकी मरज़ी साहेब ॥
छोडूं नाहीं पिताजी निश्चय करमका दुक्खोंसे नहीं घबरावतहूं १
करममें दुखही लिखा है तो क्या करे कोई ॥
बने जो बापही दुश्मन तो क्या करे कोई ॥
जहां पे न्याय न होवे तो क्या करे कोई ॥
धर्म का नाम न होवे तो क्या करे कोई ॥
कीजो मुआफ़ पिताजी दोष हमारा कर प्रणाम मैं जावतहूं २

(चलाजाना)

सीन ८

जंगल का परदा

५०

राजा श्रीपालका सातसौ कुष्टी वीरों के साथ उज्जैन नगरके जंगल में पहोंचना और अपने कर्मोंकी निन्दा करना।

चाल—(नाटक) दिले नाशां को हम समझार जायेंगे ॥

देखें क्या क्या करम दिखलाए जाएंगे ।
जैसी करेंगे वैसी भरेंगे-अपने मनको यूंहीं समझाएजाएंगे टेक
बापको सरसे मेरे तूने हटाया ज़ालिम ॥
अंगमें कुष्ट मेरे रोग लगाया ज़ालिम ॥
राज और पाट भी सब तूने छुड़ाया ज़ालिम ॥
मेरी माताको अलग मुझसे कराया ज़ालिम ॥
और जितना तेरा जी चाहे सताले ज़ालिम ॥
हमभी समतासे तेरे यह सदमे उठाए जाएंगे ॥देखें० ॥

५१

उज्जैनके राजा पहुपालका मंत्री सहित सैर करते हुए श्रीपाल के पास
पहोंचना और श्रीपालसे बात करना (वार्तालाप)

राजा—अय प्रदेशी तू कहां से आया है, कैसा यह लशकर
अपने साथ लाया है, क्यों तेरे तनको यह कुष्ट रोग
लगाहुवा है किस कारण इस देशमें आना हुवा हैं ॥

श्रीपाल-(दोहा) राजा करमोंकी गती टाल सके नहीं कोय
कर्मोंके बशमें सभी होनीहो सो होय ॥ १ ॥
भ्रमत फिरें बनोबासमें दुखिया मैले भेश
बिपताके दिन काटने आए तुमरे देश ॥ २ ॥

राजा—(शेर)फिकर इस क़दर अपने दिलमें न कर ॥
तू इस देशको जानियो अपना घर ॥ १ ॥
मैं दूंगा तुझे बहुतसा मालोज़र ॥
दूं मैनासती अपनी लख्ते जिगर ॥ २ ॥

यहां ठैर कुछ देर आराम कर ॥
बुलाता हूं जल्दी तुझे जाके घर ॥ २ ॥

५२

मंत्री का राजा को कुष्टी के साथ मैनासुन्दरी का व्याह करने से रोकना और समझाना ॥

चाल—यह कैसे बाल बिखरे हैं यह क्यों सूरत बनी गमकी ॥

ग़जब करते हो राजा लाल सिंधुमें बगाते हो ।
कलंकित करके कुल अपना लाज सारी गंवाते हो ॥ १ ॥
जुलम बेटीपे तो इतना नहीं करना रवा तुमको ।
धरम और न्याय को क्यों आज पानीमें बहाते हो ॥ २ ॥
कहां वह सुन्दरी मैना कि जैसे चान्द पूनम का ।
कहां यह नर महा कुष्टी नहीं दिलमें लजाते हो ॥ ३ ॥
जरा सोचो बिचारो तो कहेगी क्या तुम्हें दुनिया ।
तिलक अपयशका नाहक अपने मस्तक पर चढ़ाते हो ॥४॥

५३

राजा का मन्त्री को नाराज होकर जवाब देना और उलटा नगरको रवाना होना (शैर)

अय मंत्री जुबान तुम अपनी को बंदकरो ।
इस मामले में मेरे से ज्यादा न जिद करो ॥ १ ॥
मैनाका व्याह मैं इसी कुष्टी से करूंगा ।
सुरपत भी अगर आये तो हरगिज न टरूंगा ॥ २ ॥

जल्दी से चलके आज ही दरबार कीजिये।
सामान ब्याह कीजिये देरी न कीजिये ॥ ३ ॥

सीन ९

दरबार का परदा

५४

राजा पहुपाल और मंत्री का जंगल से लौटकर दरबार में पहोंचना ॥
राजा का गुस्से में सिंघासन पर बैठना। परियों का गाना और आपस में बात चीत करना ॥
चाल—यह कैसे बाल बिखरे हैं यह क्या सूरत बनी गम की ॥

१ परी—भवें तनती हैं बल माथे पे है और तनके बैठे हैं।
किसी से आज बिगड़ी है कि वह यों तनके बैठे हैं।
२ परी—मेरी किसमत है गर सीधी वह सीधे होही जाएंगे।
चाहे वह मनके बैठे है चाहे वह तनके बैठे हैं।
३ परी—यूं बनके बैठना महफिल में उनका रंग लाएगा।
क़यामत बनके उट्ठेंगे भबूका बनके बैठे हैं।
४ परी—किसी के कहने करने से बुरा कुछ हो नहीं सकता।
हमें परवा नही हमसे अगर वह तनके बैठे हैं।

५५

राजा का दरबान को हुक्म देना (वार्तालाप)

राजा—अरे दरबान जाओ रानी जी से कहो कि राजा।

याद फ़रमाते हैं और सुरसुन्दरी व मैनासुन्दरी को भी दरबार में बुलाते हैं॥

दरबान—बहुत अच्छा महाराज अभी जाता हूं ॥

(चला जाना)

५६

दरबान का वापिस आना ॥ रानी जी का सुरसुन्दरी और मैनासुन्दरी के साथ दरबार में तशरीफ लाना ॥ राजा का सिंघासन से उठकर रानी जी को बाईं तरह सिंघासन पर बैठाना और सुरसुन्दरी का दाईं तरफ और मैनासुन्दरी का बाईं तरफ कुरसियों पर बैठाना ॥ राजा का मैनासुन्दरी से पूछना ॥

(वार्तालाप)

बेटी मैनासुन्दरी देख तू अब भी मेरी बात का जवाब करके बिचार दे ॥ अपनी करमों की बात को दिल से निवार दे ॥ नहीं तो देख फिर तू पछतावेगी और अपने कर्मों के झूटे भरोसे पर दुख उठावेगी ।

५७

मैनासुन्दरी का जवाब ॥

चाल—पहलू में यार है मुझे उसकी खबर नहीं ॥

राजा जी दिलको सख्त बनाना नहीं अच्छा ॥
बेटी को ऐसी बात सुनाना नहीं अच्छा ॥ १ ॥
है धर्म मेरा प्रान इसे छोड़ नहीं सकती ॥
बेकस को इस तरह से सताना नहीं अच्छा

निश्चय क़रमका लाख कहो मैं न छोडूंगी ॥
इस बातमें झगड़ेका बढ़ाना नहीं अच्छा ॥ ३ ॥
कर्मों में जो लिखा है वही पेश आएगा ॥
जिन बाणी में संशय कभी लाना नहीं अच्छा ॥ ४ ॥
दर्शन मलीन होके जीये भी तो क्या जीये
औलाद को गुमराह बनाना नही अच्छा ॥ ५ ॥

५८

राजा का कोप करना और जवाब देना ॥ (शैर)

मैना जो कहना मानती तू है नहीं मेरा ॥
जा करता हूं कुष्टी से अभी ब्याह मैं तेरा ॥ १ ॥
वह कुष्टी बेनिशान है जगल में पड़ा है ॥
है नाम श्रीपाल मुसीवत से भरा है ॥ २ ॥
सारी उमरको देख मुसीवत सहेगी तू ।
देखूगा अपने कर्म पै कबतक रहेगी तू ॥ ३ ॥

५९

मेनासुन्दरी का जवाब ॥

चाल—सखी सावन बहार आई कुलाव जिसका जी चाहे ॥

मैं खुशहूं हौसिला अपना दिखाए जिसका जी चाहे ।
मेरी किस्मतका लिक्खा आजमाए जिसका जी चाहे ॥ १ ॥
पिताजी ने कहा जो कुछ मुझे मंजूर है वह ही ॥
अगर कुछ और दिलमें हो सुनाए जिसका जी चाहे ॥ २ ॥
मुझे निश्चय है जिनवाणी पे क्या धमकी दिखाते हो ।

अचल है मेरा मन मेरु हिलाए जिसका जी चाहे ॥ ३ ॥
मुक़द्दर में जो लिक्खा है नहीं टालेसे टलता है ॥
किसी पहलूसे इसको आज़माए जिसका जी चाहे ॥ ४ ॥
करममें गर मेरे सुख है कोई दुखदे नहीं सकता ।
चाहे तदबीर सौ उलटी बनाए जिसका जी चाहे ॥ ५ ॥

६०

राजा और मैनासुन्दरी का सवाल जवाब [शैर]

राजा—बेटी मैं हूं हैरां तेरी तक़रीरके आगे ।
तकदीर क्या करे भला तदबीर के आगे ॥ १ ॥
मैना०—रावणका कोट उड़गया महावीरके आगे ।
तदबीर क्या चली कहो तक़दीर के आगे ॥ २ ॥
राजा—लाखों के सीस कटते हैं शमशीर के आगे ।
कायर ज़रूर मरते हैं रनबीर के आगे ॥ ३ ॥
मैना०—माया उड़ी सुग्रीवकी रघुवीर के आगे ।
शक्ती भी चली हार लखनवीरके आगे ॥ ४ ॥
राजा—हाथीका वश नहीं चले ज़ंजीरके आगे ।
मछली फंसे बंसी मे माहीगीर के आगे ॥ ५ ॥
मैना०—ज़ंजीर सारी कटगई मुनीवीर के आगे ।
गिरधरकी कुछ चली ना जरद् तीरके आगे ॥ ६ ॥
राजा—मुशकिल आसान होती है तदबीरके आगे ।
तकदीर पड़ी रहती है तदबीर के आगे ॥ ७ ॥

मैना०—सारी दलील रद करम तकरीरके आगे ।
तदवीर कुछ नहीं चले तकदीर के आगे ॥ ८ ॥

६१

राजा का जवाब ॥

चाल—पहलू में यार है मुझे उसकी खबर नहीं)

मैना तुम्हारी ज़िद मेरे मनको नहीं भाती ।
समझाऊं किसतरह से समझ में नहीं आती ॥ १ ॥
सारी उमर को फिर तू महा दुख उठाएगी ।
कर्मों की बात जो तू नहीं दिलसे भुलाती ॥ २ ॥
तू देख तेरा ब्याह उसी कुष्टीसे करूंगा ।
जिसके वदनसे कोसों तक दुर्गंध है आती ॥ ३ ॥
वचपनमें आके अवतो तू नादान भई है ॥
पछताएगी जो तू कही मनमें नहीं लाती ॥ ४ ॥
जंगलमें अकेली तू सदा ख्वार फिरेगी ।
क्यों अपने आप वैर मेरेसे तू बसाती ॥ ५ ॥
तकदीर धरी रहेगी तेरी देख लीजियो ।
इस वक्त तेरे एक समझ में नहीं आती ॥ ६ ॥

६२

मैनासुन्दरी का जवाब ॥

चाल—(सारंग) कोई चातुर ऐसी सखी ना मिली ॥

हे पिताजी हो धमकी दिखाते किसे ।

ऐसी बातें सुनाकर डराते किसे ॥
चाहे एक अनेक उपाय करो ।
होगा वहही जो विधनाने लेख लिखे ॥ १ ॥
रानी श्रीमति की सास रोस भई ।
वाकी मारन की तदबीर करी ॥
जब सतीने सरप अपने हाथ लिया ।
फूलमाल भई गलबीच पड़ी ॥ २ ॥
श्रीरामने सीतापे कोप किया ।
गिरे अगनी में जाके यह हुक्म दिया ॥
जब सीता अगन परवेश किया ।
ठंडा नीर भया गुलजार खिला ॥ ३ ॥
देखो शीलवती वह सुभद्रा सती ।
वाकि जेठ जिठानी ने ताने दिये ॥
कच्चे सूत और छलनी से नीर भरा ।
शुभ कर्म जगे झट पाटखुले ॥ ४ ॥
सभा बीच द्रोपद का चीर गहा ।
कोई राजकुंवर न सहाई हुआ ।
वाके कर्मही आके सहाई हुये ।
चीर बढ़ता गया सतशील रहा ॥ ५ ॥
सती अजनाको घरसे निकाल दिया ।
किसी भाई न बंधूने साथ दिया ।
शुभकर्मों से आकरके मामा मिला ।
दुख दूर हुवा सुखराज किया ॥ ६ ॥

मेरे कर्म हैं राजा जी संग मेरे।
वर कुष्टी मिले कामदेव बने ॥
दुख देखूं नहीं सुख भोगूंगी मैं।
कर्म होते उदय नहीं देर लगे ॥ ७ ॥

६३

राजा का जवाब देना और दरबान को पंडित जी के बुलाने के लिये हुक्म देना ॥ (वार्तालाप)

राजा—अरी मैनासुन्दरी तेरा बड़ा दुष्ट स्वभाव है। तू अब भी अपने कर्मों की हटको नहीं छोड़े है। अच्छा मैं अभी तेरे कर्मों को देखूंगा कि तेरी क्या सहायता करते हैं (दरबान की तरफ़ देख कर) अरे दरबान जावो पंडित जी को हमारा प्रणाम दो और जल्दी दरबार में बुला लाओ ॥

दरबान—(अपना माथा धुनकर दिलमें हाय आज राजा को कैसी कुमत छाई है) बहुत अच्छा महाराज मैं अभी जाता हूं ॥ (चलाजाना)

६४

दरबान का वापिस आना ॥ पंडित जीका हाजिर होना और राजा से बात चीत करना ॥ (वार्तालाप)

पं०—महाराज की जय हो।

राजा—आइये महाराज पधारिये चौकी पर विराजिये।

पं०—(चौकी पर बैठकर)आज महाराज ने कैसे याद फरमाया

राजा—महाराज आज बेटी मैनासुन्दरी का ब्याह करना है फ़ौरन महूरत निकाल दीजिये ॥

पं०—(चौंकक्र)आज ब्याह करना है ? महाराज ब्याह है कि गुडा गुडी का खेल है ! महूरततो आजका आप पहलेही निकाले बैठे हैं फिर मेरे बुलाने की कौन-जरूरत थी।

राजा—महाराज खफा न हूजिये कोई जल्दी का महूरत निकाल दीजिये काम जल्दी का है ॥

पं०—हाय क्या जमाना आया है महाराजों की बेटी का ब्याह और जल्दी का महूरत लोग महूरत निकलवाने में गड़बड़ तो आप मिचावें और जब ब्याह में कोई विघ्न हो जावे तो दोष पंडित जी के सर ॥ खैर हमें क्या जैसा कोई करेगा वैसा भरेगा ॥

६६

पडित जी का पोथी खोलना और हाल पूछना ॥ (वार्तालाप)

पं०—महाराज किस नाम का कुमार है उसका कौनसा दयार है—अच्छा या बीमार है ॥

राजा—नाम श्रीपार है—न राजा है न साहूकार है-कुष्ट से लाचार है ॥

पं०—अरे राजा क्यों अपने वंशको कलंक लगावे है तेरे उलटे दिन आए हैं जो तू अपनी राजदुलारी को कुष्टी के साथ ब्याहे है। देख अच्छा वर और अच्छा घर देखकर कन्या का देना माता पिता का धर्म कहा है ॥

कन्या को दुख देने से जन्म जन्ममें दुख भोगना पड़ेगी ऐसा शास्त्र में वर्णन किया है ॥

राजा—महाराज हमने जो विचार किया है वही होना है। इसमें आपको और कुछ नहीं कहना है ॥

पं०—(माथा धुनकर और कुछ अंगुलियों पर हिसाब लगा कर) महूरत तो आजका अती उत्कृष्ट है पर आपका यह कार्य महा निकृष्ट है ॥

राजा—महाराज आप इस कार्यमें तर्क न कीजिये। लीजिये आप अपनी दक्षना लीजिये। मैनासुन्दरी कहती है कि जो कर्मों मे लिखा है वही होगा सो मैं इसी कुष्टीसे इसका व्याह करके इसके कर्मों को देखूंगा ॥

६६

पंडितजीका जवाब देना और नाराज होकर दरबारसे चला आना

चाल—कत्ल मत करना मुझे तेगा तबर से दखना।

गर्भमें राजा तुझे इतना न आना चाहिये।
धर्मका भी तो तुम्हें कुछ खौफ खाना चाहिये ॥ १ ॥
मानले राजा हमारी फिर भी समझाते हैं हम।
अपनी बेटीको नहीं कुष्टीसे व्याहना चाहिये ॥ २ ॥
मैनासुन्दरा ने कहा जो कुछ बजा है ठीक है।
इसकी बातों पे तुम्हे श्रद्धान लाना चाहिये ॥ ३ ॥
कर्म से सुख दुख मिले सच बात है क्या झूठ है।

सत धरम को छोड़ कर उलटा न जाना चाहिये ॥ १ ॥
दक्षना लेंगे नहीं पापी तुम्हारे हाथ की ।
ऐसे पापी की सभा में भी न आना चाहिये ॥ ५ ॥

(चला जाना)

६७

मन्त्री का राजा से फिर अर्ज़ करना और समझाना ॥

चाल—(वियोगनी) कटी गुनाहो में उम्र सारी इलाही तोवा इलाही तोवा ।

अय राजा दिलमें खयाल कीजे जो काम कीजे बिचार कीजे।
सितम जुलम इस कदर न कीजे ज़रा तो दिलमें बिचार कीजे॥
(दोहा) राजा हमारी बात को, सुनलीजे धर कान ।
अबतक कुछ बिगड़ा नहीं, कहा हमारा मान ॥
विनश जाए वह मंत्री. जो मन शंका लाए ।
विनश जाए वह स्त्री, आज्ञा से टर जाए ॥
फरज समझ कर अरज करूं हूं धरम को हिरदय में धार लीजे।
सती को अपने गले लगावो दिलासा दे करके प्यार कीजे॥१॥

(दोहा) जो कोई राजा सुने नहीं मंत्री की बात ।
राजा निश्चय जानियो, राजपाट सब जात ॥
बात बिभीषण की नहीं, सुनी जो रावण राय ।
छिनमें लंका जलगई, आप मरा रण मांह ॥
विमुख धरम से हुवा जो कोई पड़ा विपत में निहार लीजे ॥
जो इतने पर भी न मानो राजा तो तुझको है अखतियार कीजे२

६८

राजा का कोप करके मन्त्री को जवाब देना (शेर)

बस बस जुबां दराज का तू पास छोड़दे ।
वरना वजीर जीने की अब आस छोड़ दे ॥

६९

मन्त्री का जवाब ॥

चा —(गजल) इलाजे दर्द दिल तुमसे मसीहा हो नहीं सकता ॥

समझ गए हमभी अय राजा तेरी तकदीर फिरती है ॥
किसी की कुछ नहीं चलती है जब तकदीर फिरती है ॥ १ ॥
यह जो करती है वेशक अपनी ही तकदीर करती है ॥
मुकद्दरमें बिगडना हो तो क्या तदवीर करती है ॥ २ ॥
मुकद्दरकी दुरंगी भी अजब तासीर है करती ॥
कभी करती है खुश वह और कभी दलगीर करती है ॥ ३ ॥
बहुतसा हमने समझाया मगर तू ही नहीं समझा ॥
तुम्हारा दोष क्या करती है जो तकदीर करती है ॥ ४ ॥
जो होना होगा सो होगा मगर राजा तेरी बातें ॥
हजारों रंजोगम इस दिलके दामनगीर करती है ॥ ५ ॥

७०

राजा का गुस्से में मन्त्री को हुक्म देना । मन्त्री का श्रीपाल को बुलाने को चला जाना और पर्दा गिरना ॥ (वार्तालाप)

राजा—(गुस्से में आकर) मंत्री बस बस बन्द जुबान करो,
मत मुझे ज्यादा हैरान करो फौरन ब्याह का मंडप
तय्यार करो, श्रीपाल को हाजिर दरबार करो ॥

मंत्री—बहुत अच्छा महाराज (चलाजाना)

सीन १०

ब्याह के मंडप का परदा

७१

मैनासुन्दरी के ब्याह के मंडप का परदा नजर आना ॥ राजा, रानी, सुरसुन्दरी व मैनासुन्दरी और सब दरबारियों का मंडप में बैठे हुवे नजर आना मन्त्री का श्रीपाल कुष्टी के साथ मंडप में हाजिर होना श्रीपाल को चौकी पर बिठाना। रानी और सब दरबारियों का कुष्टी को देखकर अफसोस करना और रानी का राजा से फिर अर्ज करना ॥

चाल—हाय अच्छे पिया वही देश बुलालो हिन्द में जी घबरावत है।

राजा जुल्म तुम्हारा देखूं मैं क्योंकर नैनोंमें जलभर आवत है ॥
देख औलाद को तो अपने ही मां बाप सिवा ॥
जगमें कोई भी नहीं और सहारा होता ॥
जुल्म यह आपका मैं आंख से देखूं क्योंकर ॥
था यह बहतर न मुझे यहां पे बुलाया होता ॥
राजा यह दुख मुझसे देखा न जाए काहेकोजी तड़पावत है ॥१॥
चूक और भूल भी हो जाती है इनसानों से ॥
नेको बद दुनियांमे कहिये नहीं क्या क्या होता ॥
कोप भी आजाया करता है कभी इनसां को ॥
पर नहीं तेरी तरह आग बगूला होता ॥
राजा मैनाका तो कुछ दोष नहीं है काहेको दुखदरसावतहै ॥२॥

मैं ख़तावार हूं बेटी भी ख़तावार मेरी ॥
तुमही अच्छे सही इस बातका झगड़ा क्या है ॥
मुआफ़ महाराज ख़ता कीजे मेरी बेटीकी ॥
नहीं औलादसे नादानीमें क्या क्या होता ॥
राजा राणी तुम्हारी दोकर जोड़े चरणोंमें सीस झुकावतहै ॥३॥

७२

माता और सब दरबारियों को रोते हुये देखकर मैनासुन्दरी का खड़े होकर सबको समझाना और तसल्ली देना ॥

चाल-(ग़ज़ल) यह कैसे बाल बिखरे हैं यह क्यों सूरत बनी ग़मकी ॥

दरो दीवारसे आती है क्यों आवाज़ मातमकी ।
खुशीमें किसलिये चारों तरफ छाई घटा ग़मकी ॥ १ ॥
मैं खुश हूं अपनी शादीसे नहीं अरमान इतना भी
की जैसे बर्ग सोसनपे पड़ी हो बूंद शबनम की ॥ २ ॥
चाहे रोगी है कुष्टी है दरिद्री है भिखारी है ।
मेरे नज़दीक हीरे की कनी है मेरी ख़ातमकी ॥ ३ ॥
यही रघुबर यही गिरधर यही सूरज यही चन्दर ।
मेरी नजरों में है मनमथकी सूरत मेरे बालमकी ॥ ४ ॥
तुम्हारा दोष क्या राजा यह सब क़िसमतकी बातें हैं ।
किसी की कुछ नहीं चलती है जब तक़दीर आ चमकी ॥ ५ ॥
वज़ीरों किसलिये रोते हो क्यों अफ़सोस करते हो ।
सरे तसलीम ख़म है जो करे मरज़ी है हाकिम की ॥ ६ ॥

अगी माता मुझे मंजूर है मरजी पिताजी की ॥
आपने किसलिये इसवक्त अपनी चश्म पुरनम की ॥ ७॥
ठीक है बापकी तदबीर क्यों दलगीर होती हो ।
मेरे संग है मेरी तकदीर कुछ यह तो नहीं कमकी ॥ ८ ॥

७३

राजा का जवाब देना और मैनासुन्दरी का हाथ श्रीपाल को पकडाना और कन्यादान करना और श्रीपाल का मैनासुन्दरी को अंगीकार करना ॥

राजा—(शैर) बस अबतो हम किसी की जरा भी न सुनेंगे।
जो दिलमें आगया है वही करके टेंगे ।
(वार्तालाप) अय कुष्टी श्रीपाल हम इस कन्याका ब्याह तुम्हारे साथ करते हैं इसको अंगीकार करो ।

श्रीपाल-मैं इसको अंगीकार करता हूं (श्रीपालका मैना सुन्दरीको लेकर चलने को तय्यार होना)

७४

मैनासुन्दरी को जाते हुये देखकर वजीर का मैनासुन्दरी को तसल्ली देना और रंज करना ॥

चाल—कतल मत करना मुझे तेगो तबर से देखना ॥

माहे रोशन कर्म क्यों मनहूस अख्तर बन गया ॥
नर्म दिल महाराजका क्यों सख्त पत्थर बन गया ॥ १ ॥
गुलबदन मैनासती था नाज से पाला तुझे ॥
हा चमन से दूर जंगल में तेरा घर बन गया ॥ २ ॥
बनती पटराणी किसी राजाके जा महलों में तू ॥

किस तरह कुष्टी महा रोगी तेरा वर बन गया ॥ ३ ॥
धीर धर बेटी दशा यकसां कभी रहती नहीं ॥
धर्म को जिसने रखा बदतर से बत्तर बन गया ॥ ४ ॥
तुझ बिना मैनासती सब राज सूना हो गया ।
आजसे दरबार जो बहतर था अबतर बन गया ॥ ५ ॥

७५

मैनासुन्दरी का वजीर को जवाब देना ॥

चाल—यह कसे वाले बिखरे हैं यह क्यों सूरत बनी गम की ॥

चमन से अबतो मैना ने उठा लिया आशियां अपना ॥
संभालो अय वज़ीर अय बादशाह हमसे मकां अपना ॥ १ ॥
मेरी क़िसमत की खूबी है बना सय्याद है वहही ॥
जिसे मैं बालपन से जानती थी बाग़बां अपना ॥ २ ॥
हमारी तर्फ से उजड़े बसे यह राज या नगरी ॥
उठालिया आज से हमने चमन सेती निशां अपना ॥ ३ ॥
नहीं अब महल की ख्वाहिश तमन्ना है न गुलशन की ॥
बनाऊगी किसी जंगल में जा करके मकां अपना ॥ ४ ॥
देखलिया गोरकर हमने कि मतलब का जमाना है ॥
न कोई मात पितु अपना न भाई आशना अपना ॥ ५ ॥
मेरा जलता है जी बेकस मेरी माता की हालत पर ॥
कि कबसे रोरही है खोरही आरामो जां अपना ॥ ६ ॥
सबर अब कीजिये माता सिवा इसके नहीं चारा ॥
नही पैदा हुई मैना यही कल्ले गुमां अपना ॥ ७ ॥

७६

सुरसुन्दरी और मैनासुन्दरी की बातचीत ॥

चाल—(रागनी) अटारियों पै बैठा कबूतर आधी रात ॥

सुर०—हाहारी मैना कैसे सहेगी दुख भार ।
मैना०—नहीं नहींरी बहना समता धरूंगी सुखकार ।
बीचारली मैं होगा जो लिक्खा है ललार ॥टेक॥
सुर०—हाहारी मैना कुष्टी मिला है भरतार ।
मैना०—नहीं नहींरी बहना चन्दवदन मनहार । बीचार० ॥ १ ॥
सुर०—हाहारी मैना छोड़ चली परिवार ।
मैना०—नहीं नहींरी बहना झूटा है सारा घरबार बीचार० ॥२॥
सुर०—हाहारी मैना बाबल ने दीयो दुख भार ।
मैना०—नहीं नहींरी बहना यूंहीथा करम हमार ।बीचार० ॥३॥
सुर०—(छाती से लगाकर) हाहारी मैना फिरना मिलेगी करूं प्यार
मैना०—नहीं नहींरी बहना जिउंतो मिलूंगी कईबार ।बीचार० ४।

७७

मैनासुन्दरी को जाते हुए देखकर माता का रुदन करना
और मैनासुन्दरी से कहना ॥

चाल—(सोहनी) चल बसे कहां भ्राता मेरे हाय लक्षमन येवतन ॥

कहां चलीतू मेरी प्यारी मैनासुन्दर गुलवदन ।
मेरी प्राण प्यारी अय सीम तन मेरी हाय बेटी गुलबदन ।१।
माता रुदन तेरी करे तुझ बिन जिया कैसे धरे ।

मर जाएगी करके रुदन मेरी हाय सुन्दर गुलबदन ॥ २ ॥
खोटा करम तैं क्या किया कुष्टी जो बर तुझको मिला।
तूने धारा था मेरे क्यों जनम मेरी हाय सुन्दर गुलबदन ॥ ३ ॥
मेरी लाडली मैना सती जिनधर्म लीन और गुणवती।
घर छोड़ होगई बेवतन मेरी हाय सुन्दर गुलबदन ॥ ४ ॥

७८

मैनासुन्दरी का अपनी माता निपुणासुन्दरी को तसल्ली देना ॥

चाल—(नाटक) कोई आओना अरे आके मजीवन ताओना ॥

ग़मखाए ना तेरा मुझसे लखा दुख जायना ॥
काहे रोवे जरावे सतावे जिया ॥ ग़म ॥ टेक ॥
मुझको मालूम न था ऐसी हँसाई होगी ॥
सारे घरबारसे मातासे जुदाई होगी ॥
अब सिवा सब्रके माता नहीं चारा कोई ॥
ध्यान जिनराज धरो ग़मसे रिहाई होगी ॥
दुख पाए ना, जी जलाए ना ॥ तेरा हमसे० ॥ १ ॥
इस जहां में न कोई यार यगाना देखा ॥
ग़ौर कर देखा तो मतलबका ज़माना देखा ॥
न कोई मात पिता बन्धु किसी का कोई ॥
अपना समझूँथी जिसे वह भी बिगाना देखा ॥
कलपाय ना, भरमाए ना ॥ तेरा हमसे० ॥ २ ॥
अब नहीं फायदा रोने से फ़िकर जानेदो ॥
प्यार कर मुझको ज़रा थाम जिगर जानेदो ॥

बाप की जिद मेरे कर्मों की परीक्षा होगी ॥
बस मैं जाती हूं बनोबास मुझे जानेदो ॥
सुध खोए ना, बस रोए ना ॥ तेरा हमसे० ॥ ३ ॥

७९

रानी और सुरसुन्दरी व सब दरबारियों को रोते हुवे देखकर राजा का दिल भर आना और मैनासुन्दरी से कहना (शैर)

अरी मैना सुन्दर यह क्या हो गया ॥
ग़ज़ब हो गया है सितम हो गया ॥ १ ॥
है इज्जत मेरी खाक में मिलगई ॥
मेरा राज सारा तबाह हो गया ॥ २ ॥
दिखाउंगा मुंह अपना दुनिया में क्या ॥
हमेशा को मैं रूसियाह हो गया ॥ ३ ॥
पड़ा अक्ल पर क्या यह परदा मेरे ॥
जो बेटी से नाहक खफा हो गया ॥ ४ ॥

८०

मैनासुन्दरी का राजा को जवाब देकर श्रीपाल के साथ मंडप से रवाना होना और जंगल को चला जाना और ड्रोप सीन गिरना ॥
चाल—है बहारे बाग दुनिया चन्द रोज़ ॥

मुझसे क्या पूछो हो यह क्या हो गया ॥
जैसा किसमत में लिखा था हो गया ॥ १ ॥
सुख बहुत भोगा तुम्हारे राज में ॥
अबतो जंगल में निकारा हो गया ॥
रंज की अफ़सोस की क्या बात है ॥

आपके जीका विचारा होगया ॥ ३ ॥
होगई उम्मीद पूरी आपकी ॥
इमतहां इसमें हमारा होगया ॥ ४ ॥
रंज गर है तो मुझे इस बात का ॥
जा बजा चरचा तुम्हारा होगया ॥ ५ ॥
धीर बंधवाना हमारी मातकी ॥
रोते रोते पहर सारा होगया ॥ ६ ॥
माफ़ करदेना पिताजी भूलसे ॥
दोष गर कोई हमारा होगया ॥ ७ ॥
अबतो जाती हूं पिता आज्ञा करो ॥
नेग टेहला व्याहका सारा होगया ॥ ८ ॥
फिर कभी आकर मिलूंगी आपसे ॥
गर करम सीधा हमारा होगया ॥ ९ ॥ (चलाजाना)

इति न्यामतसिंह रचित मैनासुन्दरी नाटक का पहिला ऐक्ट समाप्तम्

मैना सुन्दरी नाटक

दूसरा ऐक्ट

श्रीपालका कुष्ट दूर होना और श्रीपालका परदेशमें जाना ॥

श्रीजिनेन्द्रायनमः

सीन ११

वनका परदा

८१

मैनासुन्दरी और श्रीपाल का वनमें पहोंचना ॥ मैनासुन्दरी का श्रीपाल और सातसौ वीरोंका कुष्ट सहित देखकर कर्मोंकी निन्दा करना ॥

चाल—(इन्द्रसभा) घरने यहां कौन खुदा के लिये लाया मुझको ॥

जितनाजी चाहे तेरा आज रुलाले हमको ।
जिस क़दर तुझको सताना है सताले हमको ॥ १ ॥
सङ्गदिल तुझसा करम और न होगा कोई ॥
सच बता तूने किया किसके हवाले हमको ॥ २ ॥
मैं तो जानूंथी कहीं राजके सुख भोगूंगी ।
ढंग आते हैं नज़र और निराले हमको ॥ ३ ॥
बापकी बातें सुनी ताने सहे दुनिया के ॥
तुझको अरमां न रहे और सुनाले हमको ॥ ४ ॥
अय करम हमसा दुखी कोई नहीं दुनियामें ॥
तेरा जी चाहे कहीं जाके दिखाले हमको ॥ ५ ॥

राज और पाट तो छूटा सा खैर जानेदो ।
अबतो जीनेके भी हैं पड़गये लाले हमको ॥ ६ ॥
कुष्ट बालमको दिया मुझको निकाला घरसे
और किस कष्ट में डालेगा तू ज़ालिम हमको ॥ ७ ॥

८२

मैनासुन्दरी का श्रीपाल के पास बैठना और श्रीपालका मने करना ॥
चाल—(गजल) इलाजे दर्द दिल तुमसे मसीहा हो नहीं सकता ॥

तुझे अय प्राण प्यारी यहां पै आना ना मुनासिब है ॥
मेरी खातिर हजारों दुख उठाना ना मुनासिब है ॥ १ ॥
कुसंगतसे बदी नेकों के दिलमें आही जाती है ।
मेरे संग बैठना उठना तुम्हारा ना मुनासिब है ॥ २ ॥
मेरा तन कुष्टसे व्याकुल महा दुर्गंध आती है ।
हाथ कोमल मेरे तनको लगाना ना मुनासिब है ॥ ३ ॥
अशुभ कर्मोंका है जब लग उदय मेरे शशी बदनी ।
मेरे नज़दीक तेरा आना जाना ना मुनासिब है ॥ ४ ॥
मुसीबत में फंसा मैं तो यही कर्मोंकी मरजी है ।
और की आगमें खुदको जलाना ना मुनासिब है ॥ ५ ॥

८३

मैनासुन्दरी का जवाब
चाल—(गजल) कहां लेजाऊं दिल दोनों जहां में इसकी मुश्किल है ॥

साथ जिसका लिया उसका निभानाही मुनासिब है ॥
करममें जो लिखा है आज़मानाही मुनासिब है ॥

श्रीजिनेन्द्रायनमः

सीन ११

वनका परदा

मैनासुन्दरी और श्रीपाल का वनमें पहोंचना ॥ मैनासुन्दरी का श्रीपाल और सातसौ वीरोंका कुष्ट सहित देखकर कर्मोंकी निन्दा करना ॥

चाल—(इन्द्रसभा) घरसे यहां कौन खुदा के लिये लाया मुझको ॥

जितनाजी चाहे तेरा आज रुलाले हमको ।
जिस क़दर तुझको सताना है सताले हमको ॥ १ ॥
सङ्गदिल तुझसा करम और न होगा कोई ॥
सच बता तूने किया किसके हवाले हमको ॥ २ ॥
मै तो जानूंथी कहीं राजके सुख भोगूंगी ।
ढंग आते हैं नज़र और निराले हमको ॥ ३ ॥
बापकी बातें सुनी ताने सहे दुनिया के ॥
तुझको अरमां न रहे और सुनाले हमको ॥ ४ ॥
अय करम हमसा दुखी कोई नहीं दुनियामें ॥
तेरा जी चाहे कहीं जाके दिखाले हमको ॥ ५ ॥

राज और पाट तो छूटा सा खैर जानेदो।
अबतो जीनेके भी हैं पड़गये लाले हमको ॥ ६ ॥
कुष्ट बालमको दिया मुझको निकाला घरसे
और किस कष्ट में डालेगा तू ज़ालिम हमको ॥ ७ ॥

८२

मैनासुन्दरी का श्रीपाल के पास बैठना और श्रीपालका मने करना ॥
चाल—(गजल) इलाजे दर्द दिल तुमसे मसीहा हो नहीं सकता ॥

तुझे अय प्राण प्यारी यहां पै आना ना मुनासिब है ॥
मेरी खातिर हजारों दुख उठाना ना मुनासिब है ॥ १ ॥
कुसंगतसे बदी नेकों के दिलमें आही जाती है।
मेरे संग बैठना उठना तुम्हारा ना मुनासिब है ॥ २ ॥
मेरा तन कुष्टसे व्याकुल महा दुर्गंध आती है।
हाथ कोमल मेरे तनको लगाना ना मुनासिब है ॥ ३ ॥
अशुभ कर्मोंका है जब लग उदय मेरे शशी बदनी।
मेरे नज़दीक तेरा आना जाना ना मुनासिब है ॥ ४ ॥
मुसीबत में फंसा मैं तो यही कर्मोंकी मरजी है।
और की आगमें खुदको जलाना ना मुनासिब है ॥ ५ ॥

८३

मैनासुन्दरी का जवाब
चाल—(गजल) कहां लेजाऊं दिल दोनों जहां में इसकी मुश्किल है ॥

साथ जिसका लिया उसका निभानाही मुनासिब है ॥
करममें जो लिखा है आज़मानाही मुनासिब है ॥

करूंगी क्या बचा करके प्राण अपने बताओ तो ॥
पतीके वास्ते जांको गंवानाही मुनासिब है ॥ २ ॥
लाज फेरोंकी रखनी है पास आनेसे मत रोको।
सतीका धर्म जो कुछ है दिखानाही मुनासिब है ॥ ३ ॥
दुखी तुमहो मैं सुख भोगूं यह हरगिज हो नहीं सकता।
मुसीबत जो पड़े मुझपे उठानाही मुनासिब है॥ ४ ॥
दूर जबलग न कुष्ठ होगा कहो जीना मेरा क्या है ॥
तेरी सेवामें तन मनको लगानाही मुनासिब है ॥ ५ ॥
मुसीबत चार दिनकी है पिया इतने न घबराओ ॥
मुसीबत में धीर मनको बंधानाही मुनासिब है॥ ६ ॥
शील है रूप और जोबन शीलसे है मेरी शोभा।
शील शृंगार तन मनमें सजानाही मुनासिब है ॥ ७ ॥
मुसीबतमें पिया मेरे धरम बिन को नहीं अपना।
भरम तजके धरममें जी लगानाही मुनासिब है ॥ ८ ॥

८४

श्रीपालका फिर मैनासुन्दरीको समझाना ॥

चाल—(नाटक) चलती चपला चञ्चल चाल सुन्दर नार अलबेली ॥

धन धन है तुमरो अवतार सुन्दर नार अलबेली ॥
मत हम संग बनमें डोले। क्यों अमृतमें विष घोले ॥
तू सुकुमार सुन्दर बेली ॥ धन धन० ॥
(दोहा) तू महलों की लाडली मैं कुष्टी दुख पूर।
कहना मेरा मानले रहना हमसे दूर ॥ १ ॥

नाजानूं कबलग सहूं दुख कर्मों के हाथ ।
अय बैरी दुख पाएगी मत बैठो हम साथ ॥ २ ॥
हां हां हां गुणवाली । ओहो हो भोली भाली ॥
नई बेली सी नार नवेली ॥ धन धन० ॥

८५

मैनासुन्दरी का जवाब देना और श्रीपाल को धर्म में लगाना
और तसल्ली करना और मैनासुन्दरी का सिद्धचक्र की
पूजा करने का विचार करना ॥

चाल-हाय अच्छे पिया वही देश बुआला हिन्द म जी घबरावत है ॥

स्वामी धीरज धारो शोक निवारो क्यों इतना घबरावत हो ।टेक।
उपाय लाख करो चाहे कोई नर नारी ॥
गती करमकी किसीसे टरे नहीं टारी ॥
अशुभ करमका उदय जब किसीके होता है ।
न काम आवें कोई तात भ्रात महतारी ॥
स्वामी कौनाकिसीका बंधू पियारा काहेको जी भरमावतहो १ ॥
मिले जो सिंघ केरी नाग ग्राह दुखदाई ।
हो रोग कुष्ट बदनमे या बंदके माहीं ॥
अगनमें सिंधु महावन पहाड़ जंगलमें
हों बिजलियोंकी चमक जल पड़े घटा छाई ।
स्वामी होता है एक धर्म सहाई क्यों निश्चय नहीं लावत हो २।
द्वेष रागको तजकर भरमको दूर करो ।
धरमकी शर्ण गहो और मनमें धीर धरो ॥

१ हाथी

मैं सिद्ध चक्रका हृदयमें ध्यान करतीहूं ॥
सुयज्ञ रचती हूं इसदम प्रभुको याद करो ॥
स्वामी कुष्ट तुम्हारो दूर करूंगी काहेको मन कलपावत हो ।२

८६

श्रीपाल का जवाब

चाल—इलाजे दर्द दिल तुमसे मसीहा हो नहीं सकता ॥

हुवा निश्चय मेरे मनको मुसीबत जाने वाली है ॥
मुझे इस दर्द ग़मसे जल्द फ़ुरसत होने वाली है ॥ १ ॥
सती अहसान यह तेरा उमर तक मैं न भूलूंगा ॥
तेरे हाथों से प्यारी मुझको राहत होने वाली है ॥ २ ॥
मेरे सीधे दिन आएहैं मिली तुझसी सती मुझको ॥
श्री अरिहंत की मुझपे इनायत होने वाली है ॥ ३ ॥
तेरे कहनेसे अय प्यारी यक़ीं अब होगया सबको ॥
कोई दममें हकूमत कर्म रुख़सत होने वाली है ॥ ४ ॥
अभी जाओ मेरी प्यारि मिटादो कुष्ट बीमारि ॥
तेरे सत शीलकी दुनियामें शोहरत होने वाली है ॥ ५ ॥

८७

मैनासुन्दरी का भगवान की प्रस्तुति करना और सिद्ध चक्र की पूजा करने को रवाना होना ॥

चाल—(नाटक समाज) गगरिया मोरी फोरी रे बराजोरी से ॥

प्रोहणया मोरी तारेंगे स्वामी महावीर ॥
परम हितकारी-में जाऊं वारी वारी ॥ जी प्रोहणया० ॥ टेक ॥

आज नाथ तेरा शरणा लूंगी--नित नित करुंगी बड़ाई ।
तुम नैय्या तारो मोरी--मै सेवा सारूं तोरी ॥ जी प्रोहणया० ॥

सीन १२

श्रीजैन मंडपका परदा

८८

नोट—मैनासुन्दरी का वनमें श्रीजेन मंडप तय्यार करना और सिद्ध चक्र का यत्र स्थापन करना और श्रीपाल व सब कुष्टियो का मंडप से बाहर बैठे हवे नजर आना ॥

८९

मैनासुन्दरी का सिद्ध चक्र का यंत्र स्थापन करना और उसकी पूजा करना ।

नोट—एक ऊंची चौकी पर सिद्ध चक्र यत्र स्थापन करना चाहिए और ४ पडितो को बैठकर ऊचे स्वर से हवन कराना चाहिए ॥ सपूर्ण यत्र नहीं लिखा है यह केवल नमूना है ॥

सिद्धान्प्रसिद्धान् वसुकर्म मुक्तान् ।
त्रैलोक्य शीर्षे स्थितचिद्विलासान् ।
संस्थापये भाव विशुद्धिदातॄन् ।
सन्मंगलं प्राज्य समृद्धयेहम् ॥ १ ॥

९०

अथ निस्तारक मंत्राः (आहुति देना)

सत्यजाताय स्वाहा ॥ १ ॥
अर्हज्जाताय स्वाहा ॥ २ ॥
पट कर्मणे स्वाहा ॥ ३ ॥
ग्रामपतये स्वाहा ॥ ४ ॥
अनादिश्रोत्रियाय स्वाहा ॥ ५ ॥
स्नातकाय स्वाहा ॥ ६ ॥
श्रावकाय स्वाहा ॥ ७ ॥
देव ब्राह्मणाय स्वाहा ॥ ८ ॥
सुब्राह्मणाय स्वाहा ॥ ९ ॥
अनुपमाय स्वाहा ॥ १० ॥
सम्यग्दृष्टि निधिपति वैश्रवणाय स्वाहा ॥ ११ ॥

नोट—अन्त में जल धारा देकर यज्ञ समाप्त करना ॥

९१

मैनासुन्दरी का गंदोदक लेकर श्रीपाल और सातसौ वीरों का कुष्ट दूर होनेकी प्रार्थना करना और सब पर गंदोदक छिडकना और सबका एकदम अच्छा होना और जयजयकार करना ॥

चाल—अजब नहीं अकसीर हमारी खाकको चाहे जर करदे ॥

अजब नहीं तासीर धरम की खाकको चाहे ज़र करदे ॥
चींटि से अखतर सबसे बरतर नोकर को अफ़सर करदे ॥ १ ॥

अपरमपार धरमकी महिमा रातको चाहे सेहर करदे ॥
सीता सती के अगन कुंडको जल भरकर सरवर करदे ॥ २ ॥
सेठ कंवरको डसा सांपने छिनमें उसका विष हरदे ॥
पड़ा गलेमें सांप सती के फूलमाल सुन्दर करदे ॥ ३ ॥
जो कोई विमुख धरमसे होवे छिनमें जेरो जबर करदे ॥
चक्रसभूमकी तरह डुबाकर बीच समंदरके धरदे ॥ ४ ॥
रावणकी जों जलाके लंका नरकमें उसका घर करदे ॥
पापी के धन दौलत गौहर जौहर को पत्थर करदे ॥ ५ ॥
सेठ सुदर्शनको सूलीसे बचा तख्त ऊपर धरदे ॥
वही धरम इस मैनासती के पतीपे नज़र महर करदे ॥ ६ ॥
पूरण यज्ञ हुवा है मेरा मुझमें यही असर करदे ॥
गंदोदकसे इन सबही को कुष्ट हटा नोभर करदे ॥ ७ ॥

(मैनासुन्दरी का गन्धोदक छिड़कना-सबका जय जयकार करना)

१२

श्रीपाल और सब वीरों का एकदम अच्छा होना और
मैनासुन्दरी की स्तुति करना ॥

चाल—इलाजे दर्द दिल तुमसे मसीहा हो नहीं सकता

ज़बां से तो अदा अहसां तुम्हारा हो नहीं सकता ॥
करें किस मूंहसे गुण वर्णन तुम्हारा हो नहीं सकता ॥ १ ॥
धनंतर है तो तूही है मसीहा है तो तूही है ॥
कोई दुनियामें बस सानी तुम्हारा हो नहीं सकता ॥ २ ॥
तेरे अहसान को प्यारी उमर तक हम न भूलेंगे ॥

सिवा तेरे कोई हामी हमारा हो नहीं सकता ॥ ३ ॥
तू है सची सती सच्चा धरम तेरा करम तेरा ॥
हमें बिन आपकी किरपा सहारा हो नहीं सकता ॥ ४ ॥

९३

इन्द्र महाराज और इन्द्राणी व देवताओं का आना और मैनासुन्दरी व श्रीपालकी जय जयकार करना और दोनो पर फूल वरसाना॥

चाल—(नाटक) महाराज गावें जय हम ॥

धन्यबाद गावें अब हम । बरसावें फूल छम छम ॥ धन० ॥
हीरोंका ताज दम दम । करे सीस ऊपर हरदम ॥
श्रीपाल और मैनानारी । यानी प्यारा प्यारी ॥
आपस में खुश रहें बाहम ॥ धन्य० ॥ १ ॥
आफत पड़ती थी भारी । अब दूर हुई है सारी ॥
है धन धन मैनासुन्दर ॥ गावें जश सुर नर इन्दर ॥
भारत का सत रहे कायम ॥ धन्य० ॥ २ ॥

९४

मैनासुन्दरीका भगवानकी स्तुति करना और परदा गिरना

चाल—(नाटक) ला ला ला ला भर भर जाम पिला गुललाला बनादे मतवाला ॥

जय जय जय जय, श्रीजिन ध्यान धरो सुखकारी
सदाही हितकारी ॥ टेक ॥ वह शर्णसार है-माहिमा अपार है-
भव तरन तार है-दुख हरणहार है ॥ जय जय० ॥ १ ॥

मेरे यज्ञको रचा-पाति कुष्टको हरा-महिमा धरम दिखा-
मेरी लाज को रखा ॥ जय जय० ॥ २ ॥
जिन धर्मको गहो-निश्चय इसे करो-संसारसे तिरो-
शिवनार जा बरो ॥ जय जय० ॥ ३ ॥

सीन १३

(चम्पापुरके महलका परदा)

९५

नोट—एक दिन चम्पापुर में श्रीपालकी माता कुन्दप्रभा ने मुनि महाराज से श्रीपाल का हाल पूछा और श्रीपालके पास जाने की राजा वीरदमन से आज्ञा ली ॥

९६

माताका श्रीपाल के वियोग में रोते हुवे नजर आना। और उज्जैन नगर की तरफ श्रीपालकी तलाश में रवाना होना ॥

चाल—(नाटक भैरवी) देखूंगी मेरे सजन का मुखड़ा ॥

देखूंगी मेरे बेटेका मुखड़ा। प्यारा प्यारा प्यारा प्यारा ॥
प्यारारे मेरे बेटेका मुखड़ा ॥ टेक ॥
बन बन फिरूंगी ढूंढ करूंगी ॥
छोडुंगी राज महलोंका बसरा ॥ देखुंगी० ॥ १ ॥
जबस गया कछु खबर न आई ॥
देगया मोहे बरसोंका दुखड़ा ॥ देखुंगी० ॥ २ ॥

पति मरा-सुत बनको सिधारा ॥
कैसे टिके कहो मेरा यह जियरा ॥ देखुंगी० ॥ ३ ॥

सीन १४

उज्जैनके जंगल में श्रीपाल के महल का परदा

१७

श्रीपाल की माता का श्रीपाल के महल में पहोंचना । श्रीपाल का मातासे मिलना और पाओं में गिरना । माता का श्रीपालको गले लगाना और सिंघासन पर बैठना और मैनासुन्दरीका सासके पांवों में पड़ना और सासका आशीर्वाद देना और सबका बात चीत करना ॥

माता-(दोहा) बेटी मैनासुन्दरी बढ़े तुम्हारा भाग ।
चिरजीवो तुम बालमा रहियो सदा सुहाग ॥ १ ॥
अंतेवर सेवा करें बढ़े राज चिरकाल ॥
सदा नेह तुमसे करे कोटी भट श्रीपाल ॥ २ ॥

मैना०-(दोहा) हे माता तुम देखकर मिलो स्वर्गका राज ।
पाओं पधारे आपके जनम सुफल भयो आज ॥१॥
दोनों कुल उज्जल भए बढ़ा सुमनमें राग ।
दर्शन पाए आपके धन्य हमारे भाग ॥ २ ॥

माता- (वर्तालाप) बेटा कोटीभट बीर सुखी तो है तेरा शरीर

श्री०—माता जबसे आप का दर्शन पाया सब दुख दूर हुवा स्वर्ग का सुख पाया ॥

माता—बेटा कैसे मिटा तेरे कुष्ट का मलाल सुनातो सही मात। को हाल ॥

श्री०—हे माता मेरे कुष्ट के मिटानेवाली यह सती मैना-सुन्दरी है जो आपके चर्णों में खड़ी है यही मेरे लिये धनंतर है यही मसीहा है इसी ने मुझको मौत से बचा अच्छा किया है ॥

माता—और वह सातसौ वीर ?

श्री०-उन सबकी भी इसी की कृपा से दूर हुई है सब पीर।

माता-बेटा ऐसा क्या जतन बनाया जो छिनमें सबका कुष्ट रोग दूर हटाया ॥

९८

श्रीपालका जवाब ॥

चाल- (गजल) इलाजे दर्द दिल तुमसे मसीहा हो नहीं सकता ॥

सती ने जिस घड़ी बीमार देखा इक नजर हमको।
दया दिलमें हुई पैदा कहा रक्खो सबर हमको ॥ १ ॥
रचा मंडप करी सिद्धचक्र की पूजा जतन करके ॥
जो छिड़का लाके गंदोदक हुवा ऐसा असर हमको ॥ २ ॥
कि थे जितने महा कुष्टी उन्हें नोभर किया इकदम ॥
मिसल सोने के तन आने लगा अपना नजर हमको ॥ ३ ॥

करूं किस मूंह से गुण वर्णन यह सतियों में श्रोमणि है।
हमारे भाग अच्छे हैं मिली यह नारवर हमको ॥ ४॥

९९

मैनासुन्दरी का जवाब ॥

चाल—(ग़जल) यहतो मैं क्योंकर कहूं तेरे खरीदारों में हूं ॥

कौन कहता है मुझे मैं नेक अतवारों में हूं।
मैं खतावारों में हूं बल्के गुनेहगारों में हूं ॥ १ ॥
मत करो तारीफ़-मेरी दोष लगता है मुझे।
मैं तुम्हारी चर्ण रज तेरे परिस्तारों में हूं ॥ २ ॥
फ़ायदा जो कुछ हुवा है आपके इक़बाल से।
वरना मैं तो हूं सियाहकारों में दुखयारों में हूं ॥ ३ ॥
बाप ने घर से निकाली जगमें रुसवाई हुई।
मैं तो ग़मख्वारों में हूं किसमत से लाचारों में हूं ॥ ४ ॥

१००

सासका मैनासुन्दरीको धनवाद देना ॥ (वार्तालाप)

धन्य है सती मैनासुन्दरी तूने धर्म का फल प्रगट क दिखाया, मेरे बेटे और सातसौ वीरों का कुष्ट हटाया, सतिय का मर्तबा बढ़ाया, अपने इमतिहान को पूरा कर दिखाया दुनिया में धर्मवंती और-शीलवंती का नाम पाया ॥

सीन १५

श्रीपाल के महलका परदा

१०१

नोट—श्रीपाल और मैनासुन्दरी व कुन्दप्रभा वहीं उज्जैन के जगल में सुखसे रहने लगे ॥ एक दिन रातको श्रीपाल और मेनासुन्दरी का महल में सोना और श्रीपाल को नींद न आना। मैनासुन्दरी का श्रीपाल से हाल पूछना॥

१०२

मैनासुन्दरी का श्रीपाल से नींद न आने का कारण पूछना।
चाल—इलाजे दर्द दिल तुमसे मसीहा हो नहीं सकता॥

उचाटी किस लिये है क्यों उदासी मूंह पे छाई है।
वजे क्या है जो अबतक आपको नहीं नींद आई है ॥ १ ॥
किसी ने क्या खबर कुछ आपके घरकी सुनाई है ॥
जिसे सुनकर तुम्हारे दिलमें व्याकुलताई आई है ॥ २ ॥

१०३

श्रीपाल ॥

न छेड़ो तुम हमें प्यारी तुम्हें मेरी दुहाई है।
मेरेसे कुछ नहीं पूछो मेरे क्या जीमे आई है ॥ १ ॥

नहीं कोई खबर समझो हमारे घरसे आई है ।
तुझे बतला नहीं सकता कि क्यों नहीं नींद आई है ॥ २॥

१०४

मैनासुन्दरी ॥

कहाहै आपको राजाने क्या कुछ आज बतलादो ॥
आपने किसलिये ग़मगीन यह सूरत बनाई है ॥ १ ॥
तुम्हारी देखके हालत मेरे दिल बेक़रारी है ॥
पिया सच हाल बतलादो कि क्या दिलमें समाई है ॥ २ ॥

१०५

श्रीपाल ॥

प्राण प्यारी कहा राजा ने है कुछ भी नहीं मुझको ॥
नहीं परजा मेरी प्यारी कोई फ़रयाद लाई है ॥ १ ।
न मैं बीमार हूं प्यारी न मैं दीवाना हूं प्यारी ।
तेरेसे कह नहीं सकता कि क्या दिलमें समाई है ॥ २ ॥

१०६

मैनासुन्दरी ॥

कहीं परदेश जानेका किया क्या आपने मनशा ॥
हुई है क्या किसी दिलदारसे तुमरी जुदाई है ॥ १ ॥
मेरे तुम प्राण प्यारे हो छुपाओ भेद मत मुझसे ।
तुम्हें मेरी क़सम कहदो साफ़ जो दिलमें आई है ॥ २ ॥

१०७

श्रीपाल ॥

सिवा तेरे नहीं दिलदार दुनियां में कोई मेरा ।

जुबां पर किस लिये तू आज ऐसी वात लाई है ॥ १ ॥
सुनेगी हाल गर मेरा मलिन होवेगा मन तेरा।
मुझे खामोश रहने दे इसी में कुछ भलाई है ॥ २॥

१०८

मैनासुन्दरी

अगर तुम जानते हो प्राण प्यारी आपनी मुझको।
तो फिर क्यों आपने यह बात मेरे से छुपाई है ॥ १ ॥
वजा लाऊंगी सर आंखों से कहदो आपके मनकी।
मैं सच कहती हूं मत समझो हंसी करने को आई है ॥ २ ॥

१०९

श्रीपाल का हाल बताना ॥
चाल—इलाजे दर्द दिल तुमसे मसीहा हो नहीं सकता ॥

सती सुन किसलिये तू दिलको यों वेजार करती है।
मेरे से किसलिये इस बात पे तकरार करती है ॥ १ ॥
सुनाता हूं हाल अपना मगर रखना इसे दिल में।
अगर तू इस क़दर इस बात पे इसरार करती है ॥ २ ॥
जमाई राजा का कहती है सब दुनिया मुझे प्यारी।
नाम मां बाप का मेरे नहीं इज़हार करती है ॥ ३ ॥
न मेरे नाम को जाने न मेरे देश को जाने।
यह गुमनामी मुझे रुसवा सरे बाजार करती है ॥ ४ ॥
मिटा जब नाम मेरे वंश का जीना मेरा क्या है।
यही है बात जो जीको मेरे वेज़ार करती है ॥ ५ ॥

११०

मैनासुन्दरी का जवाब॥

चाल—(कव्वाली) कोई चातुर ऐसी सखी न मिली मोहे पीका द्वारा बतादेती॥

राजा आपने है जी यह बात कही।
है यह सांच ज़रा ऐतराज़ नहीं॥
बड़े स्यानों ने है यही बात कही।
सुसराल बसे रहे लाज नहीं॥ १॥
जैसे भगनी के घर कोई बीर रहे।
कोई सूरमा बिन हथियार लड़े।
धन धान बिना कोई दान करे।
कुछ शोभा नहीं, रहे लाज नहीं॥ २॥
मांग राजा से चतुरंग सैन लहो।
घर चलने का वेगी विचार करो॥
सुसराल में राजा जी अब ना रहो।
यहां न राज जमें, रहे लाज नहीं॥ ३॥

१११

श्रीपाल का जवाब॥

चाल—(नाटक) यूंही ताने का कैसा वहाना हुवा॥

कहीं जाने का मेरा इरादा हुवा॥ कहीं जाने का॥

मेरे जानका गम कुछ न कर तू ज़रा ॥ कहीं जानेका ॥टेक॥
मांगे दल, हो नाराज । सरे कोई ना काज । मेरी जावेगी लाज ।
लेके ससुरे का दल जो पयाना किया ॥ कहीं० ॥ १ ॥
ज़रा सुनदेके कान । मेरे प्राणोंकी प्राण । सुख भोगो महान ।
सारा घरबार तेरे हवाले किया ॥ कहीं० ॥ २ ॥
दीजो चहूं संघको दान ॥ रखियो माताका मान ॥ करियो
पूजा बिधान । जिससे है कुष्ट सबका रवाना किया । कहीं०॥३॥
मेरा दिल तेरे पास॥मत होना निरास॥रखियो मिलनेकी आस॥
मेरे दिलमें है तूने ठिकाना किया ॥ कहीं० ॥ ४ ॥

११२

मैनासुन्दरी और श्रीपाल का बात चीत करना ॥

चाल—(कव्वाली) कोई चातुर ऐसी सखी ना मिली ॥

मैना०—स्वामी यह तो मुझे समझादो भला ।
कब आवोगे बेगी बतादो ज़रा ।
मैंने जबसे है जानेका नाम सुना ।
मेरे दिलको तो आता सबरही नहीं ॥ १ ॥
श्रीपाल—प्यारी ऐसी न मनमे अधीर बनो ।
टुक ध्यान करो मन धीर धरो ॥
आऊ बारा बरस दिन आठमको ।
देखो मेरे बचन कभी टरही नहीं ॥ २ ॥

मैना०—पलचारा रहूं बिन दर्श पिया ।
भर आवे हिया मेरा तड़पे जिया ॥
कैसे बारा बरस मैं रहूंगी पिया ।
मेरे मरनेका क्या तुझे डर ही नहीं ॥ ३ ॥
श्रीपाल—प्यारी मोहसे भव भवमें दुक्ख सहे ।
बिन मोह हते नहीं ज्ञान लहे ॥
मत मोह करे मत दुक्ख भरे ।
मोह करनेका अच्छा समर ही नहीं ॥ ४ ॥
मैना०—प्यारे बात हंसी की न समझो इसे ।
जरा देकरके कान अब सुनलो इसे ॥
रहो घरमें या लेजाओ संग आपने ।
पिया बिन मेरा होगा गुज़र ही नहीं ॥ ५ ॥

११३

श्रीपालका जवाब ॥

चाल—[गजल कवाली] इलाजे दर्द दिल तुमसे मसीहा हो नहीं सकता ॥

तुझे लेजाऊं संग अपने सो यह तो हो नहीं सकता ॥
बिना उद्यम रहूं घरमें सो यह भी हो नहीं सकता ॥ १ ॥
मुझे जानेदे मतरोके खुशीसे दे मुझे आज्ञा ॥
तुझे नाराज़ कर जाऊं सो यह भी हो नहीं सकता ॥ २ ॥
बिना उद्यमके निसफल है जनम इंसानका समझो ॥
बिना उद्यम उदय कर्मोंका भी फल हो नहीं सकता ॥ ३ ॥

है सुसती मां गरीबी तंगदस्ती बेतमीज्ञीकी ॥
बिना उद्यम किये धन धान हासिल हो नहीं सकता ॥ ४ ॥
इसी कारण हुवा मशा मेरा परदेश जानेका ।
टलूं अपने इरादेसे सो ऐसा हो नहीं सकता ॥ ५ ॥

११४

मैनासुन्दरी का जवाब ॥
चाल-कहां लेजाऊं दिल दोनों जहां में इसकी मुशकिल है ॥

खुशीसे जाइये बालम तुम्हे जाना मुबारिक हो ।
फेर बारा बरसमें लौटकर आना मुबारिक हो ॥ १ ॥
न भूलो पंच परमेष्टी सदा रखना ध्यान दिलमें ।
व्रत सिधचक्र जिन पूजा मुबाािक हो मुबारिक हो ॥ २ ॥
मिलेंगी आपको परदेशमें लाखों राज कन्या ।
हमें मत भूलना राजा गमन तुमको मुबारिक हो ॥ ३ ॥

११५

श्रीपाल का जवाब ॥
चाल नाटक-अलबेला छैला ऐसा लावोंगे हो रंगीला ॥

अलबेली सुंदर ऐसे ना बोलो हो हठीली ॥
टुक ध्यानकर—कुछ ज्ञानकर ॥ अलबेली० ॥
जिन यज्ञ रचानेवाली अरी सुन सुन सुन ॥
मेरा कष्ट हटानेवाली अरी सुन सुन सुन ॥
कोई नहीं दूपण—सतियों में भूपण ॥
सत मारग दिखानेवाली अरी सुन सुन सुन ॥

मेरी धीर बंधानेवाली अरी सुन सुन सुन ॥
तोहेना जीयासे भुलाऊं परमाणकर-मेरी मानकर। अलबेली०॥

११६

मैनासुन्दरी का जवाब ॥
चाल-इलाजे दर्द दिल० ॥

कुसंगत से बदी नेकोंके दिलमें आही जाती है ॥
बदोंके पास रहनेसे शरारत आही जाती है ॥ १ ॥
बरस सोलाकी ऊपर नारसे बातें नही करना ।
जब आंखें चार होती हैं मुहब्बत आही जाती है ॥ २ ॥
बिना दिये कुछ नहीं लेना अदत्तादान चोरी है ।
पराया देखकर धनको तबीयत आही जाती है ॥ ३ ॥
दूत कपटी दग़ाबाजों से भी रहना संभल करके ।
पिया परदेश में जाकरके दुर्मत आही जाती है ॥ ४ ॥
न आए तुम जो वादेपे तो मैं लेलूंगी जिन दिक्षा ।
झूंठ वादे के होने से कदूरत आही जाती है ॥ ५ ॥

११७

श्रीपालका जवाब देना और उसी वक्त रातको रवाना होने को तय्यार होना ॥
चाल (कान्हडा)-घर जानेदे छोडदे मोरी वय्यां ॥

हट जाने दे छोड़ दे ऐसी बतियां ॥
प्रेम धरत तोसे बिनती करत हूं ॥
बार बार समझय्यां ॥ हट० ॥ १ ॥

कोटी भट ना वाके ठरेंगे ॥
टर जावें निश दिन पतियां ॥ हट० ॥ २ ॥
बारा बरस में आन मिलूंगा ॥
अष्टमकी प्यारी रतियां ॥ हट० ॥ ३ ॥

११८

श्रीपालको जाते हुवे देखकर मैनासुन्दरी का दिल भर आना और मूंहपर अचल डालकर रोना और कहना ॥

चाल नाटक-(सिंध भैरवीं) हाय सय्यां पडू में तोरे पय्यां सतायो काहे मोहीका ॥

प्यारे सय्यां पडूं मैं तोरे पय्यां न जावो प्यारे कहीं को ॥
पिया प्यारे साजनपे जाऊं वारी-हां हां हां हां हां ॥
कहीं जानेकी प्यारे क्यों बिचारी ॥
बिचारी मोरे सय्यां-क्यों धारी मन सय्यां ॥
पलपलयां तलमलयां-बेकलयां-होरहियां ॥ प्यारे० ॥
प्यारे सांवरया मैं तो जाने न दूंगी हां ॥
मोहे काहे सताए-मोहे काहे जराए ॥
जी जलाए-कलपाए-दुख दिखाए-तरसाए ॥ प्यारे० ॥

११९

श्रीपाल का जवाब ॥

चाल—इलाजे दर्द दिल०

समझमें कुछ नहीं आता तू क्यों वेजार होती है ॥

१ शब्द ।

डालकर मूहपे अंचल किसलिये बेज़ार रोती है ॥ १ ॥
खुशीसे पहिले दी आज्ञा मुझे परदेश जानेकी ॥
अभी क्या होगया प्यारी जो यूं बेज़ार रोती है ॥ २
बतादो साफ तुम हमको असल जो बात है मनकी ।
तेरे रोने से अब तबियत मेरी बेज़ार होती है ॥ ३ ॥

१२०

श्रीपाल व मैनासुन्दरी के सवाल व जवाब॥

चाल--(नाटक) जीया तरसे बदरिया बरसे सखीरी दिन कैसे कटेंगे बहारके

मैनासुन्दरी-

जीया तरसे बदरिया बरसे हमारे दिन कैसे कटेंगे बहार के ॥
कैसे पी बिन रहूंगी जीया मारके ॥ जीया० टेक ॥
नीर बरसेगा व कड़केंगी बिजिलियां घनमें ॥
आप बिन कैसे अकेली मैं रहूंगी बनमें ॥
संग लेचलिये मुझे वरना समझलो मनमें ॥
मैं नहीं जींती मिलूं प्राण तजूंगी छिनमें ॥
तुम्ही सोचो ज़रा तो बिचारके ॥ जीया० ॥ १ ॥

१२१

श्रीपाल—

हित करले सुमत हीये धरले पियारी दिन नीके कटेंगे बहारके ॥
शील संजमको रखियो संभारके ॥ हित० (टेक)
वन पहाड़ों में कहीं दरियामें चलना होगा ॥
भूख अरु प्यास गरम शीतका सहना होगा ॥

भूमिमें सोना बनोबासमें रहना होगा ॥
शशी बदनी कहो कैसे तेरा चलना होगा ॥
ज़रा देखो तो मनमें विचारके ॥ हित० ॥ २ ॥

१२२

मैनासुन्दरी—

भूख और प्यासकी तकलीफ सहन करलूंगी ॥
बनमें दरियामें पहाड़ोंमें गमन करलूंगी ॥
भूमि सोनेको मिलेगी तो वहीं पड़लूंगी ॥
अपने रहनेका पिया आप जतन करलूंगी ॥
तेरी सेवा करूंगी चितधारके ॥ जीया० ॥ ३ ॥

१२३

श्रीपाल—

प्यारी बैठी रहो घरमें बखुशी राज करो ॥
धनका सुख भोगो यहां धर्मका कुछ काज करो ॥
सातसौ बीर हैं सेवा में अटल राज करो ॥
मैं बरस बारामें आजाऊंगा तुम राज करो ॥
हट कीजे न मनको बिगार के ॥ हित० ॥ ४ ॥

१२४

मैनासुन्दरी—

इस तेरे राजको और पाटको सब आग लगे ॥
फ़ौजको माल ख़ज़ानेको तेरे आग लगे ॥

आप बिन कौन रहे घरमें यह घर आग लगे ॥
वर्ष बारा किसे इक छिनमें विरह आग लगे ॥
किसे देते हो धोका संवारके ॥ जीया० ॥ ५ ॥

१२५

श्रीपाल—

मात को छोड़ तेरे संग करूंगा जो गमन ॥
किस तरह दुनियां में दिखलाऊंगा मूंह गुंचेदहन ॥
बीच राजों के जो बैठूंगा तो आवेंगी लजन ॥
लोग दुनियां में हंसैंगे यह सुनावेंगे बचन ॥
गया माताको छोड़ संग नारके ॥ हित० ॥ ६ ॥

१२६

मैनासुन्दरी—

राम बनोवास गए संग सियाको लेकर ॥
मात कोशल्याने भेजी उसे आज्ञा देकर ॥
मैं भी आजाती हूं बस सासकी आज्ञा लेकर ॥
उज्र अब क्या है चलो संगमें मुझको लेकर ॥
कहूं चरणों में मस्तक पसारके ॥ जीया० ॥ ७ ॥

१२७

श्रीपाल—

हम अगर दोनों गए मात मरेगी रो रो ॥
हूंगा बदनाम बिगड़ जाएगा मेरा पर भो ॥

संग लेजानेकी अब बात मेरेसे न कहो ॥
मानले कहना मेरा, प्यारी न पत खो ॥
बस मैं जाता हूं दोनोको छांडके ॥ ८ ॥
(श्रीपालका रवाना होना)

१२८

मैनासुन्दरी का श्रीपालको जातेहुवे देखकर उसका दामन पकडना और रोकर कहना ॥

चाल नाटक—(खमा) करगयोरी-झूठा वादा पिया मोसे ॥

करचलेजी–कैसा धोका पिया मोसे कर चलेजी ॥ टेक ॥
चलूंगी संगमें तुझको जरा न दुख दूंगी ॥
करूंगी सेवा तुम्हारी बनों में सुख दूंगी ॥
हवाले सासके घरबार फौजोमाल करूं ॥
उसे मनाल्लूंगी मैं जा चरणमें सीस धरूं ॥
मेरे गुलशनकी कलियां कतर चलेजी । कैसा० । १ ॥
क्या साम दाम मुझे भेद भय दिखाते हो ॥
बनोंका कष्ट दिखा क्या मुझे डराते हो ॥
न एक मानूंगी मैं चाहे आप लाख कहें
चलूंगी संगमें बातोंमें क्या बनाते हो ॥
मुझे विरहन बनाके किधर चलेजी । कैसा० ॥ २ ॥

खैर मरजी तुम्हारी है मैं अपने आप सहलुंगी ॥ १ ॥
जहां जी चाहे वहां जाओ मैं नहीं रोकूं मगर सुनलो ।
न आए तुम जो आठों को तो मै जिन दिक्षा लेलुंगी ॥ २ ॥

१३३

श्रीपालका जवाब ॥
चाल—इलाजे दर्द दिल•

निभाऊंगा वचन अपने न करतू सोच कुछ दिलमें ।
आन सिधचक्र की मुझको इसी दिन लौट आऊंगा ॥ १ ॥
अगर तू दिक्षा ले लेगी मेरी प्यारी यकीं समझो ।
कि पहले तेरी दिक्षा से मैं अपने जी से जाऊंगा ॥ १ ॥

मैना०—(वर्तालाप) अय प्राणनाथ दासी की सविनय प्रार्थना है कि आप अपने संग कुछ फ़ौज (रक्षक) अवश्य लेजावें। और इस बातको निश्चय पूर्वक समझें कि यदि बारा बरस में अष्टमी के दिन आपका शुभागमन नहीं होगा तो आपकी यह अभाग्य दासी अवश्य जिन दिक्षा ले लेगी।

१३४

श्रीपाल का मैनासुन्दरी को तसल्ली देना और बारा बरस में अष्टमी के दिन आने का वादा करना ॥
(चाल नाटक चलत) बरसे यहां कौन खुदा के लिये लाया मुझको

बस अकेला कहीं परदेश को मैं जाऊंगा ॥
अपनी किसमत को फ़कत संग में लेजाऊंगा ॥ १ ॥
रंज जाने का मेरे कुछ भी न करना मनमें ।

यहांपे खुश रहना व जिन धर्मको रखना मनमें ॥ २ ॥
इन भुजाओंकी क़सम खाके यह कहता हू मैं ॥
लीक पत्थरकी समझ लेना जो कहता हूं मैं ॥ ३ ॥
बरस बारामें दिन आठोंको मैं आजाऊंगा ।
गर न आया तो उसी दिन कहीं मरजाऊंगा ॥ ४ ॥
मैं तो बस डाल कमंद यहां से अभी जाताहूं ।
तुम्हें भगवान भरोसेपे छोड़ जाता हूं ॥ ५ ॥

१३५

श्रीपालका भगवानको याद करना और महलसे कमन्द डालकर उतरना और अकेला परदेश में चला जाना ॥

चाल—(नाटक) मेरी मानो जी मानो क्या डर है ॥

प्रभु चरणों में तेरे यह सर है·तुझ भरोसेपे मेरा सफ़र है ॥
हां सबको छोड़ जाता हूं किसमतको लिये जाता हूं ॥
आगे जा-बल दिखा-काम बनाके जल्दी आ ॥
देखूं क़िसमत में क्या क्या असर है ॥ तुम भरोसे० ॥
(कमन्द डालकर चला जाना और परदा गिरना)

इति न्यामतसिंह रचित मैनासुन्दरी नाटक का दूसराऐक्ट समाप्तम्

मैना सुन्दरी नाटक

तीसरा ऐक्ट

श्रीपाल का विद्या सिद्ध करना, धवल सेठ से मिलना, चोरों को जीतना, सहस्र कूट चैत्यालय को खोलना, रैणमंजूषा को ब्याहना, धवल सेठ का रैणमंजूषा पर आसक्त होना और श्रीपाल को दरिया में डालना।

श्रीजिनेन्द्रायनमः

सीन १६

जंगलका परदा

१३६

श्रीपालका वत्सनगर में पहोंचना ॥ नन्दन वन और चम्पक वन की सैर करना एक वृक्ष के नीचे एक वीर को वस्त्राभूषन पहने हुये मन्त्र जपते हुये और मन्त्र सिद्ध न होने से क्लेश करते हुये देखना और श्रीपालका वीरसे हाल पूछना (वार्तालाप)

श्री०--अय मित्र यह कैसा मंत्र जप रहे हो और आपका चित्त क्यों चपल हो रहा है ॥

वीर--(चौंककर और दोनों हाथ जोड़कर) मेरे गुरुने एक मंत्र दिया है ॥ जिसको मैंने जपना प्रारम्भ किया है परंतु न मेरा मन स्थिर होता है न यह मंत्र सिद्ध होता है आप सहनशील हैं इस मंत्रको आराधें और कृपा करके मेरे इस कामको साधें ॥

श्री०—अय मित्र हम रस्ते चलते मुसाफिर हैं। विद्या साधन की क्रिया को क्या जानें ॥

वीर—(हाथ जोड़कर) अय स्वामी आप मुझको अभयदान दें एकवार इस मत्रको आराधें आपकी कृपा से जरूर यह विद्या मुझको सिद्ध होगी ॥

श्री०—(मंत्र जप कर और विद्या सिद्ध करके) अय मित्र यह लो आपकी विद्या सिद्ध होगई ॥

वीर—(श्रीपालके पाओं पकड़ कर) अय मित्र आपको धन्य है आप मुझे आज्ञा दें मैं घरको जाता हूं ॥ इन सब विद्याओं के आप मालिक हैं मैं आपके चर्णों में सर झुकाता हूं ॥

श्री०—अय बीर मैंने रस्ते चलते अपने दिलका इमातहान कियाहै, आप अपनी विद्या संभालें इनमें मेरा हक्कयाहै

वीर—(सब विद्या लेकर) अय स्वामी मैं आपका सेवक हूं आपने मेरा बड़ा उपकार कियाहै जो बड़ी बड़ी विद्या हैं वह आप रक्खें और जो विद्या आप मेरे योग्य समझें वह अपने हाथ से मुझे दें ॥

श्री०-अय मित्र यह सब विद्या आपकी हैं इनमें मेरा कोई भी हक्क नहीं है ॥

वीर-(हाथ जोड़कर) आप यह दो विद्या एक शत्रु निवारण और दूसरी जल तारणी तो जरूरलें और आप कुछ दिन यहां आराम करें ॥

श्रीजिनेन्द्रायनमः

सीन १६

जंगलका परदा

श्रीपालका वत्सनगर में पहोंचना ॥ नन्दन वन और चम्पक वन की सैर करना एक वृक्ष के नीचे एक वीर को वस्त्राभूषन पहने हुये मत्र जपते हुये और मत्र सिद्ध न होने से क्लेश करते हुये देखना और श्रीपालका वीरसे हाल पूछना (वार्तालाप)

श्री०--अय मित्र यह कैसा मंत्र जप रहे हो और आपका चित्त क्यों चपल हो रहा है ॥

वीर--(चौंककर और दोनों हाथ जोड़कर) मेरे गुरुने एक मंत्र दिया है ॥ जिसको मैंने जपना प्रारम्भ किया है परंतु न मेरा मन स्थिर होता है न यह मंत्र सिद्ध होता है आप सहनशील हैं इस मंत्रको आराधें और कृपा करके मेरे इस कामको साधें ॥

श्री०—अय मित्र हम रस्ते चलते मुसाफिर हैं। विद्या साधन की क्रिया को क्या जानें ॥

वीर—(हाथ जोड़कर) अय स्वामी आप मुझको अभयदान दें एकबार इस मन्त्रको आराधें आपकी कृपा से जरूर यह विद्या मुझको सिद्ध होगी ॥

श्री०—(मंत्र जप कर और विद्या सिद्ध करके) अय मित्र यह लो आपकी विद्या सिद्ध होगई ॥

वीर—(श्रीपालके पाओं पकड़ कर) अय मित्र आपको धन्य है आप मुझे आज्ञा दें मैं घरको जाता हूं ॥ इन सब विद्याओं के आप मालिक हैं मैं आपके चर्णों में सर झुकाता हूं ॥

श्री०—अय वीर मैंने रस्ते चलते अपने दिलका इमातहान कियाहै, आप अपनी विद्या संभालें इनमें मेरा हक्कक्याहै

वीर—(सब विद्या लेकर) अय स्वामी मैं आपका सेवक हूं आपने मेरा बड़ा उपकार कियाहै जो बड़ी बड़ी विद्या हैं वह आप रक्खें और जो विद्या आप मेरे योग्य समझें वह अपने हाथ से मुझे दें ॥

श्री०-अय मित्र यह सब विद्या आपकी हैं इनमें मेरा कोई भी हक्क नहीं है ॥

वीर-(हाथ जोड़कर) आप यह दो विद्या एक शत्रु निवारण और दूसरी जल तारणी तो जरूरलें और आप कुछ दिन यहां आराम करें ॥

श्री०—(दोनों विद्या लेकर) अच्छा आपकी मरजी किन्तु हे मित्र मैं यहां ठैर नहीं सकता मुझे आगे जाना है॥ (रवाना होना)

सीन १७

बाग़का परदा ॥

१३७

नोट-कोशम्भीपुर नगर में राजा रथवाहन राज करता था और उस नगर में धवल सेठ नामी एक साहूकार था, वह साहूकार पानसौ जहाज भरकर बारा वर्ष का सामान और आठ हजार फौज लेकर व्योपार के लिये प्रदेश को रवाना हुवा। जब भृगुकच्छपुर पट्टन के करीब पहोंचा तो उसके जहाज एक दरह में अटक गए, सो, धवल सेठ को एक वीर ने बतलाया कि किसी शुभलक्षण पुरुष को बली देने से यह जहाज चलेंगे॥ धवल सेठ भेट लेकर भृगुकच्छपुर पट्टनके राजा के पास गया और एक पुरुष बलीके वास्ते मांगा। राजा ने सिपाहियों को हुक्म दिया कि कोई पुरुष तलाश करके सेठ जी को दे दो॥

१३८

श्रीपाल का भृगुकच्छपुर पट्टन में पहोंचना और एक उपवन में एक वृक्ष के नीचे सोजाना सेठ जीके महाजन और सिपाहियोंका शहर और वन में किसी योग्य पुरुषकी तलाश करते हुवे नजर आना और उसी वन में पहोंचना जहां श्रीपाल सोया हुआ है। और सबका आपस में बातें करना ॥ (वार्तालाप)

महाजन (आपस में) ओहो यह तो भला मनुष्य है इसी से काम सरेगा ॥

सिंपाही—फिर इसको उठाएगा कौन यह तो किसीसे भी नहीं पकड़ा जाएगा ॥

महाजन—(श्रीपालकी तरफ जो इनकी बातें सुनकर नींद से जाग उठा था देखकर और हाथ जोड़कर) हे महाराज हम आपकी सेवा करनेको आएहैं आप को देखकर हमारे हृदय में सनेह उत्पन्न होता है हे स्वामी हमसे यह पाप नहीं हो सकता ॥

श्रीपाल—अय महाजनों कैसा पाप । तुम्हारा क्या मतलबहै हमको साफ साफ समझाओ और तुम अपने दिल में मत डरो ॥

महाजन—हे महाराज एक धवल सेठ नामी साहुकार है। उसके सागरमें जहाज अटक गए है एक योग्य पुरुषका बलीदान देनेका बिचार है सब जगह तलाश किया कोई योग्य पुरुष नहीं मिला। अगर खाली जाते हैं तो सेठजी हमको मरवा देगा या जोधा भेज कर हमको पकड़ लेगा और दुख देगा सो आपकी शर्ण आए है ॥

१३९

श्रीपाल का जवाब

चाल—(नाटक) मोरीमानों जी मानों क्या डर है ॥

धारो धारोजी धीरज क्या डरहै। मोहे मरनेका नहीं खतर है ॥

चाहो तो संग जाता हूं—भ्रम सबका मिटा आता हूं ॥
वहां पे जा—चल दिला—दुख मिटा के जल्दी आ ॥
चलदूंगा आगे सफ़र है—कहदो जो कुछ कि तुमको फिक्र है ॥

१४०

महाजनों का जवाब ॥
चाल—पनघट पर हो रही भीर सीसपर घड़ा धरे पनिहारी ॥

हम सबपर पड़रही भीड़ हिये में दया धरो बलधारी ॥ टेक ॥
टुक उठकर हमसंग चलिये, नाथ हम सबका कष्ट निवारीजी॥१॥
तुम सब जन पर उपकारी, सेठ तुम निरख परख हित धारोजी॥२॥

१४१

श्रीपाल का खड़ा होना और महाजनों से कहना और उनके साथ रवाना होना ॥
चाल—इलाजे दर्द दिल० ।

मेरी किस्मत में क्या लिक्खा है इसको आज़माउंगा ॥
तुम्हारे पे पड़ा जो दुख उसे जाकर हटाउंगा ॥ १ ॥
किसी दिन तो था कोटी भटका बल मेरी भुजाओं में ॥
घटा है या बढ़ा है आज इसको आज़माउंगा ॥ २ ॥
अपूरब बात यह मुझको मिली है आज दुनिया में ॥
शुबा मैं अपनी आंखों से देख जीका मिटाउंगा ॥ ३ ॥
करम से आज सन्मुख हो लड़ूंगा जाके दरिया पे ॥
चलो कुछ रंजोग़म दिलमें नहीं अपने मैं लाउंगा ॥ ४ ॥
(सबका रवाना होना)

सीन १८

सेठजी के डेरेका परदा

१४२।

श्रीपाल और सब महाजनों का धवल सेठके पास पहोंचना और महाजनों का सेठजी से कहना ॥ (वार्तालाप)

महाजन–सेठजी मनका सोच दूर करो देखो आपके भाग्य से यह कैसा लक्षणवंत पुरुष मिलगया है ॥

सेठजी–(श्रीपालकी तरफ़ देखकर और खुश होकर) बहुत अच्छा चलो दरियाके पास चलो बाजे बजवाओ मंगलाचरण गावो अनेक प्रकार का दान करवाओ इस पुरुषको स्नान कराओ अंगमे चन्दन लगाओ बस्त्राभूपन पहनाओ जलदेवी की पूजा कराओ और बली चढ़ाओ ॥

(सबका चला जाना)

सीन १९

दरियाका परदा

१४३

श्रीपाल को घेरे हुवे सबका दरियावे आना और बाजोंका बजना श्रीपालको वस्त्राभूषण पहनाकर सेठजीके सामने लाना ॥ एक वीर का श्रीपाल को बलीदान देनेके लिये तलवार खेंचना और श्रीपाल का सेठसे कहना ॥

चाल—(इन्द्रसभा) सरेलाल देव इस तरफ जल्द आ ॥

सुनो सेठजी कर इधर को निगाह ॥
कहो तो है क्या मुद्दआ आपका ॥१॥
है मंशा कि प्रोहण चले आपका ॥
या है मुदआ बस मेरे क़त्लका ॥ २ ॥

१४४

सेठका जवाब ॥

चाल (समाध)-जीवो राजा दशरथ के पुत्र चार ॥

देखो देखो जी सुभट सुन्दर कुमार ॥-टेक ॥
ना तुमसे कछु वैर हमारा ॥ ना तुम मारनका विचार ॥ १ ॥
निकलें प्रोहण पड़े भंवरमें ॥ कारज है यह ही हमार ॥ २ ॥

१४५

श्रीपालका जवाब ॥

चाल-(नाटक) किसमत स्वपर लाती आफत ॥

मूरख बन्दे हियेके अंधे ध्यान हियेमें धर कर देख ॥
जीव हतेसे कहो तो कैसे चलेंगे प्रोहण हित कर देख ॥
कितने तेरे वीर सुरमा जोधा क्षत्री गिण कर देख ॥
जो मैं अपना बल परकाशूं छिनमें मारूं लड़ कर देख ॥
तेरी किसने मत हरी तेरी मौत आ लगी ॥
मैं कोटीभट बली ॥ देता मुझे बली ॥
कुछ मनमें कर शरम ॥ अय पापी बेधरम ॥
ले शर्ण जिन धरम ॥ तज पापका भरम ॥ धरकर० ॥

१४६

सेठजीका हाथ जोड़कर जवाब देना ॥ (दोहा)

दया जो हमपर कीजिये, तुमहो गुण गम्भीर ॥
हाथ जोड़ बिनती करूं, मुआफ करो तकसीर ॥

१४७

श्रीपालका जवाब देना और सेठजीको धमकाना ॥

चाल—(नाटक) ऐसे तुमसे मेरे गैरे मैने लाखों देखे भाले ॥

तू है कैसा पाजी लोभी पापी नरको जाने वाला ।
परका जीवन हरनेवाला ॥ मनको पापी करने वाला ॥
पर धन ऊपर मरनेवाला ॥ धर्म उठाकर धरने वाला । कैसा० ।
तुझसे ऐसे पापी लालच में जो आते हैं जो आते हैं ॥

सीन १९

दरियाका परदा

१४३

श्रीपाल को घेरे हुवे सबका दरियापै आना और बाजोंका बजना श्रीपालको वस्त्राभूषण पहनाकर सेठजीके सामने लाना ॥ एक वीर का श्रीपाल को बलीदान देनेके लिये तलवार खैंचना और श्रीपाल का सेठसे कहना ॥

चाल—(इन्द्रसभा) अरेलाल देव इस तरफ जल्द आ ॥

सुनो सेठजी कर इधर को निगाह ॥
कहो तो है क्या मुद्आ आपका ॥१॥
है मंशा कि प्रोहण चले आपका ॥
या है मुद्आ बस मेरे क़त्लका ॥ २ ॥

१४४

सेठका जवाब ॥

चाल (समाच)-जीवो राजा दशरथ के पुत्र चार ॥

देखो देखो जी सुभट सुन्दर कुमार ॥ टेक ॥
ना तुमसे कछु बैर हमारा ॥ ना तुम मारनका विचार ॥ १ ॥
निकलें प्रोहण पड़े भंवरमें ॥ कारज है यह ही हमार ॥ २ ॥

पावों से उभार धरूं--सबको यहांसे पार करूं ।
ओ अभिमानी-है हैरानी-बलदेने की मनमें ठानी ॥
थी नादानी-आगे ऐसी मत करो नादान ॥
अब तन मन धनसे जिनवरके गुण गावो सदा—
गुण गावो सदा ॥ भरम० ॥
(जहाजका चलना और सबका जय जयकार बोलना)

१५०

नोट-मंत्री ने धवल सेठ से कहा कि अगर श्रीपाल को अपने साथ ले चलें तो अच्छा है यह कोई पुन्यवान पुरुष है रास्ते में इससे अनेक प्रकार की सहायता मिलेगी सेठजीने इस राय को पसन्द किया और जहाज को वापिस श्रीपाल के पास लाये और उससे साथ चलने के लिये अर्दास करते हुये ॥

सेठजी-हे स्वामी आपने हमारे प्राण बचाये है आप महा परोपकारी हैं आप हमारे साथ चलें और जो चाहें सो लें

श्रीपाल-हे सेठ अगर तू दसवां हिस्सा मालका देवे तो मैं तेरे साथ चलूं ॥

सेठजी-हे स्वामी हमारे से जो बनसके सो मांग लो ॥

श्रीपाल-सुनो सेठ दसवें हिस्से से कम नहीं लेंगे ॥

सेठजी-अच्छा कंवरजी आपको दसवां हिस्सा ही देंगे आप हमारे संग चलें ॥ हे कंवरजी मेरे कोई पुत्र नहीं है और मैं आपको अपना धर्मका पुत्र बनाता हूं आप मेरे सब मालके मालिक हैं और मैं

वह मरके सीधा नरकों माहीं जाते हैं वह जाते हैं ॥
जावो जावो यहांसे जाओ, मतना अपना मूंह दिखलाओ।
पत्थर सेती सर टकराओ, जैसा करना वैसा पाओ ॥
तुझे मारूं इसी दम, अभी भेजूं द्वारे जम ॥
महा पापी बेशरम ॥ तू है लोभी नर अधम ॥
अरे मूरख पाजी दुष्टी पापी परकी हिंसा करने वाला ॥कैसा०॥

१४८

धवल सेठ और सब महाजनोंका अर्दास करना ॥

चाल—अपनी हमें भक्ती का कुछ दीजो दान ॥

अपनी हमें करुणाका अब दीजो दान ॥ टेक ॥
तू दयावान हितकारी । तू शीलवंत गुणधारी ॥
बचावो हमरे प्राण ॥ अपनी० ॥ १ ॥
अब मनका रोस निवारो । टुक करुणा चितमें धारो ॥
तू कोटीभट बलवान ॥ अपनी० ॥ २ ॥
तू दुक्ख मिटावनहारा । अब करो सभी निस्तारा ॥
शरणली तुमरी आन ॥ अपनी० ॥ ३ ॥

१४९

श्रीपाल का दया करना और जहाजपर चढ़नेका हुकम देना और अपने पावों से जहाज चलाना और सबका जय जयकार बोलना ॥

चाल नाटक-(मैय्यां मंजीरन) परम पिताकी प्रीतिसे यश गावो सदा ॥

भरम हटाके वेगीसे सब आवो जरा-सब आवो जरा ॥
भगवत विचार करूं-मोहण उद्धार करूं ॥

हाल देखकर हसना और महाजनों का श्रीपाल के पास आना और अर्दास करना (दोहा) ॥

सुना कंवर जी सेठ को, बांधले गए चोर ॥
जाय छुड़ाओ बेगही, जो हो तो बल जोर ॥

१५३

श्रीपाल का जवाब देना और लड़ाई के लिये रवाना होना ॥
चाल—(नाटक) बहादुर जगी सारे नगी मियान करो शमशीर ॥

अय तजारो साहूकारो जरा धरो मन धीर ॥
अबही चलकर सन्मुख लड़कर दूर करूं सब पीर ॥
चोर लुटेरे, भील हकेरे क्या गूजर क्या हीर ॥
देव अरी गण भूत परी जिन डारूं दममें चीर ॥ अय० ॥

१५४

श्रीपाल का चोरों को जीतना और धवल सेठ को छुड़ाना और चोरों को बांधकर लाना और सेठजी से कहना ॥ (वार्तालाप)

श्रीपाल—कहो पिताजी इन चोरों को मारूं या छोडूं ॥
सेठजी—अय मंत्रियो आपकी क्या राय है ।
१ मंत्री—इनको क़त्ल करवादो ॥
२ मंत्री—अजी आग में जलादो ॥
३ मंत्री—नहीं नहीं हाथ पाओं काट डालो ॥
४ मंत्री—अजी बस सबको समुद्र में डुबादो ॥
५ मंत्री—नहीं नहीं इनकी खाल मे भुस भरवादो ॥
सेठजी—हां इनको अनेक दुख देकर मार डालो ॥

आपसे कभी दग़ा नहीं करूंगा आपसे प्रण करता हूं आप अंगीकार करें।

श्रीपाल-अच्छा पिताजी चलो मैं अंगीकार करता हूं ॥

(श्रीपाल और सबका जहाज़ पर सवार होना और रवाना होजाना ॥ परदा गिरना)

सीन २०

दरियाका परदा

१५१

रास्ते में एक लाख चोरोंका आना और मल्लाहोंका पुकारना ॥ सब लोगों का हाहाकार मचाना ॥ (वार्तालाप)

मल्लाह-चोर आवत हैं सब खबरदार होजाओ ॥

महाजन-(रोते हुवे) हाए कौन बिपत आई कहां भाग कर जावें और कैसे प्राण बचावें ॥ हायरे ॥

धवल सेठ-मत घबराओ फ़ौरन फ़ौज तय्यार करो और लड़ाई का सामान करो ॥

१५२

सब फ़ौजका तय्यार होकर आना और धवल सेठका फौज लेकर लड़ाई को जाना। और लड़ाई करना और चोरोंसे हारकर वापिस भागना और चोरों का धवल सेठको बांधकर ले जाना और महाजनों का सिर पटकना। श्रीपाल का बध

१५८

चोरों का श्रीपालकी महिमा वर्णन करना और बहुतसा माल देकर चला जाना और-जहाजों का रवाना होना ॥

चाल—हुआ सुत राम जशरथ के बहादर हो तो ऐसा हो ॥

मिले श्रीपाल कोटीभट बहादुर हो तो ऐसा हो ॥
जीत लिया लाख चोरो को दिलावर हो तो ऐसा हो ॥ १ ॥
दया दिलमें विचारी है खता सारी मुआफ करदी ।
बचादी जान सारोंकी सखी गर हो तो ऐसा हो ॥ २ ॥
नज़रहै आपकी यह माल सो मंजूर कर लीजे ।
दयाधारी तू बलधारी ताजवर हो तो ऐसा हो ॥ ३ ॥

सीन २१

हंस द्वीपका परदा

१५९

नोट—हंसद्वीप में राजा कनककेतु राज करता था और उसकी रानी का नाम कंचनमाला था ॥ चित्र विचित्र दो लड़के व सती रैनमंजूषा एक पुत्री थी ॥ एक दिन राजाने श्रीमुनि महाराजसे पूछा कि मेरी पुत्री रैनमंजूषा का कौन पति होगा मुनि महाराजने जवाब दिया कि जो कोई पुरुष सहस्रकूट चैत्यालय के वज्रमई किवाड़ खोलेगा वह तेरी पुत्री का वर होगा । राजाने सहस्रकूट चैत्यालय पर पहरा लगाया और हुकुम दिया कि जिस वक्त कोई पुरुष इस मंदिर के किवाड़ खोलें फौरन खबर दीजावे ॥

१५५

श्रीपाल का दया करना और कहना ॥

चाल—पहलू में यार है मुझे उसकी खबर नहीं ॥

दुनिया में कोई जीव सताना नहीं अच्छा ।
सुनिये पिताजी ज़ुल्म दिखाना नहीं अच्छा ॥ १ ॥
हृदय में अपने जीव दया को बिचारिये ।
देखो किसी का खून बहाना नहीं अच्छा ॥ २ ॥
अपने किये का आप नतीजा उठाएंगे ।
करुणा का भाव दिलसे हटाना नहीं अच्छा ॥ ३ ॥
है जगमें दया सार दया मूल धरम का ।
भूले से दिलको संग बनाना नहीं अच्छा ॥ ४ ॥

१५६

सेठजीका जवाब (वार्तालाप)

बहुत अच्छा कंवरजी जो आपकी मरज़ी हो सो कीजिये ॥

१५७

श्रीपाल का चोरों को छोडना और चोरों से कहेना (वार्तालाप)

अय मित्रो तुमको जो दुख हुवा इसमें हमारी कोई नहीं खता, आपने हम पर धावा किया और हमारे पिता को बांधा इस कारण मुझे भी तुमको बांधना पड़ा अब आप मेरा अपराध क्षमा करें क्रोध भाव को तजकर समता भाव धारण करें और हमारे मित्र बनें ।

दरवान—महाराज इसके बज्रमई किवाड़ हैं सो इसको कोई खोल नहीं सकता है और कोई बात नहीं है ॥

श्रीपाल—अच्छा इसको हम खोलेंगे ॥

दरवान—अजी महाराज आप जैसे अनेक आ चुके ॥

श्रीपाल—अच्छा तुम सब हट जाओ मैं भी अपनी ताक़त आजमाऊंगा ॥

दरवान—महाराज यह बज्रमई किवाड़ कौन खोल सकता है आप अपना रास्ता लें काहे का व्यर्थ परिश्रम करते हो॥

१६२

श्रीपाल का जवाब देना ॥

चाल—(गजल) यह केसे बाल बिखरे हैं यहक्या सूरत बनी गमकी ॥

बिना खोले किवाड़ इसके नहीं मैं यहां से जाऊंगा ।
भुजा अपनी का बल मैं आज यहां तुमको दिखाऊंगा ॥ १ ॥
प्रभूका नाम ले करके हाथ जिसदम लगाऊंगा ।
संग हो बज्र हो कुछ हो तोड़ एकदम बगाऊंगा ॥ २ ॥
समझते क्या हो तुम मुझको है कोटीभट नाम मेरा ।
हटो सारा भरम दिलका तुम्हारा मैं मिटाऊंगा ॥ ३ ॥

१६३

दरवानों का दूर होना और श्रीपाल का दरवाजे के पास आना और सिद्ध मंत्र पढ़कर किवाड़ खोलना और श्रीमन्दिरजी के अंदर जाना और भगवान के दर्शन करना और जयमाल पढ़ना ॥

१६०

इसद्वीपका परदा नजर आना धवल सेठ और श्रीपालके जहाजों का इसद्वीप में पहोंचना और श्रीपालका श्री जैन मन्दिरजी के दर्शन करने को जाने के लिये सेठजीसे आज्ञा मांगना ॥

श्रीपाल-हे पिताजीमैं श्रीजैन मंदिरजीके दर्शन को जाताहूं।

सेठजी-अच्छा पुत्र जाओ जल्दी आजाना।

(श्रीपाल का रवाना होना)

सीन २२

सहस्रकूट चैत्यालय का परदा

१६१

सहस्रकूट चैत्यालयका परदा नजर आना और श्रीपालका मंदिर के दरवाजे पर पहोंचना और किवाड बन्द देखकर दरवानों से हाल पूछना ॥ (वार्तालाप)

श्रीपाल—अय दरबानों यह किसका मंदिर है ॥

दरबान—हे महाराज यह श्री जैन मंदिर है और इसका सहस्रकूट चैत्यालय नाम है ॥

श्रीपाल—यह बन्द क्यों है क्या किसी व्यंतर या देवताने इसको कील दियाहै या किसीने कलंक दियाहै।

जय परम शांति मुद्रा समेत ।
भविजन को निज अनुभूति हेत ।
भवि भागन वश जोगे वशाय ।
तुम धुनि ह्वै सुनि विभ्रम नसाय ॥ २ ॥
तुम गुण चिंतत निज पर विवेक ।
प्रघटे विघटें आपद अनेक ।
तुम जग भूषण दूषण वियुक्त ।
सब महिमा युक्त विकल्प मुक्त ॥ ३ ॥

१६५

राजा कनककेतुका श्रीपालसे मिलना और बात चीत करना ।

राजा०—हे मित्र धन्य है आपका अवतार आप ध्यान देकर मेरी एक बात सुन श्री मुनि महाराज ने मेरे से कहा था कि जो पुरुष इस सहसकूट चैत्यालय के किवाड़ खोलेगा वह मेरी पुत्री रैनमंजूषाका वर होगा आज आप हमारे भागसे यहां पधारे हैं और आपने यह वज्रमई किवाड खोले हैं सो आप कृपा करके हमारे घर चलें और मेरी पुत्री को अंगीकार करें ॥

श्रीपाल—हे महाराज मै इस योग्य नहीं हूं मै एक परदेसी चलता मुसाफिर हूं ॥

राजा०—हे पुत्र मुझ श्री मुनि महाराजके वचन प्रमाण है वह झूठ कदापि नहीं होसकते आप मुझपर कृपा करें ॥

चाल—(बंजारा) टुक हिर्सो हवाको छोड़ मियां क्यों देश विदेश फिरे मारा

जय जय जय ॥

जय चन्द्रानन चन्द्रछबी तुम, चरन चतुर चित ध्यावत हैं।
कर्म चक्र चकचूर चिदातम, चिन्मूरत पद पावत हैं ॥ १ ॥
कलिमल गंजन मन अलिरंजन, मुनिजन तुम गुन गावत हैं
तुमरी ज्ञान चन्द्रिका लोकालोक भेद दर्शावत हैं ॥ २ ॥
तुमरे चन्द बरन तन द्युतिसों, कोटिक सूर लजावत हैं ॥
आतम ज्योत उद्योत मांहि सब, ज्ञेय अनंत दिपावत हैं ॥३॥
बिन इच्छा उपदेश मांहि हित, अहित जगत दरसावत हैं
तुम पदतट सुर नर मुनि झटपट, बिकट बिमोह नशावत हैं ४।

१६४

नोट-श्रीपाल भगवान के दर्शन करके सामयिक करने लगे और दरबानों ने राजा कनककेतु को मंदिर का दरवाजा खुलने की खबर दी ॥

राजा का अपने मंत्री व रानी सहित सहस्रकूट चैत्यालय में आना और भगवान के दर्शन करना ॥

चाल—पद्धरी छन्द ॥

जय जय जय ॥

दोहा—सकल ज्ञेय ज्ञायक तदपि, निजानन्द रसलीन ॥
सो जिनेन्द्र जयवंत नित, अरि रज रहस विहीन ॥
जय वीतराग विज्ञान पूर।
जय मोह तिमिर को हरण सूर।
जय ज्ञान अनंतानंत धार।
दृग सुख बीरज मंडित अपार ॥ १ ॥

जय परम शांति मुद्रा समेत ।
भविजन को निज अनुभूति हेत ।
भवि भागन वश जोगे वशाय ।
तुम धुनि है सुनि विभ्रम नसाय ॥ २ ॥
तुम गुण चिंतत निज पर विवेक ।
प्रघटे विघटें आपद अनेक ।
तुम जग भूषण दूषण वियुक्त ।
सब महिमा युक्त विकल्प मुक्त ॥ ३ ॥

१६५

राजा कनककेतुका श्रीपालसे मिलना और बात चीत करना ।

राजा०—हे मित्र धन्य है आपका अवतार आप ध्यान देकर मेरी एक बात सुन श्री मुनि महाराज ने मेरे से कहा था कि जो पुरुष इस सहसकूट चत्यालय के किवाड़ खोलेगा वह मेरी पुत्री रैनमंजूषाका वर होगा आज आप हमारे भागसे यहां पधारे हैं और आपने यह बज्रमई किवाड़ खोले हैं सो आप कृपा करके हमारे घर चले और मेरी पुत्री को अंगीकार करें ॥

श्रीपाल—हे महाराज मै इस योग्य नहीं हूं मै एक परदेसी चलता मुसाफिर हूं ॥

राजा०—हे पुत्र मुझे श्री मुनि महाराजके बचन प्रमाण है वह झूठ कदापि नहीं होसकते आप मुझपर कृपा करें ॥

चाल—(बजारा) तुक हिलों हराको छोड मियां क्यों देश विदेश फिरे मारा

जय जय जय ॥

जय चन्द्रानन चन्द्रछवी तुम, चरन चतुर चित ध्यावत हैं।
कर्म चक्र चकचूर चिदातम, चिन्मूरत पद पावत हैं ॥ १ ॥
कलिमल गंजन मन अलिरंजन, मुनिजन तुम गुन गावत हैं
तुमरी ज्ञान चन्द्रिका लोकालोक भेद दर्शावत हैं ॥ २ ॥
तुमरे चन्द बरन तन द्युतिसों, कोटिक सूर लजावत हैं ॥
आतम ज्योत उद्योत मांहि सब, ज्ञेय अनंत दिपावत हैं ॥३॥
बिन इच्छा उपदेश मांहि हित, अहित जगत दरसावत हैं
तुम पदतट सुर नर मुनि झटपट, बिकट बिमोह नशावत हैं ४।

१६४

नोट-श्रीपाल भगवान के दर्शन करके सामयिक करने लगे और दरबानों ने राजा कनककेतु को मंदिर का दरवाजा खुलने की खबर दी ॥

राजा का अपने मंत्री व रानी सहित सहस्रकूट चैत्यालय में आना और भगवान के दर्शन करना ॥

चाल—पद्धरी छन्द ॥

जय जय जय ॥

दोहा—सकल ज्ञेय ज्ञायक तदपि, निजानन्द रसलीन ॥
सो जिनेन्द्र जयवंत नित, अरि रज रहस बिहीन ॥
जय वीतराग विज्ञान पूर।
जय मोह तिमिर को हरण सूर ।
जय ज्ञान अनंतानंत धार ।
दृग सुख वीरज मंडित अपार ॥ १ ॥

नहीं अब स्वर्गकी ख्वाहिश तमन्ना है नहीं धनकी ॥
आपके देख के दर्शन सुनो सब कुछ मिला मुझको ॥ ४ ॥
झुकाती हूं मैं सर अपना प्रभू के सार चरणों में ॥
करूं धनबाद तन मनसे पती तुझसा मिला मुझको ॥ ५ ॥

सीन २५

टापूका परदा

१७१

धवल सेठका एक दिन रेनमजूषाका देखना और आसक्त होना और उसके वियोग में बीमार होना और मूरछा आना श्रीपालका सेठको सचेत करना और हाल पूछना ॥ (वार्तालाप)

श्रीपाल—हे पिताजी आज आपका क्या हालहै क्या आपको किसी व्यंतरने सताया या समुद्रकी लहरने घबराया ।

सेठ०—हे पुत्र मुझे बायकी बीमारी है पांच दस वर्ष में कभी कभी यह बीमारी हो जाती है आप न घबरावें आराम करें ॥ (श्रीपालका चला जाना)

सुमतप्र० मंत्री—सेठजी अब आपका क्या हाल है । आपकी बीमारी बढ़ती जातीहै कोई दवाई कारगर नहीं होती जो आप फ़रमावे वही इलाज करें हम सब आपकी आज्ञा पालन करने को तय्यार हैं ॥

१७२

सेठका जवाब ॥

चाल—(गजल) इलाजे दर्द दिल० ॥

हकीमों से इलाज अबतो हमारा हो नहीं सकता ॥
वह अच्छा कर नहीं सकते मैं अच्छा हो नहीं सकता ॥ १ ॥
रैनमंजूषापे मेरा हुआ है आज दिल मायल ।
बिना उसके मिले समझो गुजारा हो नही सकता ॥ २ ॥
करो तदबीर कुछ ऐसी मिले वह नाजनी मुझसे ॥
दवाई लाख तुम करलो सहारा हो नहीं सकता ॥ ३ ॥
अभी मरजाऊंगा समझो शुबा मत मेरे मरनें में ॥
अगर जल्दी से इसका कोई चारा हो नहीं सकता ॥ ४ ॥

१७३

सुमत प्रकाश मन्त्री का जवाब ॥

चाल—इलाजे दर्द दिल०

इलाजे दर्द दिल हमसे तुम्हारा हो नहीं सकता ॥
हम अच्छा कर नहीं सकते तू अच्छा हो नहीं सकता ॥ १ ॥
सती है पाक दामन है वह कोटीभटकी रानी है ॥
किसी को उसके यहां लानेका यारा हो नहीं सकता ॥ २ ॥
जुबांको बन्द कर लीजे इसीमें कुछ भलाई है ॥
जतन चाहे सौ करो मनका विचारा हो नहीं सकता ॥ ३ ॥
खबर इस बातका कानों में गर श्रीपालके पहोंचे ॥
हमारा और तुम्हारा फिर गुजारा हो नहीं सकता ॥ ४ ॥

१७४

धवल सेठका जवाब ॥ (शैर)

मंत्री रहने दे बस तू अपने इस उपदेश को ॥
मैं तो दुशमन जानता हूं ऐसे खैर अंदेश को ॥ १ ॥
कर कोई तदबीर जल्दी उसको दे मुझसे मिला ॥
वरना जा यहां से चला नाहक़ मेरा मत दिल जला ॥ २ ॥

१७५

सुमतप्रकाश मन्त्री का जवाब ॥
चाल—(नाटक) दिले नादां को हम समझाए जाएंगे ॥

तुझे नेकी का रस्ता बताए जाएंगे ॥
मानो न मानो यह मंशा तुम्हारी ॥
न समझाने से हमतो बाज़ आएंगे ॥ तुझे० ॥
वह श्रीपाल की रानी है समझ तो जाहिल ॥
पाक दामन है सती शील में पूरी कामिल ॥
धर्म सुत तूने श्रीपाल बनाया जाहिल ॥
है ग़जब पुत्र बधू पे है तेरा दिल माइल ॥
सारी दुनिया क्या कहेगी तुझे पापी जाहिल ।
न यह पापों के फंदे औ अंधे हटाए जाएगे ॥ तुझे० ॥

१७६

सेठजी का सुमतप्रकाश मन्त्री पर कोप करना और कुमत प्रकाश मन्त्री को बुलाना ॥ (वार्तालाप)

सेठ०—अय नमक हराम मंत्री तुम मेरे सामने से चले

जावो अरे कुमतप्रकाश मंत्री तू कहां है फ़ौरन हाज़िर हो ॥

कुमतप्र०—सेठजी साहिब मैं हाज़िर हूं। किस तरह किया याद, कुछ कीजिये इर्शाद, फ़रमाइये दिलका हाल, दिखाऊं अपना कमाल ॥

सेठ०—हां हमको भी तेरी चालाकी और होशियारी पे भरोसा है मगर मेरे कामको जरा दिलोजान से करियो ऐसा न हो कि नाकामयाबी हो ॥

कुमतप्र०—अजी आप फ़रमाइये आपके इर्शाद करने की देर है वरना उसके पूरा करने में क्या हेर फेर है ॥

सेठ०—मगर मेरा काम ज़रा मुशकिल है ॥

कुमतप्र०बंदा भी आसान करने के क़ाबिल है ॥

सेठ०—देखो कभी डर न जाना ।

१७७

कुमतप्रकाश मन्त्री का जवाब ॥

चाल—(नाटक) मैं आफत का परकाला हूं ॥

मैं आफत का परकाला हूं । मैं किससे डरने वाला हूं ॥
फंदा फांसा हीला झांसा । लाखों हिकमत वाला हूं ॥ टेक ॥
वदमाश वदचलन का पहना है मैंने वाना ॥
गर हूं ठगों का दादा शैतान का हूं नाना ॥

धोका फरेब देकर करके अजब बहाना ॥
दावा यही है मेरा काबूमें सबको लाना ॥
हरदम मेरे पोबारे, कुल स्याने मुझसे हारे हैं ॥
बदमाशी झगड़ेकी हंडियां में बेढब गर्म मसाला हूं ॥ मैं० ॥

१७८

सेठजी और कुमतप्रकाश की बात चीत ॥

सेठ०—शाबाश अय कुमतप्रकाश क्या कहूं इश्क का बीमार हूं इसीसे लाचार हूं रैनमजूषाका आशिके जार हूं बजानो दिल खरीदार हूं ॥

कुमत०–(हैरान होकर) राम राम यह किस का नाम लिया मैंने हाथों से दिलको थाम लिया अजी सेठजी क़ाइम रहे आपकी शौकत व शान यह अर्मान नहीं कुछ आसान ॥

सेठ०—अजी फिर कुछतो तदवीर बताइये ॥

कुमत०—क्या कहूं दिल तह वो बाला है तुमने कुछ अजब शशोपञ्ज में डाला है ।

सेठ०–नहीं नहीं डरनेकी कौन बातहैं तुममें बडी करामातहै

कुमत०–रैनमजूषा श्रीपाल कोटीभट की रानी है महा सती शीलकी निशानी है इसकी निसबत ऐसा ख्याल करना अपनी जान आफतमें फंसानी है ॥

सेठ०—तुम कुछ फिक्र मत करो एक बार मेरी क़िसमत आजमाई करो अपनी होशियारीका इमतिहान करो ।

१७९

कुछ सोचकर कुमतप्रकाश का जवाब देना ॥
चाल—(नाटक) तुम्हे दूंगा मैं वाकी खबरया जान ॥

तेरा दूंगा बना काम आजकी रात ॥
मुझे सूझी है कैसी अनोखी यह बात ॥
मैं हूं चंचल—बनाऊं लाखों अल छल ॥
मिचादूं सारे हल चल-शैतानका काम दूं ॥ तेरा०
मल्लाह से मिलकर-उनको लालच देकर ॥
झूठा शोर मचावें—प्रोहण डूबे जावें ॥
वेग श्रीपाल चढ़ाऊं—रस्से काट बगाऊं ॥
वह नीचे गिरकर—सागर पड़कर—झटपट मरकर—
सब कुछ करकर ॥ दूंगा बना० ॥

१८०

सेठजी का जवाब (वार्तालाप)

सेठ—वाह वाह क्या बेनज़ीर तदबीर है अय कुमत प्रकाश मल्लाहों को फ़ौरन हाज़िर करो।

कुमत०—बहुत अच्छा मैं अभी हाज़िर करता हूं.
(चला जाना)

१८१

सुमतप्रकाश मन्त्रीका धवल सेठको फिर समझाना ॥
चाल—(गजल) एक तीर फैंकता जा तिरछी कमान वाले

फैला हुवाहै सारे दुनियामें नाम तेरा ।
सबसे बढ़ा हुवा है सेठों में काम तेरा ॥ १ ॥

निर्मल है वंश तेरा उत्तम है धर्म तेरा ।
राजों महाराजो में गिनते हैं नाम तेरा ॥ २ ॥
है आपकी सिठानी गुणवन्त खूबसूरत ।
परनार से कहो तो है कौन काम तेरा ॥ ३ ॥
वह कोटीभट की रानी पुत्री समान जानो ।
हो जाएगा वगरना बदनाम नाम तेरा ॥ ४ ॥
खोटी नजर सती को देखा तो देख लेना ।
एकदम बिगड जावेगा लशकर तमाम तेरा ॥ ५ ॥
गर अब भी मान जावो मनसे कुमत हटावो ।
यूं ही बना रहेगा यह खासो आम तेरा ॥ ६ ॥

१८२

धवलसेठ का जवाब (म्योगिनी)

सुनो अय मंत्री किसी शकलसे मिलादो या तो वह जानशीरीं ॥
फिराक में उसके वरना मेरी जरूर जावेगी जान शीरीं ॥

१८३

सुमतप्रकाश मंत्री का जवाब (म्योगनी)

फिराक में किसके खोरहा है, तू किसलिये अपनी जानशीरीं ॥
जो सेठ मानो हमारा कहना, गॅवा न अपनी तू जानशीरीं ॥१
वह पाक दामन है शीलवंती, बुरी निगाह देखना बुरा है ॥
तेरे लिये है जहरे कातिल, समझ न आवे हयात शीरीं ॥ २ ॥
हटाके अपने तू मनसे शरको, कदमपे उसके गिरा तू सरको ।

जो चाहतोहै बचाना नादां, अय सेठ अपनी तू जान शीरीं ॥३
धर्म का बेटा बनाया तूने, है कोटीभटको न भूल मूरख॥
वह उसकी रानी है तेरी बेटी, समान मान यह बात शीरीं ॥४
तुम्हारे हक़में यही भला है तेरे मरज की यही दवा है ॥
सतीके चर्णों को धोके पीले, समझके आबे हयात शीरीं ॥५

१८४

धवल सेठ का जवाब (शैर)

हट छोड़दे छोड़ूं नहीं तू यूं कहे मैं यूं कहूं ॥
बहतर है वह बहतर है यह तू यूं कहे मैं यूं कहूं ॥ १ ॥
यह काम खोटा तू कहे अच्छा है यह मैं यूं कहूं ॥
क्योंकर बात तेरी सुनूं तू यूं कहे मैं यूं कहू ॥ २
मैं तो कहू वह नाज़नी और तू कहे वह नागनी ॥
वह ज़हर है अमृत है वह, तू यूं कहे मैं यूं कहूं ॥ ३ ॥
दारू हमारे दर्द की मंत्री तू कर सकता नहीं ॥
तेरी मेरी बनती नहीं तू यूं कहे मैं यूं कहूं ॥ ४ ॥

१८५

सुमतप्रकाश मन्त्री का जवाब ॥
चाल—इलाजे दर्द दिल० ॥

सती के दिल दुखाने का समर अच्छा नहीं होगा ॥
पराई नार लाने का असर अच्छा नही होगा ॥ १ ॥
सुता सुतनार अरु भगनी अनुज नारी बराबर हैं ॥
इन्हें मत देखना खोटी नजर अच्छा नहीं होगा ॥२ ॥

ज़बरदस्ती दग़ाबाज़ीसे चाहे आप जो करलें ॥
नतीजा ऐसी बातोंका मगर अच्छा नहीं होगा ॥ ३ ॥
ज़रा श्रीपाल कोटीभट का भी दिलमें खौफ़ कीजे ॥
अगर उसको खबर होगी तो फिर अच्छा नहीं होगा ॥ ४ ॥
बदीसे बाज़ आजावो हमारा मान लो कहना ।
सेठजी इस शरारतका समर अच्छा नहीं होगा ॥ ५ ॥

१८६

धवल सेठका जवाब ॥
चाल—(गजल) इलाजे दर्द दिल।

नतीजा इश्क का क्या है सो अच्छा हम भी देखेंगे ॥
बलासे जान जाएगी तमाशा हम भी देखेंगे ॥ १ ॥
पाक दामन शीलवंती बताते हो जो तुम उसको ।
रखेगी कब तलक हमसे वह परदा हम भी देखेंगे ॥ २ ॥
नहीं मरनेका ग़म मुझको न रुसवाई का डर मुझको ॥
करेगा क्या वह कोटीभट सो अच्छा हम भी देखेंगे ॥ ३ ॥
चाहे वह नागनी है ज़हरे कातिलहै सुनो मंत्री ॥
एक बार उस परीरूका नज़ारा हम भी देखेंगे ॥ ४ ॥
नसीहतकी बात अब किसीकी हम नहीं सुनते ॥
जो होना होगा सो होगा नतीजा हम भी देखेंगे ॥ ५ ॥

१८७

कुमतप्रकाश का मल्लाहोंको लेकर वापिस आना और सेठजी व मल्लाहोंका बात चीत करना ॥

मल्लाह—हजूर हम सब मरजिया हाज़िर है कहा हुक्म है

सेठजी—देखो जैसे कुमतप्रकाश मंत्री तुमको आज्ञा करे वैसा ही करो हम तुमको बहुत इनाम देंगे और राजी करेंगे ॥

मल्लाह—बहोत अच्छो महाराज ऐसोही होगा ॥

(मल्लाहों का चला जाना)

सीन २६

दरियाका परदा

१८८

रातके वक्त जहाजोंका चलते हुवे नजर आना और मल्लाहों का पुकारना ।

मल्लाह—दौड़ियो दौड़ियो कोऊ बड़ो भारी मगरवो टकरात है प्रोहणियो डूबत जात है दौड़ियो दौड़ियो ॥

सबलोग-(दौड़कर मल्लाहों के पास जाकर) अरे क्या होगया क्या आफ़त आगई ॥

मल्लाह—अरे कोऊ बरत पर बेगी चढ़ौ प्रोहणियो डूबत जात है ॥

कुमत०—(श्रीपाल से) कुवरजी महाराज आप जल्दी पधारें जहाज़ डूबते हैं आप रक्षा करें ॥

श्रीपाल—अरे क्या होगया है ॥

कुमत०—महाराज हमें कुछ पता नहीं ॥

श्रीपाल—(खड़ा होकर) अच्छा चलो (मल्लाहों के पास जाकर) अरे क्या शोर है क्या आफ़त है ॥

मल्लाह—महाराज प्रोहणियो डूबत जात है कोऊ वेगी चढ़ो वरतको ठीक करो हमन से यो काम नहीं बनत है ॥

१८९

श्रीपालका सबको तसल्ली देना और वरत पर चढ़ना ॥

चाल (नाटक)—मेरी मानो जी मानो क्या डर है ॥

ज़रा ठैरो जी ठैरो क्या डर है-नहीं समझो कि कोई खतर है ॥
ऊपर को अभी जाताहूं-रस्सेको संवार आता हूं ।
अभी जा-हाथ लगा-काम बनाके जल्दी आ ॥
दिलमें न कोई फ़िकर है ॥ नहीं समझो० ॥

१९०

नोट-श्रीपालका यादवान पर चढ़ना ॥ कुमतप्रकाश का रस्सा काटना और श्रीपालका समदर में गिरना ,और सिद्धमंत्र पढ़ना और सबका हाहाकार मिचाना ॥

(परदा गिरना)

इति न्यामतसिंह रचित मैनासुन्दरी
नाटक का तीसरा ऐक्ट समाप्तम् शुभम्

मैना सुन्दरी नाटक

चौथा ऐक्ट

रैणमंजूषा का श्रीपाल के ब्योग में विलाप करना, धवल सेठ का रैणमंजूषा को सताना, देवताओं का आकर सती का शील बचाना, श्रीपाल का समुद्र से पार होना और गुण-माला से ब्याह करना ॥

श्रीजिनेन्द्रायनमः

सीन २७

जहाज़ में रैनमंजूषा के महल का परदा ॥

१९१

रैनमजूषा का जहाज में बैठे हुवे नजर आना। श्रीपाल के समुद्र में गिरने की खबर सुनकर बांदी का रोती हुई रैनमजूषा के पास आना और रैनमजूषा का बांदी से हाल पूछना (चौपाई)

कारण कवन रही मुरझाई। क्यों रोती हो कहो समझाई ॥ १ ॥
काहु करो अपमान तुम्हारो। या कोई दुर्वचन उचारो ॥ २ ॥

१९२

बांदी का जवाब (चौपाई)

रानी विपत पड़ी अति भारी। मुखसे बात न जाय उचारी १
हा श्रीपाल सुराज हमारो। आज पड़ो दधिके मंझधारो ॥२॥

१९३

रैनमञ्जूषाका यह हाल सुनकर मूर्छित होना। धांदी का सुचेत करना और रैनमञ्जूषा का विलाप करना ॥

चाल—दिये दुख यह पालकने सारे चले छोडके राज विचारे ॥

दिये दुख यह करमने भारे। पड़े सिंधु में कंथ हमारे ॥ टेक ॥
तुझे कर्म दया नहीं आती। है जान हमारी जाती जी ॥
चलें ग़मके जिगर पर आरे ॥ पडे० ॥ १ ॥
सुसराल न पीहर मेरा ॥ हुवा जग में आज अंधेरा जी ॥
हमें छोड़ा किसके सहारे ॥ पड़े० ॥ २ ॥
सती पूछेगी मैना नारी ॥ मां देखे है बाट तुम्हारी जी ॥
क्या कहुंगी मै बात बिचारे ॥ पड़े० ॥ ३ ॥
जो सुनेगी खबर तिहारी ॥ वह मरजांगी दोऊ दुखियारीजी ॥
लगे दोनों का पाप हमारे ॥ पड़े० ॥ ४ ॥
अरे करम महा अन्याई ॥ क्यों होगया महा दुखदाई जी ॥
तूने कबके यह बदले निकारे ॥ पड़े० ॥ ५ ॥
कौन धीर बंधावे हमारी ॥ दुख पड़ गया हमपर भारी जी ॥
जल नैनोंसे बरसे हमारे ॥ पड़े० ॥ ६ ॥

१९४

धायी का जवाब (दोहा)

सुनो महारानी सती, तुमहो गुण गम्भीर ॥
होना था सो होगया, अब राखो मन धीर ॥

१९५

रैनमजूषा का आभूषन उतारकर फेंकना और विलाप करना ॥

चाल—बिंदी लेदे लेदे मेरे माथे का सिंगार ॥

सब तारो तारो तारो मेरे हाथों का सिंगार ॥
हाथों का सिंगार मेरे माथे का सिंगार ॥ सब० ॥ टेक ॥
कटी बेसर बींदी बैना गल मोतियन हार ॥
क्या मोहन माला मुंदर कुंडल नेवर झंकार ॥ सब० ॥ १ ॥
लो सीस मुकट हथफूल करो चुंदरी का तार तार ॥
मेरे बालम डूबे जलमें मेरा जीना धिक्कार ॥ सब० ॥ २ ॥
मेरे करकी मैहँदी दूर करो लगे अगन अंगार ॥
मस्तक की बींदी तारो डारो करके तीन चार ॥ सब० ॥ ३ ॥
क्या करूंगी राज और पाट करूं क्या सारा घर बार ॥
मेरा लुटगया छिनमें राजगया मेरे सरका सरकार ॥सब० ॥४॥

१९६

सखियों का आना और समझाना ॥

चाल—यह कैसे बाल बिखरे हैं यह क्या सूरत बनी गमकी॥

कौन जाने कि किसमत में तुम्हारे क्या लिखा होगा ॥
बुरा हो या भला होगा जो लिक्खा है वही होगा ॥ १ ॥
सुखी कोई दुखी कोई यह सब करनी के फल जानो ॥
किया है जैसा फल उसका किसी दिन बरमला होगा ॥ २ ॥

खुशी में हो गया है ग़म सदा यह भी न रहने का ॥
सबर मनमें करो रानी जो कुछ होगा भला होगा ॥ ३ ॥
विपत में हे सती जिन धर्म ही होता सहाई है ॥
लहो जिनराज का शरना इसीसे दुःख जुदा होगा ॥ ४ ॥

१९७

रैनमंजूषा का जवाब ॥
चाल—यह कैसे बाल बिखरे हैं० ॥

प्रभू जाने सखी पहले जनम में क्या किया होगा ॥
किसी का धन हरा होगा किसी को दुख दिया होगा ॥ १ ॥
किसी पर पुरुष पर मैंने चलाया होगा मन अपना ॥
पती का या हुकम मेरे कभी मनसे टरा होगा ॥ २ ॥
करी होगी कभी निन्दा धरम जिनराज की मैंने ॥
या कोई जीव जल अगनी में मेरे से पड़ा होगा ॥ ३ ॥
किसी का अङ्ग उघारा या किया होगा नियम खंडन ॥
बचन झूठा कोई मूँह से कभी मैंने कहा होगा ॥ ४ ॥
लगाया होगा मैंने दाग़ अपने शील संजम में ॥
किसी का गुण मिटाया या कोई औगुण कहा होगा ॥ ५ ॥
करी होगी जुदाई या किसी नर नार मे मैंने ॥
दग़ाबाज़ी से या मैंने किसी को दुख दिया होगा ॥ ६ ॥
आज वह ही करम मेरे उदय आया पती मेरा ॥
गिरा जाकर समंदर में तड़पता या मरा होगा ॥ ७ ॥

१९८

सुमतप्रकाश मंत्री का आना और समझाना ॥
चाल—यह कैसे बाल बिखरे हैं० ॥

शुभाशुभ हे सती जगमें सभी करमों से होते हैं ॥
आज दिल शाद होते हैं वह कल कर्मों को रोते हैं ॥ १ ॥
राम लक्षमन सती सीता किसी दिन राज भोगें थे ॥
वही एक दिन बनों में जा दुखी बेज़ार होते हैं ॥ २ ॥
सिया के वासते एक दिन राम रावण से लड़ते थे ॥
आज बनोबास देते हैं राम नाराज़ होते हैं ॥ ३ ॥
पवंजय को किसी दिन अंजना की बू न भाती थी ॥
वही चोरी से जाके रात को ग़मख्वार होते हैं ॥ ४ ॥
प्रभू का नाम ले रानी बस अब करले सबर मनमें ॥
धरम ही सार है जगमें इसी से पार होते हैं ॥ ५ ॥

१९९

रैनमंजूषा का जवाब ॥
चाल—(गजल) यह कैसे बाल बिखरे है० ॥

सबर कैसे करूं मंत्री सबर आता नहीं मनको ॥
नहीं क़ाबू में मन मेरा टिकाऊं किस तरह मनको ॥ १ ॥
करेगा कौन जाके राज चम्पापुर बताओ तो ॥
उजड़ गया वंश सुसरे का बंधाऊं धीर क्या मनको ॥ २ ॥
बरस बारा में मिलने की कही थी मैनासुन्दर से ॥
कहूंगी क्या उसे जाकर बतावो तो मेरे मनको ॥ ३ ॥

बाट देखे है मां कुदप्रभा श्रीपाल आने की ॥
वह मर जाएगी सुन करके बतावो क्या करूं मनको ॥ ४ ॥
चलाया पांव से मोहण बजर मई पाट जा खोले ॥
कहां वह वीर कोटीभट दिखाऊं क्या मेरे मनको ॥ ५ ॥

२००

सुमतप्रकाश मंत्री का वैराग का उपदेश देना और तसल्ली करना ॥
चाल—(कवाली) कोई चातुर ऐसी सखी न मिली (सारंग)

प्यारी दुनियां है सागर दुखों से भरा ॥
यामें सुख कहीं आता नज़र ही नहीं ॥
यामें मोहका जाल पड़ा है सती ॥
जामें जीव फंसे हो खबर ही नहीं ॥१॥
कौन माता पिता कौन बंधू सुता ।
कैसे भाई बहन कैसे दारा पती ॥
इस दुनियां के नाते हैं झूटे सभी ।
सच पूछो तो रहने का घर ही नहीं ॥ २ ॥
नदी नांव संजोग से आके मिले ।
जैसे पेड़ पे पंखी बसेरा करे ॥
जब भोर भई सब बिछड़ के चले ।
सङ्ग चलने का कोई ज़िकर ही नहीं ॥ ३ ॥
रानी स्वारथ की है सारी दुनियां लखो ।
यामें भूल के कोई न नेह करो ॥
सूखे दरिया पे नर पशु पंखी कोई

देखो करता है आके गुज़र ही नहीं ॥ ४ ॥
चाहे फ़ौज पयादे हज़ारों रहो ।
चाहे महल क़िले में जा बंद करो ।
चाहे जंतर मंतर लाखों पढ़ो ।
मौत टारी किसी से भी टर ही नहीं ॥ ५ ॥
धन दौलत राज खज़ाना सभी ॥
कोई अन्त समय काम आवे नहीं ॥
आ मुसीबत में कोई सहाई करे ।
ऐसा कोई भी सुर या असुर ही नहीं ॥ ६ ॥
ऐसा जान के प्यारी विचार करो ।
दुख शोक तजो समता को भजो ॥
मोह माया को मन सेती दूर करो ।
मोह करने का अच्छा समर ही नहीं ॥ ७ ॥
जिनराज भजो मन धीर धरो ।
तप संजम शील सिंगार करो ॥
धर ध्यान निज आतम कर्म हरो ।
बिन धर्म के होगा गुज़र ही नहीं ॥ ८ ॥

२०१

रैनमंजूषा का सबर करना और धर्म में जी लगाना और भगवान की स्तुति करना ॥

चाल—यह कैसे बाल बिखरे हैं० ॥

तू ही तारन तरन जिनराज दुख हारी विपत हारी ॥
तू सारे विश्व का ज्ञाता तू ही शिव मग का नेतारी ॥ १ ॥

हितू तुझ सा नहीं कोई हुवा निश्चय मेरे मनको॥
तुहा उरझीका सुरझय्या तुही जग जीव हितकारी॥ २॥
पवंजयको मिली अंजना लगाया ध्यान जब तेरा।
रामसे आ मिली सीता तोड़ लंकाका गढ़ भारी॥॥३॥
पड़ी है नाव मंझधारी नहीं कोई मददगारी॥
खिवय्या मेरी कशतीका तू ही मैं तुझपे बलिहारी॥ ४॥
देख महिमा तेरी स्वामी तेरा शरना मैं लेती हूं॥
मिलेगा पी हमारा भी भरोसा है मुझे भारी॥ ५॥

सीन २८

(समुद्र के किनारे का परदा)

२२

नोट—जिस वक्त श्रीपाल समुद्र में गिरा मुनि मन्त्रका जाप करता हुआ अपने भुजाओं से समता भाव धारण करके समुद्र में तैरने लगा॥

२०३

श्रीपालका समुद्रको पार करके कुमकुम द्वीप में पहोंचना और भगवान का धनवाद गाना और एक वृक्ष के नीचे सो जाना॥

चाल-(नाटक) मेरे गमका तराना सुनिये फिसाना अय शहे जीशान।

तेरा धननाद गाऊं-सरको झुकाऊं-अय मेरे भगवान।
तू हितकारी-दुखपर हारी-है सुखकारी-अय मेरे भगवान। तेरा०

धोकेसे मैं अफ़सास गिरा । सिंधुमें बरंजो कमाल ।
तूने ही मुझको ला डाला है । सिंधुसे पार निकालें ।
रैनमंजूषा-रोती है उसजा-धीर बंधाना-अय मेरे भगवान । तेरा०
(सो जाना)

२०४

नोट—यह वन जहां श्रीपाल सोया हुआ है कुमकुमद्वीपका वन है। यहां राजा भूमंडल राज करता था । वनमाला पटरानीके एक लडकी गुणमाला अति रूपवती और शीलवंती थी एक दिन राजा ने श्रीमुनी महाराजसे पूछा कि गुणमाला का कौन वर होगा । श्रीमुनी महाराज ने फरमाया कि जो पुरुष समुद्र तैर कर आवेगा वह गुणमाला को ब्याहेगा। राजाने समुद्र के किनारे पर सिपाही बैठा दिये और हुकम दिया कि जिस वक्त कोई पुरुष समुद्रको तैर कर आवे फौरन इतला दी जावे। इन सिपाहियों ने जिस वक्त श्रीपालको समुद्र से निकलते हुवे और एक वृक्षके नीचे सोते हुवे देखा तो वह श्रीपालके पास आकर आपस में बातें करने लगे ॥

१०५

सीपाहियो का आपसमें बात करना-(शैर)

१ सि०—लखो इस राजकन्याने यह कैसा पुन्य कमाया है।
जो इसके वास्ते यह नर समंदर तिरके आया है ॥
२ सि०—शरीर इस पुरुषका देखो तो सौना सा चमकता है।
यह कोई इन्द्र है या कोई राजा दीख पड़ता है ।
३ सि०—महा पुन्यवान है मनमथका इसने रूप धारा है ॥
सूरत मन मोहनी मूरत बदन सांचे में ढाला है।

४ सि०—भुजाओं की तरफ़ देखो नहीं बलकी कोई सीमा ।
यह शायद भीम या महावीरने अवतार धाराहै ॥

२०६

श्रीपालका चौंककर उठना और सिपाहियोंसे हाल पूछना ॥
चाल—(इन्द्र सभा) मामूरहूं शोखी से शरारत से भरी हूं ॥

तुम कौन हो और किस लिये इस जा पे आए हो ।
क्यों इस कदर घबराए हो मनमें लजाए हो ॥ १ ॥
क्यों देखते हो मेरी तरफ़ क्या विचार है ॥
भेजा किसी ने या किसीकी इन्तज़ार है ॥ २ ॥
खोफ़ो खतर का कुछ नहीं दिलमें गुमां करो ॥
जो बात है वह साफ मेरेसे अयां करो ॥ ३ ॥

२०७

सिपाहियों का हाल बताना और एक सिपाहीका राजाको खबर करनेके लिये रवाना होना ॥
चाल—अपनी हमें भक्ती का कुछ दीजे। दान ॥

कारण यहां आनेका सुनिये सरकार ॥ टेक ॥
यह कुमकुम पट्टन भारी ॥ सब सुखी प्रजा नर नारी ॥
जैन मारग परचार ॥ १ ॥
भूमंडल है भूपाला । पटनार नार वनमाला ॥
रती रम्भा उनहार ॥ २ ॥
ताके एक राज कुमारी । गुणमाला राज दुलारी ॥
शील जोबन शृंगार ॥ ३ ॥

जो पुरुष तैर दधी आवे ॥ वह गुणमाला को ब्याहे ॥
कही मुनि अवधि विचार ॥ ४ ॥
हम राज हुकम अनुसारे ॥ रहते हैं यहां रखवारे ॥
सुनो तुम राज कंवार ॥ ५ ॥
तुम महा पुन्य अधिकारी । आए चीर समन्दर भारी ॥
चलो बरो राज दुलार ॥ ६ ॥

२०८

राजा भूमण्डलका आना और श्रीपालसे बात करना और श्रीपालका राजा के साथ जाना ॥

चाल—(इन्दर सभा) अरे लाल देव इस तरफ अफ्र आ।

सुनो बीर गम्भीर हे गुण विशाल ॥
किया देशको मेरे तुमने निहाल ॥ १ ॥
है धनभाग आए मेरे दिन भले ॥
आज आपके हैं जो दर्शन मिले ॥ २ ॥
चलो घरपे मेरे करम कीजिये ॥
नहीं दिलमें अपने शरम कीजिये ॥ ३ ॥
मेरे मनकी चिन्ता जो है सब हरो ॥
मेरी राज कन्या को चलकर बरो ॥ ४ ॥

(सबका चला जाना)

सीन २९

दरबार का परदा ॥

२०९

भीपालकी गुणमालासे शादी होना और परियों का मुबारकबाद गाना ॥

चाल नाटक-(मुबारकबादी)

आज प्यारी देखो गुलशन में आई बहार ॥ टेक ॥
आए समंदरको तिर करके राजा ॥
है कोई नागकुमार ॥ कुमार ॥ प्यारी० ॥ १ ॥
गुणमाला सुन्दर है राज दुलारी ॥
हों चान्द सूरज निसार ॥ निसार प्यारी० ॥ २ ॥
खुश रहो प्यारा पियारी यह दोनो ॥
जग में हो महिमा अपार ॥ अपार प्यारी० ३ ॥

सीन ३०

महल का परदा ॥

२१०

(नोट-श्रीपाल गुणमालाके पास कुमकुम द्वीप में रहने लगा) एकदिन गुण-माला का श्रीपालसे हाल पूछना और बात चीत करना ॥

चाल—उमराव थारी बोली प्यारी लागे महाराज (रागनी राजपूताना)

महाराज मेटो मेरे मनकी चिन्ता महाराज ॥
महाराज जी, जी महाराज ॥ टेक ॥
कहां तुम्हारा राज है कौन मात परिवार ॥
कौन पिता किस बंशमें लीना है अवतार ॥
महाराजहो तुम किस नगरीके बासी महाराज । महाराज जी०१
क्योंकर छोड़ा राजको क्यों आए इस देश ॥
किस कारण घरबारको छांड़ चले परदेश ॥
महाराज क्योंकर होगए बनके बासी महाराज । महाराजजी०२
क्योंकर सिंधू में पड़े क्योंकर निकसे आय ॥
भेद बतावो बालमा मनका संशय जाय ॥
महाराज मैं तुमरे चर्णन की दासी महाराज । महाराजजी०।३।

२११

श्रीपालका जवाब ॥ दोहा ॥

सुन सुन्दर टुक कान दे, तोसे कहूं विचार ॥
जल पितु पंकज मात है, सागर बंश अवतार ॥१ ॥
बड़वानल प्रबल तरंग, मम बंधु परिवार ॥
तिन सबको मैं छोड़कर, आ पहोंचा तोरे द्वार ॥ २ ॥
कहूं अगर मैं और कुछ, सांच न जाने कोय ॥
है येही मेरा पता, सुनि सुन्दर जिय जोय ॥ ३ ॥

२१२

गुणमालाका जवाब ॥

चाल (नाटक) वहीं जावो मन भावो जिसपर हो प्यार वहीं जावो ॥

क्षमाकीजे जी कीजे—गुस्सा निवार क्षमा कीजे ॥
क्यों छल वैन सुनाते हो—अल छल बात बनाते हो ॥
हँस हँस जान जलाते हो ॥ क्षमा० ॥
मैने तो आपको अपनाही समझ रक्खा है ॥
तुमने लेकिन मुझे एक ग़ैर समझ रक्खा है ॥ १ ॥
राज़ दिल मेरे से जो तुमने छुपा रक्खा है ॥
आप खुल जाएगा इस बात में क्या रक्खा है ॥ २ ॥
बात करनाही अगर दोष समझ रक्खा है ॥
तो खैर मुआफ़ करो रंजमें क्या रक्खा है ॥ ३॥ क्षमा० ॥

२१३

श्रीपालका हाल बताना ॥

चाल (कवाली) सखी सावन बहार आई झुलार जिसका जी चाहे ॥

सुनाऊं हाल दिल अपना तेरे दिलका शुबा निकले ॥
ज़रा सुन ध्यान देकरके सुनानेका मज़ा निकले ॥ १ ॥
नगर चम्पाका राजा हूं नाम श्रीपाल है मेरा ॥
करम वश राजको तजकर चले उज्जैन जा निकले ॥ २ ॥
वहां मैना सती सुन्दर राज कन्या मिली मुझको ॥
उसे भी छोड़कर आगे चले एक बनमें जा निकले ॥ ३ ॥
साथ एक सेठके आगे चले हंसद्वीप में पहोंचे ॥
मिली सती रैनमंजूषा जो जिन मंदिरमें जा निकले ॥ ४ ॥

है कोई ऐसा यार हमारा नेग मिलावे आन ॥ १ ॥
अरे कहां है कहां गया है सुनो कुमत परकाश ॥
भूल गया क्या बात हमारी रहा नहीं क्या ध्यान ॥ २ ॥

२१६

विदूशक का आना और गाना (शैर)

अय मूरख क्या बात बिचारी काम नहीं आसान ॥
हो जावो होशयार विदूशक भी है पहोंचा आन ॥ १ ॥
कितना तेरा डेरा डांडा लशकर और सामान ॥
इस रसते में सब लूटजागा रोवेगा नादान ॥ २ ॥
पेड़े बरफ़ी लड्डु जलेबी खाओ सेठ हरआन ॥
रैनमजूषा से क्या लेगा खो बैठेगा जान ॥ ३ ॥
कहते हैं हम तेरे भलेकी सुनले देकर कान ॥
जो तू मेरा कहा न माने होवेगा हैरान ॥ ४ ॥

२१७

कुमतप्रकाश मंत्री का दो दूतियों को लेकर आना और सेठजी व विदूशक व कुमतप्रकाश का बात चीत करना (वार्तालाप)

कुमत०—सेठ जी मै हाज़िर हू ग़म न कीजिये जल्दी
इन दोनों दूतियों को रैनमंजूषा के पास
भेजिये अपनी दिली मुराद हासिल कीजिये
वेदू०—सेठ जी हम भी हाजिर हैं ज़रा होश में आओ
ऐसे खुशामदी लोगों की बातों पे न जाओ ॥

ऐसा न हो कहीं दही के धोके कपास खाजाओ
रैनमंजूषा महा सती है अगर आप उसपर बद
खयाल लाएंगे ॥ तो लेने के देने पड़ जाएंगे।

सेठ॰—अरे विदूशक यह कैसी बे महल क़ीलो क़ाल है॥

विदू॰-सेठजीअहकाम महालहै मुझे तेरी बरबादीकाखयालहै

सेठ॰-(दूतियों की तरफ देखकर अरी दूतियों-तुम जल्दी
रैनमंजूषा के पास जाओ अपना कमाल दिखाओ

दूती—बहुत अच्छा हम अभी जाती हैं। उड़ती चिड़िया को
दाम में फंसाती हैं। आपका गुंचए दिल खिलाती हैं।

विदू॰—अच्छा तो फिर हम भी जाते हैं देखो क्या नया
गुल खिलाते हैं ॥ (चला जाना)

सीन ३२

जहाज़ में रैनमंजुषा के महल का परदा

२१८

दूतियों का रैनमंजूषा के पास पहोंचना और बातें मिलाना ॥

चाल—(इन्दरसभा) राजाह में कौम का और इन्दर मेरा नाम ॥

१ दूती-हे पुत्री यूंही जगत में, होती सांझ सवेर ॥
चाहे जतन सौ कीजिये, मरा न आवे फेर ॥

२ दूती-होना था सो होगया, अब जाने दो बस खैर ॥
रहो सहो खाओ पियो, करो बाग़ की सैर ॥
१ दूती शील सो जबतक पालिये, है जबलग सरदार ॥
तू अब निर अंकुश भई, देख करो भरतार ॥
२ दूती--बिछुड़े सब कोई मिलतहैं, जोबन मिले न जाय ।
पुत्री जोबन खोय मत, फिर पाछे पिछताय ॥
१ दूती--धवल सेठ गुण खान है, है वह चतुर सुजान ।
रूपवंत धनवंत है, सकल देश परधान ॥
२ दूती--श्रीपाल इस सेठका, था चाकर दरबान ॥
जो मानो तो सेठ को, जाय वरो इस आन ॥

२१९

रैनमंजूषा का कप करना और दूतियों को निकाल देना ॥

चाल--(नाटक) ऐसे ऐसे भूत छलावे हमने लाखों देखे भाले ॥

ऐसी तुमसी ऐसी ग़ैरी मैने लाखों देखी भाली ॥
दूती बनकर आनेवाली--बातों में फुसलाने वाली ॥
नरकोंमें ले जानेवाली--कुलके दाग़ लगानेवाली । तुमसी०॥
मेरे पतिके धरम पिता कहलाते हैं कहलाते हैं ॥
क्या सुसरा बनकर मुझसे रमना चाहते हैं वह चाहते हैं ॥
जाओ जाओ यहांसे जाओ॥मतना अपना मूंह दिखलाओ ॥
जीभ तुम्हारी यह जल जाओ ॥ जो ऐसी बातें सिखलाओ ॥
देखे तुमरे छल--मुझे क्या देती हो झुल ॥

मेरा क्षत्रीका है कुल--मेरा शील है अटल।
हां जाओ जाओदेखीभालीआईशीलडिगानेवाली। तुमसी० ॥

सीन ३३

जहाज़ का परदा

२२०

दूतियोंका वापिस धवल सेठके पास आना और हाल सुनाना ॥
चाल—यह कैसे बाल बिखरे हैं०

वह है पूरी सती काबूमें लाना सख्त मुशकिल है ॥
कि जैसे आगको पानी बनाना सख्त मुशकिल है ॥ १ ॥
यह है ताकत सितारे आसमां के तोड़ लावें हम।
मगर उससें नज़र जाकर मिलाना सख्त मुशकिल है ॥ २ ॥
हमारी बात सुनकर सख्त पत्थर मोम होजावे।
मगर उस गुलको तो बातें सुनाना सख्त मुशकिल है ॥ ३ ॥
निकालें बालकी हम खाल चलकर चाल चतुराई।
मगर यह चाल उस जापे चलाना सख्त मुशकिल है ॥ ४ ॥
बिगड़ गई देखकर हमको पड़े माथेपे बल उसके।
चढ़े चितवनके बल उसके हटाना सख्त मुशकिल है ॥ ५ ॥

२२१

विदूषकका आना और सेठजीसे बात चीत करना ॥

विदू०--क्यों हमने क्या कहाथा सेठजी यह काम मुशकिल है।

मैं फिर कहताहूं मुशकिल है काम यह सख्त मुशकिलहै ।

सेठ०–अच्छामैं खुदजाताहूं । दसबीस सहेलियों को संगले जाताहूं । उस गुलबदनको क़ाबूमें लाता हूं ।

विदू०—देख मैं तुझे फिर समझाताहूं । पहली बात याद दिलाता हूं । कूवें में गिरनेसे बचाता हूं । नेकी का रास्ता दिखाता हूं ॥

सेठ०—बस बस हम किसीकी बातको खयालमें न लाएंगे । एक बार अपनी क़िसमतको जरूर आजमाएंगे ।

विदू०—बेहया लगती है तुझको यह नसीहत उलटी ॥
खैर मालूम हुवा अब तेरी किसमत उलटी ॥

सेठ०—क्या खबर यह मेरी क़िसमत है चढ़ी या उलटी ॥
अब तो लगती है नसीहत मुझे सबकी उलटी ॥
लाऊंगा उसको पढा करके मैं पट्टी उलटी ॥
देखना फिर मेरी होजायगी किसमत सुलटी ॥

विदू०–तेरी क़िसमतने पढ़ी सेठजी पट्टी उलटी ॥
देखना होएगी क़िसमत तेरी कैसी सुलटी ॥
उस सतीने जो तुझे कोपसे वहां देख लिया ॥
उसी दम होजायगी किसमत तेरी उलटी पुलटी ॥

सेठ०–क्या पड़ी तुमको अगर है मेरी किसमत उलटी ॥
हम नहीं सुनते तेरी बात यह उलटी सुलटी ॥

२२२

विदूशकका जवाब ॥

चाल—(नाटक) आली दरबार है महफिल सरकार है ॥

देखो कामीको लाज नहीं । काहूसे काज नहीं ॥
बोलनकी साज नहीं । मूरख गंवार है ॥ १ ॥
चाहे निज मात हो । बेटी की बात हो ॥
भगनी के साथ हो । करता विकार है ॥ २ ॥
मद्यका पान करे । वेश्याका ध्यान करे ।
जूवेकी बान धरे । चोरी बिचार है ॥ ३ ॥
पर नारीसे काम है । झूठा कलाम है ॥
सबका गुलाम है हरदम बेज़ार है ॥ ४ ॥

२२३

सेठजीका जवाब (शैर)

बस विदूशक रहनेदे तू अपने इस उपदेशको ॥
चाहते हैं हम नहीं बस ऐसे खैर अंदेशको ॥ १ ॥
मैं नहीं मानूंगा बस आज यह बातें तेरी ॥
ऐसी बातों से बिगड़ती है तबीयत मेरी ॥ २ ॥

२२४

सुमतप्रकाश मन्त्री का समझाना ॥

चाल—सखी सावन बहार आई झुलाय जिसका जी चाहे ॥

सताता है जो सतियोंको वह जगमें ख्वार होता है ॥
यहां होता है बेइज्जत वहां बेजार होता है ॥ १ ॥
जो कामी पुरुष होता है कभी नहीं चैन पाता है ॥

बाद मरनेके उसका नर्क में घर बार होता है ॥ २ ॥
सुनो कामीसे हर इन्सां बदिल बेज़ार होता है ॥
दुखी होताहै वह बदनाम सब परिवार होता है ॥ ३ ॥
वही नर देखता है बद निगाहसे देख सतियों को ॥
जिसे मरकरके जाना नर्कमें दरकार होता है ॥ ४ ॥
सेठजी मानलो कहना शरारतसे बाज आओ ॥
वगरना आज यह सारा तबाह घर बार होता है ॥ ५

२२५

सेठजीका जवाब (शैर)

किसीकी हम नहीं मानेगे क्यों तकरार करते हो ॥
नसीहत करके नाहक़ जी मेरा बेज़ार करते हो ॥

२२६

सुमतप्रकाश मन्त्री का फिर समझाना ॥

चाल—कत्ल मत करना मुझे तेगोतबरसे देखना ॥

पाप बुद्धी छोड़दो साहिब प्रभूके वास्ते ॥
पाप करना है नहीं अच्छा किसीके वास्ते ॥ १ ॥
पाप रावणने किया सीताको हरके लेगया ॥
आप दुशमन बन गया सारे कुटुमके वास्ते ॥ २ ॥
मान ले कहना मेरा मत पापपे बांधे कमर ॥
क्यों डबोता है सभोंको दुष्करमके वास्ते ॥ ३ ॥
उस सतीका सत कोई हरगिज़ डिगा सकता नहीं ॥
किस लिये जाता है तू नाहक मरणके वास्ते ॥ ४ ॥

पाप करनेका समर अच्छा कभी मिलता नहीं ॥
मैं तुझे कहता हूं यह तेरे भलेके वास्ते ॥ ५ ॥

२२७

सेठजीका जवाब ॥ (शैर)

चाहे जो कुछ हो मगर एक बार वहां जाऊंगा मैं ।
लाख समझाओ मुझे खातिरमें नहीं लाऊंगा मैं १ ॥
बस मैं अब जाता हूं क़िसमत आज़माने के लिये ॥
उस परीको जालमें अपने फंसानेके लिये ॥ २ ॥
(रवाना होना)

२२८

विदूशकका जवाब ॥ (शैर)

अच्छा हमभी जाते हैं कुछ गुल खिलाने के लिये ॥
ऐसी बदकारी का फल तुझको दिखाने के लिये ॥
(रवाना होना)

सीन ३४

(रैनमंजूषाके महलका परदा)

२२९

सेठजीका रैनमजूषाके जहाज़में पहोंचना और सहेलियों को रैनमजूषाके पास भेजना । सहेलियोंका रैनमंजूषाको बागकी सैर करने के लिये कहना ॥

चाल—(नाटक) चलो दिल मिल दिलवर ॥

चलो मिलकर दिलवर खुशतर हम सब वारिया ॥

हैं वारियां-हम नारियां ॥ यह अजब गुलकारियां—
प्यारियां-क्यारियां-सारियां ॥
बनो बांकी छबीली मतवारियां ॥
हां बनो बांकी छबीली मतवारियां ॥
नुकीली-अलबेली-सहेली-सहेली दिलदारियां । चलो मिलकर०
सब कलियां खिलिया बाग़ में क्या प्यारी ॥
जाई जूई चम्पा चम्बेली ॥ ताल किनरयां गुलकारी है न्यारी ।
गावें बुलबुल बाग़ में री । आओ आओ महारानी-सेठानी
हमारी हो प्यारी ॥ चलो मिलकर० ॥

२३०

रैनमजूषा का सहेलियों को जवाब देना और सबका चला जाना ॥
चाल—(कवाली) सखी सावन बहार आई झुलाए जिसका जी चाहे ॥

तुम्हें गुलशन की सूझे है यहां बेज़ार बैठी हूं ॥
न छेड़ो तुम मुझे जाओ कि मैं बीमार बैठी हूं ॥ १ ॥
हँसी का है नहीं मौक़ा नहीं यह छेड़ अच्छी है ॥
करो मत दिल्लगी मुझसे कि मैं ग़मख्वार बैठी हूं ॥ २ ॥
अभी मर जाऊंगी मैं गिरके दरिया में देख लेना ॥
पिया के रंज में मरने को मैं तय्यार बैठी हूं ॥ ३ ॥
अगर मैं आह मारूंगी लगेगी आग दरिया में ।
यह सब जल जाएगा टांडा जली अंगार बैठी हूं ॥ ४ ॥

२३१

सेठजीका खुद रैनमंजूषा के पास पहोंचना और कहना ॥

चाल—[कवाली] इलाजे दर्द दिल० ॥

न कर यूं रंजोग़म प्यारी गई बातों को जानेदे ॥
मरा उलटा नहीं आता छोड़दे आस जानेदे ॥ १ ॥
सुनाऊं हाल मैं श्रीपाल का जिसपे तू मरती है ॥
लिया था मोल मैंने वह मेरा चाकर था जाने दे ॥ २ ॥
छोड़ अब रंजकी बातें जवानी की हैं यह रातें ॥
तू रानी मैं तेरा राजा न घबरा मनको जानेदे ॥ ३ ॥
पती मुझको समझ अपना तेरे बिन कल नहीं मुझको ॥
चलो बस उठके घर अपने न कर इंकार जानेदे ॥ ४ ॥

२३२

रैनमञूषा का जवाब ॥

चाल—कहां लेजाऊं दिल०

सता मत बेकसों को तू अरे बदकार जानेदे ॥
न धर सरपोट पापों की अरे बदकार जानेदे ॥ १ ॥
धरम पितु मेरे बालम का हमारा भी पिता कहिये ॥
न कर बेटी से यह बातें अरे बदकार जानेदे ॥ २ ॥
बुरी परनार दुनिया में सुना है जैन शासन में।
गया है नर्क में रावण अरे बदकार जानेदे ॥ ३ ॥
नरक में मार खाओगे महा दुख वहां पे पाओगे ॥
न होगा वहां कोई ज़ामिन तेरा बदकार जानेदे ॥४॥

सताना जी जलाना देख सतियों का नहीं अच्छा ॥
कोई उतपात होजागा अरे बदकार जानेदे ॥ ५ ॥
तू पापी है नीच नर है निशाचर है पशू सम है ॥
न कर तकरार मेरे से अरे बदकार जानेदे ॥ ६ ॥

२३३

रैनमंजूषा व सेठ की बातचीत ॥

सेठ–पानसौ मोहन मेरे सारे भरे जरो माल से ॥
भोगती सुख क्यों नही कमबख्त मेरेमाल का ॥
रैन०–दोस्ती से जरके हो जाता है इनसां रूसियाह ॥
देख होता है सियाह दीवारो दर टकसाल का ॥
सेठ–अय प्यारी बार बार इंकार न कर मेरे दिलको बेजार
न कर रजामदी का जवाब दे तकरार न कर ॥

२३४

रैनमंजूषा का जवाब ॥

चाल–(नाटक) आली दरबार है महफिल सरकार है ॥

वही एक जवाब है जो सबमें नेक जवाब ॥
नार हूं पराई हूं–दुख दुख उठाई हूं ॥
कर्म की सताई हूं-दुखमें हू आप से ॥ १ ॥
मुसीबत में आई हूं—राजा की जाई हूं ॥
सतगुण कहलाई हूं-बचती हूं पाप से ॥ २ ॥
तेरे बेटे की नार हूं-जी से बेजार हूं ॥
सतियों में सार हू-डरती हूं आप से ॥ ३ ॥

शील, का शृंगार हूं—शुभ गुण का हार हूं ॥
असी कैसी धार हूं-देखे जो पाप से ॥ ४ ॥

२३५

रैनमजूषा व सेठकी बातचीन ॥

सेठ—दुख पाएगी मर जाएगी आखिर को पिचताना होगा ॥
रैन०—एक दिन है सबका मरना इस दुनिया से जाना होगा ॥

२३६

सेठजीका जवाब ॥ चाल (नाटक) मैं प्यारी कुरबान ॥

अय प्यारी कहा मान ।
मतवारी-हे बारी-मनहारी कहा मान ॥ टेक ॥
होवे-ख्वारी-बेजारी-तोहे भारी-हरआन ॥
पछतावे-दुख पावे-कलपावे-परेशान ॥ अय० ॥ १ ॥
छब न्यारी-दब सारी-तू-प्यारी-प्यारियां ॥
हित करके-चित करके-बोलो ना हँसियां ॥ अय० ॥ २ ॥

२३७

रैनमजूषाका जवाब ॥ चाल—(नाटक)

तू है बड़ा बदकार, रे तोहे नाहीं लाज. तोहे नाहीं शरमरे टेक॥
पुत्र बधू मैं लगु हूं तुम्हारी ।
तू मोहे समझे है नार ॥ रे तोहे० ॥ १ ॥

१—तलवार ।

पाप बोले मत बोले रे पापी।
    फटजागी धरती पहार॥ रे तोहे० ॥ २ ॥
रावण सिया लखी खोटी नज़र से।
    होगई लंक उजार। रे तोहे० ॥ ३ ॥
सारे करमों में पाप बुरा है।
    पापों में बुरी परनार ॥ रे तोहे० ॥ ४ ॥
अनुज वधू भगनी सुत नारी।
    कन्या बराबर चार॥ रे तोहे० ॥ ५ ॥

२३८

सेठ जी और रैनमज़ूरा के सवाल जवाब ॥ (शेर)

सेठ—समझ देखले प्यारी मनमें तू अपने ॥
    मेरे हाथसे अब रिहाई न होगी ॥
रैन०—जो देगा अज़ीयत तो पाएगा ज़िल्लत।
    बुराई में हरगिज़ भलाई न होगी ॥
सेठ—यह तो बतला फायदा क्या ऐसी नादानी में है।
रैन०—पेश आनी है वही जो कुछ कि पेशानी में है॥
सेठ—अरी क्या हाथसे अपने तू नाहक जान खोती है।
रैन०—तो क्या चारा है मै मजबूर हूं तकदीर सोती है।
सेठ—अय प्यारी जब मुसीबत जानपर तेरे बन आएगी।
    बता तो किस तरह तू अपनी फिर असमत बचाएगी।

२३९

रैनमञ्जूषा का जवाब ॥

चाल—कोई चातुर ऐसी सखी ना मिली ॥

अरे पापी तू मुझको डराता है क्या ।
सुझे मरने का कोई खतर ही नहीं ॥
कर ना खोटी नजर इस बदीसे गुज़र ।
बदी करनेका अच्छा समर ही नहीं ॥ १ ॥
तेरे घरमे सिठानी महा गुणवती ।
हाय उसपे भी तुझको सबर ही नहीं ॥
सुत नारपे तूने जो पाप धरा ।
क्या वह घोर नरकका खतर ही नहीं ॥ २ ॥
मैं सती हूं देख हाथ लाना नहीं ।
ऐसी धमकी सतीको दिखाना नहीं ॥
इस दरियामें आग न लगजा कहीं ।
मेरे शीलपे करना नज़र ही नही ॥ ३ ॥
देख रावणने सीतापे जुल्म किया ।
क्या नतीजा हुवा सोच मनमें ज़रा ॥
राज पाट गया बदनाम हुवा ।
मर नर्क गया क्या खबर ही नहीं ॥ ४ ॥
आवें इन्द्र नरेन्द्र जो मिलके सभी ।
क्या मजाल जो शीलको मेरे हतें ।
तेरी हसती है क्या श्रीपाल सिवा ।
मेरी नज़रों में कोई बशर ही नहीं ॥ ५ ॥

चाहे भय भेद साम और दाम दिखा ।
चाहे एक अनेक तू बात बना ॥
मेरे मनका सुमेरु हिलेगा नहीं ।
मेरे मनमें किसीका भी डरही नहीं ॥ ६ ॥

२४०

सेठजी और रैनमजूषा का गुस्सेसे सवाल व जवाब करना ॥ (वार्तालाप)

सेठ—अय कम्बख्त हट न कर इंकार छोड़ ॥
रैन०—अय बदबख्त जिद न कर तकरार छोड़ ॥
सेठ—मान ले ॥
रैन०—जान ले ॥
सेठ—आस न तोड़ ॥
रैन०—बदकारी छोड़ ॥
सेठ-मैं अभी तुझे मनालुंगा पकड़कर ।
रैन०—मैं अभी मरजाउंगी दरियामें पड़कर ॥
सेठ-(हाथ बढ़ाकर और रैनमजूपाके पकड़नेका इरादा करके)
देखूं तू कहां तक अपनी शील बचाएगी ॥

२४१

रैनमजूपा का घबराकर कांपना और अपने शीलके बचाने के वास्ते भगवानसे प्रार्थना करना ॥ चाल— नाटक (भैरवीं)

हाए मैं अनाथ नाथ किससे जा कहूं ॥
पापी है भारी यो निष्ट अनारी-निडर होके हाथ गहे ॥
बचे नहीं जो मेरा शील-मैं सिंधू मैं गिरके मरू ॥ हाए० ॥

२३९

रैनमजूषा का जवाब ॥

चाल—कोई चातुर ऐसी सखी ना मिली ॥

अरे पापी तू मुझको डराता है क्या।
मुझे मरने का कोई खतर ही नहीं ॥
कर ना खोटी नजर इस बदीसे गुज़र।
बदी करनेका अच्छा समर ही नहीं ॥ १ ॥
तेरे घरमे सिठानी महा गुणवती।
हाय उसपे भी तुझको सबर ही नहीं ॥
सुत नारपे तूनें जो पाप धरा।
क्या वह घोर नरकका खतर ही नहीं ॥ २ ॥
मैं सती हूं देख हाथ लाना नहीं।
ऐसी धमकी सतीको दिखाना नहीं ॥
इस दरियामें आग न लगजा कहीं।
मेरे शीलपे करना नज़र ही नहीं ॥ ३ ॥
देख रावणने सीतापे जुल्म किया।
क्या नतीजा हुवा सोच मनमें ज़रा ॥
राज पाट गया बदनाम हुवा।
मर नर्क गया क्या खबर ही नहीं ॥ ४ ॥
आवें इन्द्र नरेन्द्र जो मिलके सभी।
क्या मजाल जो शीलको मेरे हतें।
तेरी हसती है क्या श्रीपाल सिवा।
मेरी नज़रों में कोई बशर ही नहीं ॥ ५ ॥

चाहे भय भेद साम और दाम दिखा ।
चाहे एक अनेक तू वात वना ॥
मेरे मनका सुमेरु हिलेगा नही ।
मेरे मनमें किसीका भी डरही नहीं ॥ ६ ॥

२४०

सेठजी और रैनमजूषा का गुस्सेमें सवाल व जवाब करना ॥ (वार्तालाप)

सेठ–अय कम्बख्त हट न कर इंकार छोड़ ॥
रैन०–अय वदवख्त जिद न कर तकरार छोड़ ॥
सेठ–मान ले ॥
रैन०–जान ले ॥
सेठ–आस न तोड़ ॥
रैन०–वदकारी छोड़ ॥
सेठ–मैं अभी तुझे मनालुंगा पकड़कर ।
रैन०–मैं अभी मरजाउंगी दरियामें पड़कर ॥
सेठ-(हाथ बढाकर और रैनमजुषाके पकड़नेका इरादा करके)
देखूं तू कहां तक अपनी शील वचाएगी ॥

२४१

रैनमंजूषा का घवराकर कांपना और अपने शीलके वचाने के वास्ते भगवानसे प्रार्थना करना ॥ चाल— नाटक (भैरवी)

हाए मैं अनाथ नाथ किससे जा कहूं ॥
पापी है भारी यो निपट अनारी-निडर होके हाथ गहे ॥
वचे नहीं जो मेरा शील-मैं सिंधू में गिरके मरू ॥ हाए० ॥

२४२

नोट—रैनमजूषाकी पुकार सुनकर चक्रेश्वरी, पद्मावती, काली, ज्वाला, अम्बा, मालनी, पद्मनी, सात देवियों का आना और अंधकार करना सख्त हवा चलाना दरियामें तूफान करना तमाम जहाजों का डिग मगाना देवताओं का दौड़कर आना और एक देवता का आग जला कर सेठके मूंहमें देना और काला मूंह करना सब महाजनोंका घबराना और सेठको देखना ।। मानभद्र का आना और गदासे सेठको मारना। सेठका जमीनपर गिरजाना ।

२४३

मानभद्रका सेठकी छाती पर पांव भरकर धमकाना (चाल नाटक)

ओ बेग़ैरत पापी सूरत कामी मूरत जा गिर गिर जा ।
अपने मूंहपे खाकको मलकर नरकमें चलकर जलजलमरजा॥१
आन सताया तूने सतीको हाथ बढ़ा वह हाथ भी जलजा ॥
पापकी बात कहाजिस मूंहसेमूंहभीवह जलजाजीभभी जलजा२
ओ नाकाम-ओ बदनाम-ओ बदसरूर-बद अंजाम ॥

२४४

देवियोंका सेठको लानत देना और बारी बारी सेठके सिरमें जूती मारना

चक्रे० अरेकम्बख्त बेग़ैरततेरी औक़ातपर लानत (जूतीमारना)
अम्बा-तेरी औकातपर लानत तेरी इस बातपर लानत ॥
पदमा० कमीने बेहया कमअस्ल तेरी ज़ातपर लानत ॥
काली-तेरे अफ़आलपर लानत तेरी आदातपर लानत ॥
ज्वाला-तेरे ज़रो मालपर लानत तेरे इस कारपर लानत ॥

मालनी-तेरे व्योपार पर लानत है साहूकार पर लानत
पहुमती—तेरे परधान पर लानत तेरे दरबार पर लानत ॥
मानभद्र-तेरे मां बाप पर लानत तेरे घर बार पर लानत ॥

२४५

सेठजी का अफसोस करना ॥ (चाल-गजल)

गया पाप से सारा ही काम बिगड़ ।
ना इधर का रहा ना उधर का रहा ॥
सही जूती की मार ज़मी की रगड़ ।
ना इधर का रहा ना उधर का रहा । १ ॥
गया दोनों जहांन के काम से मैं ।
ना इधर का रहा ना उधर का रहा ॥
न धरम ही मिला न विसाले सनम ।
ना इधर का रहा ना उधर का रहा ॥ २ ॥

२४६

विदूगरू का आना और गाना ॥ (चाल-गजल)

अच्छा खूब हुवा तेरी थी यह सजा ।
जो इधर का रहा ना उधर का रहा ॥
जब न माना कहा अब पुकारे है क्यों ।
हा इधर का रहा ना उधर का रहा ॥ १ ॥
हुई कैसी गती देखलो तुम सभी ।
ना इधर का रहा ना उधर का रहा ॥

कोई भूल के करना न ऐसा कभी ।
यह इधर का रहा न उधर का रहा ॥ २ ॥

२४७

सब महाजनों का रैनमंजूषा के पाओं में गिरना और अर्दास करना ॥

चाल—(गजल) बजारा नामा ॥

अय रैनमंजूषा महा सती, अब एक हमारी अर्ज सुनो ॥
है शरण तुम्हारी ली हमने, टुक कोप तजो मन शांत करो ॥१॥
तू जिन शासन व्रतलीन सही, तूने ही शील का भार धरो ॥
पापी न लखी माहिमा तेरी, जैसा था किया वैसाही भरो ॥२॥
या पापी के संग डूबे घर और बार हमारे जाते हैं ॥
सब बंधू भाई देख सती, बिन कारण मारे जाते हैं ॥ ३ ॥
अब करुणा धारो रोस निवारो, सब मिल अर्ज सुनाते हैं ॥
डूबत नय्या को पार लंघादो, चर्णन सीस निवाते हैं ॥ ४ ॥
तू दयावती है महा सती, यश जैन धरम का बिस्तारा ॥
होगया निश्चय सत जैन धरम, है दुख हारा सुख कर्तारा ॥५॥
अब कर कृपा धरकर करुणा, हमरा भी कीजे निस्तारा ॥
तेरा गुण गावें हाथ जोड़, अर्दास करें बारम बारा ॥ ६ ॥

२४८

रैनमंजूषाका कोप दूर करना और दया करके उपसर्ग दूर करने के लिये और सेठजी को छोडने के लिये प्रार्थना करना ॥

चाल—(कवाली) सखी सावन बहार आई झुलाए जिसका जी चाहे ॥

सुनो अय देव गण तुमने करी मेरी सहाई है ॥

तुम्हे धन्य है सती की आनकर असमत बचाई है ॥ १ ॥
रखा सजम धरम मेरा बढ़ाई शील की महिमा ॥
सती की लाज रख जिन धर्म की अतशय दिखाई है ॥ २॥
पाप की बात पापी ने कही थी जैसी कुछ मुझसे ॥
आपने आनकर वैसी गती इसकी बनाई है ॥ ३ ॥
क्षमा अब कीजिये मनमें निवारो कष्ट को जल्दी ॥
बिचारे दीन दुखियों पे दया मन मेरे आई है ॥ ४ ॥
खोल दो बंद इसके भी धरम का बाप हैं मेरा ॥
सजा अबतो बहुत इसने करम अपने की पाई है ॥ ५ ॥

२४९

मन देवी देवताओं का उपसर्ग दूर करना और रैनमंजूषाको तसल्ली
देकर चला जाना ॥

चाल नाटक (भैरवीं)—दिन रतिया ना छेडो सय्या छांडो बय्यां ॥

सत सतियों का—देखो सखियां—खोलो अखियां—
जिनमत रखियां—हो रही खुशियां हां ।
हम लागें सारी पय्यां—तोरी लेवें री बलय्यां ॥ सत० ॥
रैनमंजूषा सुन तू प्यारी-पती मिले तेरी बलधारी ॥
राज करेगी तू सुखकारी-सुख में बीते रैन सारी ॥
गर अब आ-कोई बिपता-हम सब आ देवेंगे मिटा ॥
हां हां हां हां हां हां हां हां ॥ सत० ॥

२५०

मय महाजनों का किसमत और शीलका निश्चय करना और मिल कर गाना

चाल नाटक--किसमत सब पर लाती आफत ॥

जैसी करनी वैसी भरनी, निश्चय नहीं तो कर कर देख ॥
सुरगत भी है दुरगत भी है, सुख दुख भी है मर कर देख ॥
एक दिन टूटे आपही फूटे, जाम गुनाह का भर कर देख ॥
है तु बशर परमेश्वर होजा, दूर हिये से शर कर देख ॥
सतियों को बद निगाह । है देखना बुरा ॥
माता बहिन सुता । सम जानियो सदा ॥
जिसने खुदी करी । मनमें बदी धरी ॥
आखिरबिपत भरी । आफत में जा पड़ी ॥ कर कर देख जैसी०॥

(ड्रोप सीन)

इति न्यामतसिंह रचित मैनासुन्दरी नाटक का
चौथा ऐक्ट समाप्तम् शुभम्

मैना सुन्दरी नाटक

पांचवां ऐक्ट

रैणमंजूषा और धवल सेठ का कुमकुमद्वीप में पहोंचना और वहां के राजा और श्रीपाल से मिलना, राजा श्रीपाल का भांड बगोवा करवाना और शूली का हुकम दिलवाना, गुणमाला का रैनमंजूषा से श्रीपाल का हाल पूछना और अपने पिता को बताना, राजा का श्रीपाल से मुआफी मांगना, धवल सेठ का मारना, श्रीपाल का मैनासुन्दरी को याद करना और उज्जैन को रवाना होना ॥

सेठ-(श्रीपालको गौरसे देखकर पहिचानना और बिदा मांगना) महाराजकी कृपासे सब प्रकार से आनन्द है अब जाने की आज्ञा दीजिये ॥

राजा-अच्छा सेठजी आप जाइये ॥ (सेठका चला जाना)

सीन ३६

जहाज़ों का परदा

२५२

धवल सेठका अपने जहाज़ों में आना और मन्त्रियों से बात चीत करना

चाल—(इन्दर सभा) अरे लाल देव इस तरफ जल्द आ ॥

सुनो मंत्री ध्यान करके ज़रा ॥
यकायक यह क्या माजरा होगया ॥ १ ॥
मेरी अक्ल हैरान है इस जगह ॥
विचारा था क्या और क्या होगया ॥ २ ॥
श्रीपाल डाला समन्दर के बीच ॥
न मालूम कैसे रिहा होगया ॥ ३ ॥
रसाई हुई कैसे दरबार में ॥
किया क्या जो राजा फिदा होगया ॥ ४ ॥
कोई हाल जल्दी बताए मुझे ॥
मेरा तीर कैसे खता होगया ॥ ५ ॥

२५३

एक मन्त्रीका हाल बताना । चाल—नंबर २५२

करूं सेठजी हाल इसका बयां ।
यह आया समुद्रको तिरके यहां ॥ १ ॥
दी गुणमाला राजाने लड़की इसे ।
बना रक्खा है घरजमाई इसे ॥ २ ॥
श्रीपाल है सेठजी याका नाम ।
महा पुन्यवान और बड़ा नेकनाम ॥ ३ ॥

२५४

सेठजी-वार्तालाप अय मंत्रीयो यह श्रीपाल बड़ा पुन्यवान और बलवान पुरुष है मैंने इसको समुद्रमें डाला और इसकी रानीको सताया अब इसके हाथ से बचना कठिनहै। मेरा चित्त बेचैन है जल्दी कोई ऐसा उपाय करो जो इसके हाथोंसे जान बचे ॥

२५५

सुमतप्रकाश मन्त्री की राय ।
चाल—यह कैसे बाल बिखरे हैं०

हमारी रायमें श्रीपालपे जाना मुनासिब है ॥
उसीके पाओं में सरको झुकाना ही मुनासिब है ॥ १ ॥
वह है गम्भीर गुणसागर क्षमा सागर दयाधारी ॥
क्षमा श्रीपालपे जाकर कराना ही मुनासिब है ॥ २ ॥
सेठजी यह यकीं करलो करेगा मान वह तेरा ॥
तुम्हें संदहको दिलसे हटाना ही मुनासिब है ॥ ३ ॥

२५६

कुमतप्रकाश मन्त्रीकी राय ॥ चाल-नम्बर २५५

हमारी रायमें श्रीपाल पे जाना नहीं अच्छा ॥
किसी दुश्मनके धोके जालमें आना नहीं अच्छा ॥ १ ॥
सुमतपरकाश नादां है भला यह मंत्र क्या जाने ॥
सीस चरणों में बैरीके कभी लाना नहीं अच्छा ॥ २ ॥
जो अपराधी हो तुम उसके तो वह बखशेगा क्यों तुमको ॥
खयाल ऐसा कभी दिलमें ज़रा लाना नहीं अच्छा ॥ ३ ॥
करो तदवीर कुछ ऐसी वह मारा जाय जल्दी से ॥
निशां दुश्मनका बाक़ी कोई रहजाना नहीं अच्छा ॥ ४ ॥
यह काम हो सकता है भांडोंमे जल्दी से बुला लीजे ॥
यह है तदवीर लासानी शुबा लाना नहीं अच्छा ॥ ५ ॥

२५७

सेठका जवाब ॥ (वार्तालाप)

अय कुमतप्रकाश आपकी राय बहुत ठीकहै हम आपसे बहुत प्रसन्नहैं, लो यह दस हज़ार रुपया इनाम देते हैं। अय महाजनों तुम क्यों चुप हो तुम भी अपनी राय ज़ाहिर करो ॥

२५८

महाजनों की राय ॥ चाल अपनी हमें भक्तोंका कुछ दीजे दान ॥

सेठ हमारा कहना, अब लीजे मान ॥ टेक ॥
मत मनमें बदी बिचारो ॥ टुक सुमत हिये में धारो ॥
सभोंका हो कल्याण ॥ सेठ० ॥ १ ॥

वह श्रीपाल सुखकारी ॥ है समझो धरम अवतारी ॥
दया सागर गुण खान। सेठ० ॥ २ ॥
जा खता माफ़ करवाओ ॥ नहीं मनमें शंका लाओ ॥
रखेगा तुमरा मान ॥ सेठ० ॥ ३ ॥
नहीं सुनो जो बात हमारी ॥ पड़जागी विपता भारी ॥
तुम्हारी होगी हान ॥ सेठ० ॥ ४ ॥

२५९

कुमतप्रकाश और सेठजीकी बात चीत ॥

सेठ०–अय कुमतप्रकाश इन महाजनों ने जो कुछ कहाहै इस में तुम्हारी क्या राय है ॥

कुमत०–हे, सेठजी आपसे बढ़कर हमारी बुद्धि नहीं आप ही अपने मनमें विचार करलें।

सेठ०–अरे जो सेठजी आपही मंत्र करेंगे तो मंत्रियों को कौन पूछेगा तुम अपनी साफ़ साफ़ रायदो कोई शंका मतकरो

कुमत०–(दोहा) सुनो सेठजी कानदे बात कहूं एक सार ॥
तुम उन सागर डारियो, और सताई नार ॥ १ ॥
वह तेरा बैरी भया, देखो शोच बिचार ॥
बदला तुमसे लेयगा, टले नहीं जिनहार ॥ २ ॥
ताते बैरी मारना, जब लग पार बसाय ॥
साम दाम और दंडदे, करके भेद अपार ॥ ३ ॥

सेठ०–(धार्तालाप) बस अब हम और किसी की बात नहीं सुनेंगे कुमतप्रकाशने जो कुछ कहा है

करेंगे । कुमतप्रकाश जाओ भांडों को जल्दी बुला लाओ ।

कुमत०—बहुत अच्छा सेठजी अभी बुलाकर लाता हूं ॥

(चला जाना)

२६०

कुमतप्रकाश का भांडों के सरदारको बुलाकर लाना और बातचीत करना ॥

कुमत०—सेठजी यह भांडों का सरदार हाज़िर है ।

सेठ०अय भांडों के सरदार देखो श्रीपाल जो राजा के दरबार में है तुम उसको अपना बेटा होना ज़ाहिर करो लो तुमको (टके देकर) दो लाख टके देते हैं अगर तुमने यह काम पूरा किया तो हम और भी इनाम देंगे ॥

सरदार—बहुत अच्छा सेठजी हम अभी जाते है अपना कमाल दिखाते हैं और आपका काम बनाते हैं ॥

(चला जाना)

सीन ३७

राजा के दरबार का परदा

२६१

भांडों का राजा के दरबार में पहोंचना और गाना ॥ (चाल—नाटक)

आहाहा—आहाहा—आहाहा !!!

आली दरबार है-सबकी सरकार है ॥
फूला गुलज़ार है—हरदम बहार है ॥ १ ॥
राजा दिल शाद हो-साहिब औलाद हो ॥
दुश्मन बरबाद हो घर घर पुकार है ॥ २ ॥
लालों के लाल हैं-साहिब जमाल हैं ॥
रखते कमाल हैं-दुनिया निसार है ॥ ३ ॥
भांड़ों का रंग देखो-सारे हैं दंग देखो ॥
गाने का ढंग देखो-महफ़िल तय्यार है ॥ ४ ॥

२६२

एक भांड—(वार्तालाप) अबे भांडों तुमने क्या तार पार लगाई है कोई ठुमरी ठप्पा भैरवी टैरवी गाओ महाराज का दिल खुश करो ॥

२६३

भांडों का नाचना और गाना ॥

चाल-इस झाडी के बेर मत तोडो सनम कांटा लगजागा ॥

परनारी का रूप मत देखो धरम सारा नशजागा ॥ टेक ॥
पर धन कंचन पर महलन पर ॥
जिया को मत ललचावे पाप में फँस जागा ॥ परनारी० १ ॥
झूट कपट चोरी और हिंसा ॥
जूवा खेलनको मत जावे नरक में बस जागा ॥ परनारी० ॥ २ ॥
सुलफा गांजा भांग और मदरा ॥
प्यारे नशे को मत पीवे ज्ञान तेरा नश जागा ॥ परनारी० ३ ॥

वेश्या काला नाग समझियो ॥
प्यारे उधर मत जावे जिया तेरा डस जागा ॥ पर० ॥ ४ ॥
न्यामत बोवो फूल धरमका ॥
पापका कांटा मत बोवो पांवमें घुस जागा ॥ पर० ॥ ५ ॥

२६४

राजा-(वार्तालाप) वाह वाह कंवर श्रीपालजी इनको हमारी तरफ़से इनाम दो ॥

श्रीपाल—(इनाम देकर) यह लो राजा साहिब इनाम देतेहैं

२६५

(भांडोंका श्रीपालको देखकर अपना नेग जाहिर करना । वार्तालाप)

१ बूढ़ी स्त्री-(गले में हाथ डालकर) अरे मेरा बेटा तू कहां!
२ स्त्री-(सिरपर हाथ रखकर) अरे मेरा लाल तू कहां गया था!
१ लड़की-(हाथ पकड़कर) रे मेरा बीरन !
१ भांड-(छातीसे लगाकर) रे भाई श्रीपाल !
२ भांड-(सिरपर हाथ रखकर) रे बेटा श्रीपाल तू समुद्रमें कैसे निकला !
२ लड़की-(चिमटकर) रे मेरी मां का जाया !
३ स्त्री-(कमरपर हाथ रखकर) रे मेरी बीबीका जाया !
४ स्त्री-(छातीसे लगाकर) रे मेरे अंधेर घरका चांदना !

२६६

चाल-(नाटक) मन हर लीनों थांके सांवरया कि जबसे दर्शन दीनो ॥
सब भांडोंका श्रीपालको पकड़कर खुश होना और गाना ॥

तन मन वारें बेटा सांवरिया कि तूने दर्शन यह दीना ॥
सागरयासे कैसे निकस आयो प्यारे ॥ तन० ॥ टेक ॥
प्यारा प्यारा प्यारा है प्यारा है दिन ॥
भटक भटक मिले तेरे दर्शन ॥ सागरया० ॥ १ ॥
शुभ घड़ी शुभ दिन शुभ यह मिलन ॥
धन कंचन करें तोपे अर्पण ॥ सागरया० ॥ २ ॥
थई थई थई थई नाचें हो मगन ॥
हरष हरष गाएं राजाके गुण ॥ सागरया० ॥ ३ ॥

२६७

राजाका यह हाल देखकर हैरान होना और भांडों से कहना ॥

अरे गुस्ताख भांडों यह क्या माजरा है हमसे साफ़ साफ़ बयान करो ॥

२६८

एक स्त्रीका श्रीपालको भांड बगोचा करना (इसकी टेक सब भांड गावें)
चाल—सुनो तुम भगके लच्छन सुनो तुम भगके लच्छन ॥

सुनो इस पूतके लच्छन सुनो इस पूतके लच्छन ॥ टेक ॥
दोहा-- मेरे दो लड़के भए, दोनों पूत कपूत ॥
गोबरधन श्रीपाल सो, बारा मुट्ठी ऊत ॥ सुनो० ॥ १ ॥
एक दिन आपस में लड़े, दोनों ऐसे नीच ॥
श्रीपाल गुस्सा किया, पड़ा समन्दर बीच ॥ सुनो० ॥ २ ॥

गोवरधन भी मर गया, मरा हमारा कंत ॥
मैं दुखयारी रह गई, काह कहूं विरतंत ॥ सुनो० ॥३॥
धन यह अवसर धन घड़ी, धन तेरा दरबार ॥
सूरत बेटेकी लखी, वारूं सब घर बार ॥ सुनो० ॥ ४ ॥
ना धन दौलत चाहियें, ना चाहिये भंडार ॥
बेटा हमको दीजिये, पाए लाख हज़ार ॥ सुनो० ॥५॥

२६९

राजाका यह माजरा देखकर हैरान होना और श्रीपाल से पूछना ॥ (शैर)

क्यों रे ओ श्रीपाल कहो क्या यह बात है ॥
हैरां है अक्ल मेरी तआज्जुब की बात है ॥ १ ॥
तूने तो अपने आपको राजा बताया था ॥
क्या झूठ था वह सारा जो तूने सुनाया था ॥ २ ॥
अब ठीक हाल कुलका तुम अपने बयां करो ॥
क्या माजरा है साफ मेरे से अयां करो ॥ ३ ॥

२७०

शैर—यह हाल देखकर श्रीपाल मनमें विचार करने लगा कि देखो कर्मों की कैसी विचित्र गति है कर्म बड़े बलवान है सब सुरासुर कर्मों के वसमें है जैसे कर्म नचावें वैसे नाचना पडता है आज मेरे अशुभ कर्म का उदय है अब भी यदि मैं अपना बल प्रकाश करू तो इन सबको छिनमें मार डालू परन्तु देखू तो सही अब आगे कर्म क्या दिखलाते हैं, ऐसा विचार करके राजा को जवाब देना ॥

चाल—यह कैसे बाल बिखरे है० ॥

सुनो राजा गौर करके करम का ढंग न्यारा है ॥
नहीं होता है वह हरगिज़ कि जो मनमें बिचारा है ॥ १ ॥

कहीं साया किसी जापे रोशनीका उजारा है ३
कहीं रोना, खुशीका फिर कहीं बजता नकारा है ॥ २
धरे रहते हैं कुल दलबल कि जब तक़दीर फिरती है ॥
अटल है कर्मकी रेखा यही निश्चय हमारा है ॥ ३ ॥
यह चाचा ताउ है मेरा यह माता बन्धु और भाई ॥
समझ लीजे यकीं कीजे यह सब कुनबा हमारा है ॥ ४
न मैं ब्राह्मण न क्षत्री हूं न साहूकार राजा हूं ॥
बंश भांडोका अय राजा समझ लीजे हमारा है ॥ ५ ॥

२७१

राजाका कोप करना और श्रीपालको शूलीका हुकम देना (वार्तालाप)

अरे कम्बख्त पापी श्रीपाल तूने धोका देकर मेरी राज कन्या को व्याहा मेरी इज्ज़तको खाकमें मिलाया मुनासिब है कि तुझको शूलीकी सज़ा दीजाय हरगिज तेरी मुआफ़ी न की जाए ॥ फ़ौरन जल्लादोंको हाज़िर किया जाए ॥

२७२

जल्लादों का आना और मन्त्री का राय पेश करना (शेर)

न जल्दी कीजिये राजा गौर करना मुनासिब है ॥
मुआमला है बड़ा भारी न्याय करना मुनासिब है ॥

२७३

राजा-(वार्तालाप) अय मंत्री जब श्रीपाल खुद इक़रारी है तो फिर इसमें विचार करनेकी क्या ज़रूरत है अय जल्लादो इस पापी श्रीपालको फ़ौरन गिरिफ़तार करो शूलीपर धरो तनसे सर जुदा करो।

(गिरफ़तार करके लेजाना)

सीन ३८

रास्ते का परदा ॥

२७४

श्रीपाल का रास्ते में अफसोस करना ॥

चाल—कत्ल मत करना मुझे तेगा तवर से देखना ॥

अवतो यारो शूली चढ़ने के लिये जाते है हम ॥
अपनी क़िसमत आजमाई के लिये जाते है हम ॥ १ ॥
जान का दुशमन मेरा सारा ज़माना होगया ॥
ढंग यही पाते हैं हम हां जिस जगह जाते हैं हम ॥ २ ॥
रंग किसमत ने मेरी क्या क्या दिखाए देखिये ॥
भेद यह क्या है नहीं कोई खबर पाते हैं हम ॥ ३ ॥
होश है जबसें सँभाला सुख कभी पाया नहीं ॥
रंजोग़म क्या क्या उठाते देखलो आते है हम ॥ ४ ॥
ग़म पिता मां की जुदाई कुष्ट की विपता सही ॥
वह जमाना याद करके दिलको तड़पाते हैं हम ॥ ५ ॥
आया जब जंगल में मैं मैना सती को छोड़ कर ॥
देखा तो एक भेट देवी को दिये जाते हैं हम ॥ ६ ॥
जंग चोरों से हुवा और फिर समन्दर में गिरा ॥
आज नाहक़ किस लिये शूली दिये जाते हैं हम ॥ ७ ॥

चलिये अबके और किसमत आज़माई कीजिये ॥
रंजोग़म मरने का कुछ दिलमें नहीं लाते हैं हम ॥ ८ ॥
(रवाना होना)

सीन ३९

गुणमाला के महल का परदा ॥

२७५

बांदी का गुणमाला के पास जाना और हाल सुनाना ॥
चाल—सखी सावन बहार आई झुलाए जिसका जी चाहे ॥

छोड़ शृंगार को रानी ज़रा सुनले ध्यान करके ॥
तेरा भरतार मरता है खबर ले उसकी जा करके ॥ १ ॥
भांड दरबार में आए लखा श्रीपाल को जिस दम ॥
कहा बेटा लगे रोने गले अपने लगा करके ॥ २ ॥
हुवे सुन कर खफ़ा राजा दिया है हुक्म शूली का ॥
गए जल्लाद ले श्रीपाल को इसदम पकड़ करके ॥ ३ ॥

२७६

गुणमाला का जवाब ॥ चाल—नंबर २७१

अरी बांदी सुनाई क्या खबर तूने यह आ करके ॥
मुझे बे मौत मारा तूने यह बातें सुना करके ॥ १ ॥
मेरा बालम है कोटीभट मुकट धारी राजवंशी ॥

हो कैसे भांड का बेटा तू क्या बकती है आ करके ॥ २ ॥
नहीं ताकत किसी की है उसे शूली चढ़ाने की ॥
यकीं आता नहीं मुझको दिखा मौक़े पे जा करके ॥ ३ ॥
मै खुद चलती हू झूठी बात गर तेरी मैं पाउंगी ॥
तुझे मरवायदुंगी बान्दी खाल में भुस भरा करके ॥ ४ ॥
(रवाना होना)

सीन ४०

शूली का परदा

२७७

जल्लादों का श्रीपाल को शूली के पास ले जाकर खड़ा करना
श्रीपाल का कर्मों की निन्दा करना और अफसोस करना ॥
चाल—(नाटक) हाय मुझे दर्दे जिगर ने सताया ॥

हाय मुझे कर्मों ने कैसा सताया ॥
कोई प्यारा नहीं-कोई चारा नहीं-न सहारा किसी ने दिलाया
किया मुझको अकेला बाप को सरसे हटा करके ॥
निकाला घरसे मुझको कुष्ट को तन में लगा करके ॥
कहां माता कहां गुणमाला मैना रैनमंजूषा ॥
खबर आया नहीं क्या मुझको दरया में गिरा करके ॥
राजा जल्लादर मिला-सेठ सय्याद मिला-हर एक उस्ताद
मिला—सख्त बेदाद मिला ।

न कोई आदिलो मुनसिफ़ न यगाना देखा ॥
ग़ौर कर देखा तो फ़ितरत का ज़माना देखा ॥
हाय कर्मों ने रहम न खाया ॥ कोई प्यारा० ॥

२७८

गुणमाला का बान्दी के साथ शूली के पास पहोंचना और श्रीपाल से हाल पूछना ॥

चाल—सोरठवा प्यारी बोली रे भरने दे जलनीर ॥

गुणमाला अरजी करती जी सुन लीजे भरतार ॥ टेक ॥
तुम कोटीभट लब धारी-यह कैसी बात विचारी ॥
किम निन्दा हुई तुम्हारी जी-राजा के दरबार ॥ १ ॥
तुम किसके सुत कहलावो-मेरा सब संदेह मिटावो ॥
मोहे सांची बात बतावो जी ज़रा दया सु मनमें धार ॥ २ ॥

२७९

श्रीपाल का जावब

चाल—सखी सावन बहार आई झुलाए जिसका जी चाहे ॥

बताएं क्या तुम्हें प्यारी पता अपना निशां अपना ॥
बस अबतो है नहीं कोई निशां अपना मकां अपना । १ ॥
न भाई बंध है कोइ न कोई आशना अपना ॥ .
बिगाने देश में प्यारी कौन है महरबां अपना ॥ २ ॥
ज़मीं बैरन मुख़ालिफ़ लोग दुशमन आसमां अपना ॥
ठिकाना अब कहो तुम ही बतावें तो कहां अपना ॥ ३ ॥
सदा यूं ही बगूले की तरह फिरते हैं हम मारे ॥
नहीं मालूम क्यों बैरी हुवा सारा जहां अपना ॥ ४ ॥

भांड भाई पिता माता हमारी ज्ञात भांडों की ॥
समझले प्यारी भाडोंका है सारा खानदां अपना ॥ ५ ॥
समझते थे कि देखेंगे यहां आराम दुनियाका ॥
मगर अब होगया मालूम था झूठा गुमां अपना ॥ ६ ॥

२८०

गुणमालाका जवाब ॥ चाल-कत्ल मत करना मुझे तेगोतवरसे देखना ॥

कौन कहता है तुझे तू भांड बदकारों में है ॥
तू तो सरदारों में है बलके ताजदारों में है ॥ १ ॥
भांडका कोई निशां तुझमें नजर आता नहीं ॥
तू कोई राजा महाराजा शहर यारों में है ॥ २ ॥
किस तरह मानूं तुम्हारी बात मन लगती नहीं ॥
तेज शाही कब तुम्हारा सा भांडकारों में है ॥ ३ ॥
तु महा गुणवन्त कोटीभट तुम्हारा नाम है ॥
कौन कहदेगा कि तू बदकार मक्कारों में है ॥ ४ ॥
खुबसूरत राज बंशी तेरे चेहरे से अयां ॥
कौन गुण तुझमें नहीं जो शाह सरदारों में है ॥ ५ ॥
भांडका लड़का भला कैसे समंदरको तिरे ॥
तू कलाधारी त्रिलाशक धर्म अवतारों में है ॥ ६ ॥
सांच बतलादो वगरना प्राण तजदूंगा अभी ॥
मैं सती हूं सत मेरे रग रगके हर तारों में है ॥ ७ ॥

२८१

श्रीपालका जवाब ॥

चाल—(इन्द्रसभा) मामूर हूं शोखी से शरारत से भरी हूं ॥

गुणमाला प्यारी रंजको मनसे निवार दे ॥
 टुक थाम दिलको अपने तू सब्रो क़रार दे ॥ १ ॥
गर हाल मेरा सुनेको तेरा विचार है ॥
 तो सुनले अपनी जान क्यों करती निसार है ॥ २ ॥
आए हैं कुछ जहाज़ यहां दरयाके किनारे ॥
 दो रोज़से ठैरे हैं तेरे देश में सारे ॥ ३ ॥
है रैनमंजूषा वहां एक राजदुलारी ॥
 तू उससे जाके पूछले सब बात पियारी ॥ ४ ॥
वह हाल साफ़ साफ़ बतादेगी हमारा ॥
 एक दममें शुबा मनका मिटा देगी तुम्हारा ॥ ५ ॥

२८२

गुणमाला चांडालको कत्ल न करनेका हुक्म सुनाना और बान्दी को साथ लेकर रैनमञ्जूषा से मिलने को रवाना होना ॥

चाल—इन्दर सभा—अरे लालदेव इस तरफ जल्द आ ॥

अय क़ातिल ज़रा सुन इधर देके कान ॥
मैं जाती हूं दरयापे लेने बयान ॥ १ ॥
न दूं हुक्म जबतक कोई आनके ॥
नहीं कत्ल करना तू हरगिज़ इसे ॥ २ ॥

(चला जाना)

सीन ४१

रैनमंजूषा के जहाज़ का परदा

२८३

गुणमाला का रैनमंजूषा को पुकारना ॥ (वार्तालाप)

अरी श्रीमती रैनमंजूषा-अरी सती रैनमंजूषा—हे प्यारी रैनमंजूषा कहीं हो तो बोल अरी बहन रैनमंजूषा जो कहीं सुनती हो तो बोल ॥

२८४

रैनमंजूषा का पता न लगने पर गुणमाला का अफसोस करना ॥

चाल—सखी सावन बहार आई झुलाए जिसका जी चाहे ॥

कहां जाऊ किधर ढूंढूं न सूरत देख पड़ती है ॥
समझले दिलमें गुणमाला तेरी तकदीर फिरती है ॥१॥
बोल दे दे के मै हारी जवाब आया नहीं अब तक ॥
किसी की कुछ नहीं चलती है जब तकदीर फिरती है ॥२
हुई गर देर तो कातिल करेगा कत्ल बालम को ॥
करूं क्या अकल मेरी यहां नहीं कुछ काम करती है ॥३॥
पियारी रैनमजूपा अगर कहीं हो तो बोलो तो ॥
खड़ी गुणमाला तेरी याद सौ सौ बार करती है ॥ ४ ॥

२८५

गुणमाला की आवाज़ सुनकर रैनमजूषा का जहाज़ पर खड़ी होकर देखना और पूछना॥ चाल—नंबर २८४

बहन तू कौन है और किस लिये बेज़ार फिरती है ॥
मुसीबत क्या पड़ी तुझपर जो यूं फ़रयाद करती है ॥ १ ॥
मैं खुद बेचैन हूं दुखिया हूं कर्मों की सताई हूं ॥
मैं जो कुछ हूं सो हाज़िर हूं कहो क्यों याद करती है ॥ २ ॥

२८६

गुणमाला (शैर)

ज़ात श्रीपाल की क्या है बता दीजे कृपा करके ॥
मेरा दुख दर्द है यह ही मिटा दीजे दया करके ॥

२८७

रैनमजूषा (शैर)

सखी तू कौन है क्या दुख तुझे पहले बता मुझको ॥
तू क्यों पूछे है मेरे से हाल सारा सुना मुझको ॥ १ ॥
तू क्या श्रीपाल को जाने ज़रा यह तो जिता मुझको ॥
असल जो बात है कहदे न दे धोका ज़रा मुझको ॥ २ ॥

२८८

गुणमाला का हाल बताना ॥
चाल—(नाटक हरीश्चन्द्र) दिये दुख फलक ने भारे ॥
चले छोड के राज बिचारे ॥

मरी मैं अबला दुखयारी—क्या पूछेगी बात हमारी ॥ टेक ॥
सुन पिता मेरा भूपाला—है नाम मेरा गुणमाला जी ॥

वनमालाकी र जदु री क्या० ॥ १ ॥
श्रीपाल एक सुन्दर काया—वह सागर तिरकर आयाजी।
भयो नगरमें अचरज भारी ॥ क्या० ॥ २ ॥
सो वोही पिता मन भायो–मम तासंग व्याह रचायो जी ॥
भई वह ही जो मुनि उचारी ॥ क्या० ॥ ३ ॥
भोगे सुख दिन दो चारे–अब फिर गए भाग हमारे जी ॥
नहीं मुखसे जाए उचारी ॥ क्या० ॥ ४ ॥
एक भांड अखाड़ा आया—श्रीपालको पुत्र बताया जी ॥
कहा, है संतान हमारी ॥ क्या० ॥ ५ ॥
सुन राजा कोप उपायो–झट कत्लका हुक्म सुनायो जी ॥
हुई शूलीकी अब तय्यारी ॥ क्या० ॥ ६ ॥
अब सांच बात कह दीजे–मोहे भीक नाथकी दीजे जी ॥
मैं आई हूं शरण तिहारी ॥ क्या० ॥ ७ ॥

२८९

रैनमजूषा का जवाब देना और दोनोंका रवाना होना

चाल—कत्ल मत करना मुझे तेगो तवर से देखना ॥

ज्ञात क्या श्रीपालकी है तुझको जितलादूंगी मैं ॥
चल पिताके सामने सब हाल बतलादूंगी मैं ॥ १ ॥
रगते क्या क्या दिखाई हैं करमने आनके ॥
खैंचकर नकशा सरे दरबार दिखलादूंगी मैं ॥ २ ।
कहने सुननेसे किसीके नेको बद होता नहीं ॥
भांड है या है वह राजा साफ जितलादूंगी मैं ॥ ३ ॥

झूंट सच जो कुछ कि है मालूम वहां होजायगा ॥
खोलकर अच्छा बुरा सब हाल दिखलादुंगी मैं ॥ ४ ॥
ध्यान धर जिनराजका और धर्मपे निश्चय करो ॥
साचको नहीं आंच यह चलकरके बतलादुंगी मैं ॥ ५
छोड़दे सब रंजोग़म दिलको तसल्ली दीजिये ।
तेरे बालमको रिहाई जाके दिलवादुंगी मैं ॥ ६ ॥
(दोनों का चला जाना)

सीन ४२

कुमकुमद्वीप के राजा के दरबार का परदा

२९०

रेनमजूषा और गुणमालाका दर्बार में पहोंचना और वार्तालाप करना ॥

गुण०—पिताजी हमारे नगरमें सागरके तीर जो जहाज आए हैं उनमें यह एक सूरतकी प्यारी सुन्दर नारी है जो आपको श्रीपालका असली हाल बतलावेगी ॥

राजा–(रैनमंजूषा से) हे देवी अपने हृदय में सत भाव को धारण करो और श्रीपालका सारा चरित्र मेरे से वर्णन करो ॥

२९१

रैनमंजूषा का जवाब ॥

चाल—कत्ल मत करना मुझे तेगोतवर से देखना ॥

क्या कहूं यह माजरा क्योंकर हुवा क्या होगया ॥
बस समझलो जैसा कुछ होना था वैसा होगया ॥ १ ॥
हाल इस श्रीपाल का मेरे से क्या पूछो हो तुम ॥
जैसा किसमत में लिखा था होगया सो होगया ॥ २ ॥
था विचारा कुछ, नतीजा और ही कुछ होगया ॥
यार दुशमन बन गया अपना पराया होगया ॥ ३ ॥
कौन लाएगा यकीं कहने पे मेरे इस जगह ॥
आपही कहदेंगे सुनकर कैसे ऐसा होगया ॥ ४ ॥
मेरे ही कपड़े बदन के मेरे दुशमन हो रहे ॥
फिर शहादत कौन देवेगा कि ऐसा होगया ॥ ५ ॥

२९२

राजा का जवाब (शैर)

बेटी तू इस तरह का न दिलमें खयाल कर ॥
सब दूर अपने दिलसे यह रंजो मलाल कर ॥ १ ॥
जो बात अस्ल है वह मेरे से तू अयां कर ॥
मुझको यकीं है बात का तेरी तू बयां कर ॥ २
हुक्म एक दम जज़ा व सज़ा का सुनाऊंगा ॥
पानी को अलग दूध से करके दिखाऊंगा ॥ ३ ॥

२९३

रेनमंजूषा का हाल बताना ॥

चाल—(इन्दरसभा) मामूर हूं शोखी से शरारत से भरी हूं ॥

सुनिये पिताजी हाल श्रीपाल सुनाऊं ॥
जो माजरा है साफ़ तुम्हें सारा बताऊं ॥ १ ॥
अंगदेश में इक शहर है चम्पापुरी है नाम ॥
राजा वहां का अरिदमन था सो नेकनाम ॥ २ ॥
उसका यह श्रीपाल पियारा कुमार है ॥
कहते हैं कोटीभट इसे राजों में सार है ॥ ३ ॥
उज्जैन के राजा का जमाई है जानियो ॥
मैना सती का कंथ है सच बात मानियो ॥ ४ ॥
है कनककेतु राजा हंसद्वीप का भारी ॥
मैं उसकी सुता और श्रीपाल की नारी ॥ ५ ॥
हम दोनों चले लेके धवल सेठ सहारा ॥
पापी ने मोहे देख पाप मनमें विचारा ॥ ६ ॥
छल करके श्रीपाल को दरिया में बहाया ॥
और पास मेरे दुष्ट बचन बोलने आया ॥ ७ ॥
तब आके जैन देवी करी मेरी सहाई ॥
उस पापी को दीनी सज़ा की सबकी तबाही ॥ ८ ॥
कहने से मेरे देवी ने उपसर्ग निवारा ॥
मुझको बता दिया कि मिले कंथ हमारा ॥ ९ ॥
अब तक इसी उमीद में जीती रही हूं मैं ॥
लाखों तरह की आफ़तें सहती रही हूं मैं ॥ १० ॥

कर आपके दर्शन सुखी मन हो गया मेरा ॥
दसवां विभाग शील का गरचे गया मेरा ॥ ११ ॥
सम तात जान आपको दरबार में आई ॥
जो बात असल थी वह सारी आके सुनाई ॥ १२ ॥
चाहे जो करो आपको अब अख़्तियार है ॥
इसमें न कोई मेरी तरफ़ से बिचार है ॥ १३ ॥

२९४

राजा का अफ़सोस करना और सबका श्रीपाल के पास जाना ॥ (शैर)

है अफ़सोस कैसा जुलम होगया ॥
ग़ज़ब हो गया है सितम होगया ॥ १ ॥
मेरे सरमें कैसा जनूं हो गया ॥
जो इन्साफ़ का आज खूं हो गया ॥ २ ॥
मेरे बेगुनाह यूं मेरे राज में ॥
सती पाए दुख यूं मेरे राज में ॥ ३ ॥
बिलाशक श्रीपाल है बेगुनाह ॥
सरासर धवल सेठ है पुर ख़ता ॥ ४ ॥
सती रैनमंजूषा सतियों में सार ॥
रखा शील को तूने अपने संभार ॥ ५ ॥
है शाबाश बेटी महा गुण भरी ॥
समझ, सब गई अब मुसीबत तेरी ॥ ६ ॥
धवल सेठ बचकर कहा जाएगा ॥
किये की वह अपने सज़ा पाएगा ॥ ७ ॥

श्रीपाल के पास जाता हूं मैं ॥
अभी तख्त पर ला विठाता हूं मैं ॥ ८ ॥

(सबका चला जाना)

सीन ४३

शूली का परदा

२९५

(राजा व गुणमाला व रैनमजूपा और सब दरबारियों का शूली के पास पहोंचना और राजा का श्रीपाल से मुआफी मांगना (। शैर)

सुनो कोटीभट अय शहे नेकनाम ॥
ख़तावार हूं मैं तेरा लाकलाम ॥ १ ॥
बिना बात मैंने दिया दुख तुझे ॥
पशेमान हूं मैं तेरे सामने ॥ २ ॥
बनावट का था सारा यह माजरा ॥
बड़ा मुझको भांडों ने धोका दिया ॥ ३ ॥
जो कुछ बात थी साफ़ वह खुल गई ॥
जो थी असलियत मुझको सब मिल गई ॥ ४ ॥
बिलाशक मैं तेरा ख़तावार हूं ॥
जो चाहो सो कहिये गुनहगार हूं ॥ ५ ॥

दया मय तू गम्भीर वरवीर है ॥
मुआफ़ कीजे मेरी जो तक़सीर है ॥ ६ ॥

२९६

श्रीपाल का जवाब ॥ चाल—क़त्ल मत करना मुझे तेगो तबर से देखना ॥

कौन करता है गुमां राजा तेरी तक़सीर का ॥
दोष जो कुछ है सरासर है मेरी तक़दीर का ॥ १ ॥
कर्म जो मैने किये उनका नतीजा मिल गया ॥
टल नहीं सकता कभी हरगिज़ लिखा तक़दीर का ॥ २ ॥
रंज गर है तो मुझे राजा तेरे इन्साफ़पे ॥
नाम भी तुझमें नहीं है अक्ल का तदबीरका ॥ ३ ॥
गर नहीं तुझको तमीज एक भांड मे और शाहमें ॥
क्या करेगा न्याय तू फिर हर ग़रीब अमीरका ॥ ४ ॥
जुर्म मैंने क्या किया था यह ज़रा देतो बता ॥
हुक्म शूलीका सुनाया कौनसी तक़सीरका ॥ ५ ॥
सख्त है अफ़सोस तूने गुण मेरा जाना नहीं ॥
बल कभी देखा नहीं मेरी कमान और तीरका ॥ ६ ॥
कौन दे सकता है शूली मुझको तेरी क्या मजाल ॥
देवता है कांपते सुन नाम कोटी वीर का ॥ ७ ॥
ला ज़रा जाकर तेरी सैना को मेरे सामने ॥
देखलू बल मैं भी तेरी फौज और शमशीर का ॥ ८ ॥
पुत्र कोटीभटका हूं और आप कोटीभट हूं मैं ॥
मत समझियो मुझको बेटा भांड का या हीर का ॥ ९

मैं अगर चाहूं उलट दूं सारे तेरे राज को।
तब तुझे मालूम होगा पुत्र हूं किस वीरका ॥ १०

२९७

राजा का शरमिन्दा होना और श्रीपाल की अस्तुति करना॥ (वार्तालाप

अय महाराज श्रीपाल! बेशक मैं गुनहगार हूं-आपक खतावारहूं ॥ बदकार भांडोंने सरे दरबार मुझको धोका दिय आपसे बदगुमान कराया-दुनिया मे मुझको बदनाम किय आपके सामने पशेमान बनाया ॥

शैर—अय शहा कर महरबानी बख्श दो मेरी खता ॥
मेरी गलती मुआफ कीजे हूं मैं बन्दा आपका ॥ ॥१
चालमें आ हरइक इन्सान धोका खाही जाता है ॥
भांड नक्काल लोगोंके कहे में आही जाता है ॥ २ ॥
आप महाराज कोटीभट दयामय हैं दयासागर ॥
बख्श दीजे खता मेरी ज़रा मनमें दया लाकर ॥ ३ ॥

२९८

श्रीपाल का जवाब देना ॥
चाल—(गज़ल कव्वाली) दिल हमने सनम को दिया नजराना समझके ॥

दुशमन हमारी जानके सब यार बन गए ॥
हम आज बेखता ही गुनहगार बन गए ॥ १ ॥
हमने ज़रूर सेठकी कोई खता करी ॥
जो मेरे लिये वह भी दिल आज़ार बन गए ॥ २ ॥
महाराज आपकी नहीं इसमें कोई खता।

करमों के लेख हक़में मेरे खार बन गए ॥ ३ ॥
दिलोजान से मैं आपका तो तावेदार हूं ॥
मेरे ही करम हैं जो सितमगार बन गए ॥ ४ ॥

२९९

राजा का दरबार में चलनेके लिये श्रीपाल से प्रार्थना करना (वार्तालाप)

(सिर झुका कर और हाथ जोड़कर) अय कुंवर श्रीपाल धन्य है आपका बल और परिवार-धन्य है आपका साहस और बिचार ॥ अब हम पर क्षमा कीजे-अपने चित्त को शान्त कीजे ॥ अपने मनसे चिन्ता निवारिये-राज दरबारको पधारिये
(सबका रवाना होना)

सीन ४४

दरबार का परदा ॥

३००

राजा व श्रीपाल व गुणमाला व रैनमजूसाका दरबार में पहोंचना और राजा का सिंघासन पर बैठकर इन्साफ करना ॥ (वार्तालाप)

राजा-(गुस्से से) कोतवाल ! दुष्ट भांडोंके घरों की दरो दीवार को उखाड दे एक दम सबको उजाड दे ॥ सब मर्द व जनको तौक़ व ज़ंजीर पहनाओ और फौरन हमारे सामने लाओ ॥

कोत०—अभी हजूर का हुक्म बजालाताहूं (चला जाना)

राजा—अय सेनापति समुद्र पर जो जहाज़ आए हैं सबको जब्त करो और दाखिल सरकार करो-पापी धवल और उसके सब आदमियों को गिरिफ़तार करो हाज़िर दरबार करो ॥

सेना० बहुत अच्छा महाराज अभी तामीले हुक्म करताहूं॥
(रवाना होना)

राजा—अय मंत्री क्या पापी धवल ने कम ज़ुल्म किया है जो उसको मौत की सज़ा न दी जाय ॥

मंत्री०-अय कुमकुमद्वीपके शहनशाह वाकई धवल सख्त मुजरिम है इसको ज़रूर मौत की सज़ा दीजाए हरगिज़ रिहाई न की जाए ॥

कोत०—(भांडों को पेश करके) हजूर इन बदकिरदार भांडोंके घरबारको बरबाद किया-सबको पाव ज़ंजीर हाजिर दरबार किया ॥

सेना०अय शहनशाह सब जहाज़ ज़ब्त होकर दाखिल सरकार हैं-मुजरिम गिरिफ़तार हाजिर दरबार हैं

राजा-(हुक्म सुनाना) अय पापी धवल तूने अपनी धर्मकी बेटी सती रैनमंजूषाके शीलपर हाथ निकाला और श्रीपालको नाहक समुद्र में डाला हमको सरे दरबार धोका दिया-कंवर श्रीपालकी नजरों में शरमिन्दा किया ॥ तुझको तेरे पापों के बदले मौत की सजा दी

जाती है॥ तेरे सब हमराहियों की ताज़ीस्त क़ैद की जाती है ॥ अय कोतवाल इन बदकिरदार भांडोंको तीरोंसे हलाक करो ॥ बदमाशों से मेरे राज्यको पाक करो ॥ इन मुजरिमों की कुछ सुनाई न होगी ॥
फौरन तामीले हुक्म हो हरगिज रिहाई न होगी ॥

३०१

श्रीपाल का सिफारिश करना ॥

चाल—कत्ल मत करना मुझे तेगो तबर से देखना ॥

तात को मेरे शहा कर महरबानी छोड़दो ॥
छोड़ दो बहरे प्रभु तुम छोड़ दो अब छोड़ दो ॥ १ ॥
यह धवल शाह सेठ है और धर्म का मेरा पिता ॥
इसने जो कुछ है किया अच्छा किया है छोड़ दो ॥२॥
यह अगर वहां पे नहीं दरिया में मुझको डालता ॥
किस तरह मिलती मुझे गुणमाला प्यारी, छोड़दो ॥३॥
क्यों लगाते हो सियाही मेरे मुंहपे अय शहा ॥
होना था सो हो चुका अब क्या है इनको छोड़दो ॥४॥
सर झुकाकर दस्तबस्ता अर्ज यह करता हूं मैं ॥
जितने यह मुलजिम हैं सब कहने से मेरे छोड़दो ॥५॥

३०२

राजा और श्रीपाल की बात चीत (शैर)

राजा-अय कंवर कहते हो क्या सोचो विचारो तो जरा ॥
रहम करने का कौन मौका निहारो तो जरा ॥ १ ॥

श्री०--है दया ही धर्म का लक्षण विचारो तो जरा ॥
हर जगह लाजिम दया करनी निहारो तो जरा॥२॥
राजा--हुक्म तेरा मानने को मैं सदा तैयार हूं ॥
कसे पर छोड़ूं इन्हें क़ानून से लाचार हूं ॥ ३ ॥
श्री०आप सच फरमाते हैं फ़रमां का ताबेदार हूं ॥
पर कहो मैं क्या करूं आदत से मैं लाचार हूं ॥४
राजा--पाप के बदले सजा पापी को देनी चाहिये ॥
अपने फेलों की सजा हरइक को लेनी चाहिये ॥ ५
श्री०--है यही लाजिम दया हरइक पे करनी चाहिये ॥
आंख बदफेली पे औरों का न धरनी चाहिये ॥ ६
राजा—खून यूं इन्साफ का करना मुनासिब है नहीं ॥
छोड देना मुजरिमों को यूं मुनासिब है नहीं ॥ ७
श्री० -खूं बहा देना किसी का भी मुनासिब है नहीं ॥
रहम को दिलसे हटा देना मुनासिब है नहीं ॥ ८
राजा--अपने पापों की सजा गर यह नहीं यहां पाएगा
कौनसी फिरहै जगह जिस जा सजा यह पाएगा।९
श्री०--आप क्यों कातिल बनें हाथ आपके क्या आएगा
जैसा जो करता है वैसा उसके आगे आएगा॥१०
कर्म का क़ानून है ऐसा अटल दुनिया के बीच
अपनी करनी की सजा हरइक बशर खुद पाएगा। ११
राजा--गर यही मनशा तुम्हारा है तो इनको छोड़ दूं ।
मुझको यह ताकत कहां जो हुक्म तेरा मोड़ दूं ॥ १२ ।

श्री०—अच्छा तो फिर हुक्महो तो सबके बंधन छोड़दूं ॥
हाथ पाओं खोलदूं जंजीर सबकी तोड़दूं ॥ १३ ॥
राजा—अय कंवरजी आपका कहना मुझे मंजूर है ॥
चाहे जो कुछ कीजिये वह ही मुझे मंजूर है ॥ १४ ॥

(श्रीपाल का अपने हाथों से सबके बंधन खोलना)

३०३

सबका श्रीपालकी स्तुति करना ॥

चाल—[कवाली] हुवा सुत राम जशरथ के बहादुर हो तो ऐसा हो ॥

अहो श्रीपाल कोटीभट बहादुर हो तो ऐसा हो ॥
नेक नीयत बुलन्द हिम्मत दिलावर हो तो ऐसा हो ॥ १ ॥
खोलदी हाथसे अपने तौक़ जंजीर सारोंकी ॥
खता सबकी मुआफ करदी दयाकर हो तो ऐसा हो ॥ २ ॥
दयाका धर्मका गुणका दिवाकर हो तो ऐसा हो ॥
प्रजारक्षक धरमपालक कोई गर हो तो ऐसा हो ॥ ३ ॥

३०४

श्रीपालका धवल सेठकी स्तुति करना ॥

चाल—(गजल) इस इश्क ने यारो मुझे दुनिया से उठाया-दीवाना बनाके ॥

इस कर्मने देखो मुझे दरया में गिराया—न्हाना बनाके ॥
लहरोंने समंदरकी परीशान बनाया-दीवाना बनाके ॥ १ ॥
अय तात रासते में न सेवा करी तेरी—अफ़सोस है बाकी ॥
तुफान भंवर ने मुझे लाचार बनाया—नीशाना बनाके ॥ २ ॥

सीन ४९

सिठानी के जहाज़ और महलका परदा

३०७

श्रीपाल का सिठानी से मिलना और अर्ज करना ॥

चाल—प्रभु भक्तिमें प्रेम लगारे मना ॥

प्रभु भक्ति में मात लगा री जिया ॥
लगा री जिया—मना री जिया ॥ प्रभु० ॥ टेक ॥
तन धन जोबन झूटे सारे ॥
सारे समझले असार जिया ॥ प्रभु० ॥ १ ॥
होना था सोही होगया माता ॥
रंज को मन से दूर हटा ॥ प्रभु० ॥ २ ॥
विषय भोग का ध्यान हटाले ॥
जैन धरम में प्रेम लगा ॥ प्रभु० ॥ ३ ॥
आज्ञा दीजे मात कुंवर को ॥
सर आखों से मैं लाऊं बजा ॥ प्रभु० ॥ ४ ॥

३०८

सेठानी जी का जवाब देना ॥

चाल—(कवाली) सखी सावन बहार आई झुलाए जिसका जी चाहे ॥

कुंवर श्रीपाल गुण तेरा सदा दिन रात गाऊं में ॥
शील शृंगार धरम अवतार आ हृदय लगाऊं में ॥ १ ॥

हुवा अच्छा अगर वह मर गया बदकार परपंची ॥
मुझे आज्ञा करो बेटा कि अपने घर को जाऊं मैं ॥ २ ॥

३०९

श्रीपालका जवाब ॥ चाल-नम्बर ३०८

बिपत आराम जश अपजश है सब करमों के हाथों में ॥
तू माता धर्म की मेरी चरण में सर झुकाऊं मैं ॥ १ ॥
मात कुन्दप्रभा से भी अधिक तू मुझको प्यारी है ॥
चलो माता नगर चम्पा सिंघासन पर बिठाऊं मैं ॥ २ ॥

३१०

सिठानी जी का जवाब ॥ चाल—नम्बर ३०८

बढ़े लक्ष्मी तेरी बेटा तेरा इक़बाल दूना हो ॥
चिरनजीवो सदा जगमें यही आशा मनाऊं मैं ॥ १ ॥
मात कुन्दप्रभा से जा मेरा परणाम कह दीजो ॥
मुझे आज्ञा सुना दीजे कि जल्दी घरको जाऊं मैं ॥ २ ॥

३११

श्रीपालका आज्ञा देना ॥ चाल—नम्बर ३०८

मुझे मंजूर है माता जो कुछ मनमें बिचारी है ॥
वही मरजी हमारी है जो कुछ मरजी तु
धरम का पुत्र हूं तेरा मुझे मत
मेरी निज मात से भी तू
पड़े कुछ भीड़ गर, तुम पर तो
बजा लाऊंगा सर आखों

चलो माता तुम्हारे देशमें चलके पहोंचाऊं ॥
चलूं खुद संगमें और संग सब सैना हमारी है ॥ ४ ॥

[सबका रवाना होना]

सीन ४६

श्रीपालके महल का परदा ॥

३१२

नोट—राजा श्रीपाल ठानीजी को पहोंचाकर वापिस कुमकुमद्वीपमें आए और गुणमाला और रैनमंजूषा के साथ सुखसे रहते हुवे ॥ कुछ दिन बाद कुन्दनपुर के राजा मकरकेतु (राणी कपूरतिलक) की लडकी चित्ररेखाको व्याहा और कंचनपुर के राजा वज्रसैन (राणी कंचन माला की बेटी विलासमती से शादी की और कुमकुम पट्टनके राजा यशसेन की लडकी शृंगारगौरी को व्याहा और अनेक राजाओं को जीतकर उनकी कन्याओं को व्याहा और सुखसे कुमकुमद्वीप में राज करते रहे ॥

३१३

एक रात श्रीपाल का मैनासुन्दरी को याद करना और गमगीन होना ॥
रैनमंजूषा व गुणमाला का हाल पूछना ॥

चाल—मैं वही हूं प्यारी शकुन्तला तुम्हे याद हो कि न याद हो ॥

प्यारे क्यों यह हालते ज़ार है कैसा जीको तेरे मलाल है ॥
पिया साफ़ बतलादो हमें यह आपका क्या हाल है ॥ १ ॥

कहो कौन सोचो विचार है क्यों न दिलको आज क़रार है ॥
नहीं नींद आती है आपको क्या वबालहै क्या ख़याल है ॥२

३१४

श्रीपाल का जवाब ॥

चाल—(कव्वाली) क़त्ल मत करना मुझे तेगोतवर से देखना ॥

दिल ही पहलूमें नहीं है नींद किसको आएगी ॥
हाल मत पूछो मेरा तबियत तेरी घबराएगी ॥ १ ॥
आज मुझको याद उस मैना सतीकी आगई ॥
क्या ख़बर यह बात मुझपर क्या मुसीबत लाएगी ॥२॥
बात तो कुछ भी नहीं पर मुझको इतना ख़ौफ़ है ॥
उसकी ज़िद बाइस हमारी मौतका होजाएगी ॥ ३ ॥
वक्ते रुख़सत बर्ष बारका परण मैंने किया ॥
इसमें गर फ़र्क आगया वह बदगुमां होजाएगी ॥ ४॥
अष्टमीके दिन अगर उस पास में पहोंचा नहीं ॥
छोड़कर घरबार सब वह अर्जकां होजाएगी ॥ ५ ॥
अर्जकां गर वह हुई दुनिया मेरे किस कामकी ॥
मेरी सब ऊमीद प्यारी ख़ाक में मिल जाएगी ॥ ६ ॥
दिन हमारे क़ौलका नज़दीक प्यारी आगया ॥
क्या ख़बर अब वहसती क्याक्या सितम दिखलाएगी ७
जानसे दिलसे सती मैनाका मैं ममनून हूं ॥
गर बचन झूठा हुवा एकदम क़यामत आए

३१५

सब रानियों का खुश होकर मंजूर करना और रवाना होना ॥

चाल—(नाटक) महाराज गाए अब हम—फिर नाचें खूब छमछम ॥

महाराज चलिये इसदम-संग जावें आज सब हम ॥ महा० ॥
वीरों की फ़ौज एकदम—तय्यार करलो अब तुम ॥
यह गुणमाला बरनारी—यह रैनमंजूषा प्यारी ॥
चलने को खुश हैं हरदम ॥ महाराज० ॥

(सबका रवाना होना)

इति न्यामतसिंह रचित मैनासुन्दरी नाटक का
पांचवां ऐक्ट समाप्तम् शुभम्

मैना सुन्दरी नाटक

छठा ऐक्ट

मैनासुन्दरीका श्रीपाल के आनेकी आशा छोड़कर अपनी साससे अर्जिका होने के लिये आज्ञा मांगना, श्रीपाल का मैनासुन्दरी के पास पहोंचना और उसको रोकना, अपनी माता और मैनासुन्दरी को अपनी सैना में लाना और मैनासुन्दरी को पटराणी बनाना, मैनासुन्दरी का पिता को अपने कर्म का जलवा दिखाना श्रीपाल का चम्पापुर पहोंचना और अपने चचा वीरदमन से युद्ध करना और चचा को जीतना और चम्पापुर के तख्त पर बैठना और सबका मुबारकबादी गाना,

श्रीजिनेन्द्रायनमः

सीन ४७

मैनासुन्दरी के महल का परदा॥

३१८

मैनासुन्दरी का सप्तमी की रात को श्रीपाल को याद करना और उसके वियोग में विलाप करना और व्याकुल होकर अपनी सास के पास जाना॥

चाल—हाय अच्छे पिया मही देश बुलालो हिन्द में जी घबरावत है॥

हाय अच्छे पियामोहे दर्श दिखावो रैन में जी घबरावतहै।टेक।
प्रभु के वास्ते अब तो तुम आवो जल्दी से॥
सती को आन के सूरत दिखावो जल्दी से॥
ज़रा तुम आके मेरे जी की बेकली देखो॥
हैं प्राण जाते सती के बचावो जल्दी से॥
हाय जीना भयो अब पलपल भारी नींद न दमभर आवत है १
न मैंने तप ही किया और न कुछ भी सुख देखा॥
उमर सँभाली है जबसे सदा ही दुख देखा॥
किसी के कौल का ना एतबार दुनिया में॥
है क्षत्रियों के बचन को भी मैं परख देखा॥
हाय जनम की दुखियादरश की प्यासी काहे जी तड़पावतहै २
तड़प रही हूं पड़ी बेकरार जंगल में॥
मेरा प्रभू को है मालूम हाल जंगल में॥

जरा तुम आके मुझे यह बताओ तो कबतक ॥
करूंगी आने की मैं इन्तज़ार जंगल में ॥
हाय रैन अंधेरी जगतकी बैरन मछली सी तड़पावत है ॥ ३ ॥
किये हैं बारा बरस पूरे दुख यह सह करके ॥
राज़ बतावो तो तुम क्या गए थे कह करके ॥
न आए आजका वादा किया था क्यों तुमने ॥
इसी भरोसे वचन तुम गए थे दे करके ॥
हाय उमडउमड पिया नैन हमारे निशादिनमेंह बरसावतहैं ॥ ४

(चला जाना)

सीन ४८

मैनासुन्दरीकी सासके महलका परदा

३१७

नोट-राजा श्रीपाल अपने श्वसुर की आज्ञा लेकर और सब रानियाँ और तमाम लशकर को साथ लेकर उज्जैन नगर की तरफ रवाना हुआ और सप्तमी के दिन उज्जैनमें पहोंचा ॥ सब रानियों को और लशकर को अभयपुरी तालपर छोड़कर अकेला तीन कोट कूदकर पिछली रैन के समय मैनासुन्दरी के महल के पास गया ॥ उस समय मैनासुन्दरी श्रीपालके वियोग में व्याकुल होकर अपनी सास से अजका होने के लिये आज्ञा माँग रही थी और श्रीपाल एक जगह छुपकर दोनों की बात सुनने लगा ॥

३१८

मैनासुन्दरी का अपनी सास से कहना ॥

चाल—(नाटक) पिया आए न अरी हमसे सहा दुख जाए ना ॥

पिया आए ना अरी हमसे सहा दुख जाए ना ॥
ना वह आए जराए सताए जिया ॥ पिया० ॥
मुझको मालूम न था धोका दिये जाते हैं ॥
क्षत्रियों के भी बचन झूंट निकल आते हैं ॥
न तो कुछ धर्म किया और न कुछ सुखही मिला ॥
उम्र के दिन यूं ही बरबाद हुए जाते हैं ॥
अनभाएना-रह्यो जाए ना ॥ अरी हमसे सहा दुख जाएना ॥
ना वह आए जराए सताए जिया ॥ पिया० ॥

३१९

सास का जवाब (दोहा)

हे पुत्री धीरज धरो मन मत करो उदास ॥
निश्चय करके आएगा, कोटिभट रख आस ॥ १ ॥
क्या जाने परदेश में, क्या कारण भयो आय ॥
जो अबलग आयो नहीं, श्रीपालवर राय ॥ २ ॥
वह क्षत्री का पुत्र है, महाबली सुख कन्द ॥
झूंट बचन बोले नहीं, चाहे टरे रवि चन्द ॥ ३ ॥

३२०

मैनासुन्दरी का जवाब ॥ चाल--वारी जाऊंरे सांवरया तुमपर वारना रे ॥

मैं ना मानूंगी तिहारी जग दुख कारणा री ॥ टेक ।,

अब मैं सारे दुख पर हारूं ॥ तोड़ मुकुट धरती में डारू ॥
भेष अर्जका सारूं ॥ सब सुख कारणा री ॥ १ ॥
अब लग आस विषय तरु बोए ॥ बारा बरस अकारथ खोए ॥
अब ना खोऊं एक पल माता ॥ जनम सुधारना री २॥
मत मेरे जीको भरमावो ॥ मतना सूते करम जगावो ॥
माता वेगी हुकम सुनादो ॥ कर इन्कार ना री ॥ ३ ॥

३२१

सास का जवाब ॥ चाल-मरने यहाँ कौन खुदा के लिये लाया मुझको ॥

बेटी दो दिन मेरे कहने से ठैर जावो तुम ॥
ऐसी कायर न बनो जीको न कलपावो तुम ॥ १ ॥
इतने कहने की मेरे और भी करलो परीक्षा ॥
जो नहीं आया तो फिर ले लेंगे दोनो दीक्षा ॥ २ ॥

३२२

मैनासुन्दरी का जवाब ॥ चाल-परदेसी सय्यां नेहा लगाए दुख देगयो ॥

कोटीभट माता बातें बनाए दुख देगयो–सुख लेगयो ॥ टेक ॥
कै तो भरमाए नारी ॥ हमको बिसराए डारी ॥
कै वह मारग वीसारी ॥ कै वह मारग वीसारी ।
दुख देगयो—सुख लेगयो ॥ कोटी० ॥ १ ॥
पाती न आई पीकी ॥ कभु ना पूछी जीकी ॥
झूटी सब बातें देखी ॥ एक ना सांची देखी ॥
जो कह गयो–बर देगयो ॥ कोटी० ॥ २ ॥
मनको ठैराए राखो ॥ अब लग समझाए राखो ॥

अब मनकी आसा मिटी मोह करम गयो सोय।
जो अब भी चेतूं नहीं मो सम मूरख कोय॥
अजी देखो सोच बिचारा॥ हम० ३॥

३२५

सास का जवाब॥

चाल--गए दोनो जहान नजर से गुजर तेरी शान का कोई बशर ना मिला

क्यों बिगाड़े है तू सारी बात बनी॥
घनी बीतगई और थोड़ी रही॥
एक दो दिन की बात रही है सती॥
अब तलक तो सही जो सही सो सही॥ १॥
जो वह तेरा पती है तो मेरा भी सुत॥
दस मास रखा उग पीर सही॥
मेरा तेरे से ज्यादा जले है जिया॥
ज़रा जी में बिचार करो तो सही॥ २॥
अब और अगर हट तुमने करी॥
और दोनों ने चल करके दिक्षा धरी॥
सारे लोग हसेगे कहेंगे यही॥
देखो दोनों ने कैसी अयोग करी॥ ३॥

३२६

मेणासुन्दरी का जवाब॥ (चाल नंबर ३२५)

नहीं लोग हंसाई का डर है मुझे॥
इस बात का एक फ़िकर है मुझे॥

न तो तप ही किया न पिया ही मिला ॥
ना इधर की रही ना उधर की रही ॥ १ ॥
अब छोड दई मैने पीकी लगन ॥
मैने लेली है बस श्रीजीकी शरण ॥
गए बारा बरस याद करते सजन ॥
ना इधर की रही ना उधर की रही ॥ २ ॥
अब जल्दी से आज्ञा सुना दो मुझे ॥
कहीं चल करके दिक्षा दिलादो मुझे ॥
वेगी मुक्ती के मारग लगादो मुझे ॥
ना इधर की रही ना उधर की रही ॥ ३ ॥

३२७

सास का जवाब ॥ (चाल नम्बर ३२५

तप करने का बेटी यह वक्त नहीं ॥
तेरी बाल अवस्था समझ तो सती ॥
कुछ दिन तो करो सुखराज सही ॥
हट छोड ज़रा मेरी मान कही ॥ १
एक दो दिन तो टुक मन धीर धरो ॥
फिर हर्ष के सोलह शृंगार करो ॥
कोटीभट की ज़रा पटनार बनो ॥
सारी चम्पा में आन फिरेगी तेरी ॥ २॥

३२८

मैनासुन्दरी का जवाब देना और वैराग्य में आना ॥

चाल—क़त्ल मत करना मुझे तेग़ो तबर से देखना

है जगत दुख रूप तेरा राज क्या करना मुझे ॥
यहां सदा रहना नहीं घरबार क्या करना मुझे ॥ १
रंक हो चाहे राव हो यहां सब में हलचल हो रही ॥
सार जब कुछ भी नहीं शृंगार क्या करना मुझे ॥ २
फिरते फिरते चार गत में एक ज़माना हो गया ॥
अब तो लाज़िम है यही तपसार का करना मुझे ॥ ३
मात सुत भरतार दारा सब जुदा हो जायेंगे ॥
ऐसी नातेदारी का फिर ध्यान क्या करना मुझे ॥ ४
सब जहां मतलब का है मतलब बिना कोई नहीं ॥
अपना जब कोई नहीं संसार क्या करना मुझे ॥ ५
सबके सब हम और तुम महमान हैं दो चार दिन ॥
अपनी अपनी करके फिर सर भार क्यों धरना मुझे ॥ ६
कौन रख सकता है मुझको यह तो बतलादे मुझे ॥
इस जहां फ़ानी से होगा कूच जब करना मुझे ॥ ७
आग में कोई जलादेगा दबादेगा कोई ॥
किसके क़ाबू में है फिर ज़िन्दा भला करना मुझे ॥ ८
चान्द सूरज की चले ना देव की इन्सान की ॥
यह अमर है तैशुदा- है एक दिन मरना मुझे ॥ ९ ॥

सारे जंतर और मंतर वैद्य भी बेकार हैं ॥
और फिर किसपे भरोसा है कहो करना मुझे ॥ १० ॥
अवतो जीमें है यही मेरे कि जिन दिक्षा धरूं ॥
राज चम्पा चीर पटराणी का क्या करना मुझे ॥ ११

३२९

सास का जवाब (शैर)

हट छोड़ दे छोडूं नहीं मैं यों कहूं तू यों कहे ॥
अब ठैरजा ठैरूं नहीं मै यो कहूं तू यों कहे ॥ १ ॥
राज करियो मैं कहूं और तू कहे दिक्षा धरूं ॥
तू मान जा मानूं नहीं मै यों कहूं तू यों कहे ॥ २ ॥
दो दिन अगर ठैरे नहीं तो आज के दिन ठैरजा ॥
फिर मैं भी तेरे साथ हूं वह ही करूं जो तू कहे ॥३॥

३३०

मैनासुन्दरी का जवाब ॥ चाल-(नाटक) तुम्हें दुगा मैं घाकी सवरया जान

मैने छोड़ी री तेरे कंवर की आस ॥
झूटा झूटा री माता जगत का वास ॥ भारी कलकल—
मची है सारे हलचल—अरी झूटा सारा दलवल—
न कयाम का नाम लो ॥ मैने० ॥
वनमें ध्यान धरूगी—तमं अज्ञान हरूंगी ॥
यहां कुछ काम नहीं है—सुख का धाम नहीं है ॥
एक दिन सबको जाना—क्या राजा क्या राणा ॥

क्या सूरज चन्दर—नौकर अफ़सर–जल चर नभ चर—
इन्दर सुरनर ॥ छोड़ी री० ॥

३३१

सास का जवाब (दोहा)

प्यारी दुर्लभ मिलत है राज भोग संजोग ॥
सुख भोगो संसार का पीछे लीजो जोग ॥ १ ॥
तू प्यारी नादान है करती नहीं विचार ॥
राज सम्पदा राज सुख मिले न वारम वार ॥ २ ॥

३३२

मेनासुन्दरी का जवाब ॥

चाल—सखी सावन बहार आई झुलाए जिसका जी चाहे

फंसे दुनिया में जो मूरख सदा नाशाद होता है ॥
इसे जो छोड़ देता है वही दिलशाद होता है ॥ १ ॥
कहीं मरने का डर दिलमें कहीं बीमारियां तनमें ॥
कहीं रंजोअलम देखा कोई बेज़ार होता है ॥ २ ॥
पशूगत नर्कगत नरगत किसी गतमें न सुख देखा ॥
अगर सुरगत मे भी पहोंचा तो माला देख रोता है ॥ ३ ॥
किसी का भाई बैरी है किसी की नार कलिहारी ॥
कोई बिन नार व्याकुल है कोई मन मार रोता है ॥ ४ ॥
कोई निर्धन दुखी देखा नहीं कोई सुखी देखा ॥
किसीको कुछ किसीको कुछ कोई आज़ार होता है ॥ ५ ॥
कोई बिन पुत्र दुख पावे मगर कुछ हाथ नहीं आवे ॥

अगर सुख हो भी जाता है तो मरजाने पे रोता है॥६
कोई गर आज सज धज के है बैठा तख्त शाही पे ॥
वही कलको अकेला ख़ाक में जाकरके सोता है ॥७
अगर दुनिया में सुख होता तो तिर्थंकर नहीं तजते ॥
बिना संसार के त्यागे नहीं आराम होता है ॥ ८ ॥
राज लक्ष्मी, सुनो माता किसी की भी नहीं होती ॥
सदा रहती है चंचल ज्यों झलक बिजली का होता है॥९॥
ज़माना छानकर देखा कहीं भी सुख नहीं देखा ॥
बिना वैराग्य के न्यामत नहीं आराम होता है ॥१०॥

३३३

सास का जवाब ॥ चाल—अरे लाल देव इस तरफ जल्द आ ॥

जरा बेटी कीजे इधर को निगाह ॥
अकेली मैं कैसे रहूंगी बता ॥ १ ॥
तेरा इस तरह जाना अच्छा नहीं ॥
सताना मेरे जी को अच्छा नहीं ॥ २ ॥
गया था श्रीपाल तो छोड़ कर ॥
चली तू भी मेरे से मुंह मोड़ कर ॥ ३ ॥

३३४

मैनासुन्दरी का आभूषण उतार कर फैंकना और अपनी सास को घर बार सौंप कर बन को जाना ॥

चाल नाटक—(भैरवीं) पनिया भरन को मैं कैसे प्यारी जाउं ॥

दिक्षा धरन को मैं माता बन जाउं ॥ टेक ॥
काहे करत हो हमसे झगड़या ॥
पाप हरन को मैं माता बन जाउं ॥ १ ॥

छोड़ वैराग चलो महल में शृंगार करो ॥
सारे रणवास में पटराणी बनाऊं तुझको ॥ २ ॥

३३८

मैनासुन्दरी का जवाब ॥ (चाल नम्बर ३३७)

विषय भोगों की नहीं बात सुनाओ मुझको ॥
राज और पाट का लालच न दिखाओ मुझको ॥१॥
जाल दुनिया से मैं निकली हूं बड़ी मुशकिल से ॥
अय मेरे प्यारे न फिर इसमें फंसाओ मुझको ॥ २ ॥

३३९

श्रीपाल का जवाब ॥ (चाल--नंबर ३३७)

दिन बुरे दूर हुवे पुन्य सितारा चमका ॥
देख करमो का तमाशा मैं दिखाऊं तुझको ॥ १ ॥
चलके दरबार में बैठो ज़रा सिंघासन पे ॥
चीर पटरानी का एक बार बंधाऊं तुझको ॥ २ ॥

३४०

मैनासुन्दरी का जवाब ॥ (चाल--नंबर ३३७)

खूब करमों का तमाशा मैं पिया देख लिया ॥
रहने दो और तमाशा न दिखाओ मुझको ॥ १ ॥
है यही दिलमें कि जा बनमें कहीं ध्यान धरूं ॥
चीर पटरानी का रक्खो न बंधाओ मुझको ॥ २ ॥

३४१

श्रीपाल का जवाब (चाल नम्बर ३३७)

अबतलक तो जो हुवा सो हुवा माफ करो ॥
और आगे को नहीं प्यारी सताऊं तुझको ॥ १ ॥
मरी भुज बलका जरा कुछ तो नजारा देखो ॥
तेरी क़िसमत का सती जलवा दिखाऊं तुझको ॥ २ ॥

३४२

मैनासुन्दरी का जवाब देना और जाने को तय्यार होना (चाल नम्बर ३३७)

बाप का प्यार तेरा राज सभी कुछ देखा ॥
ख्वाब है दुनिया की बातें न लुभाओ मुझको ॥ १ ॥
जो खता आज तलक मुझसे हुई माफ करो
ज़िद मेरे से न करो बस न सताओ मुझको ॥ २ ॥

३४३

श्रीपाल का मैनासुन्दरी को पकड़ना और रोकना ॥

चाल—कत्ल मत करना मुझे तेगो तबर से देखना

बेवजे नाराज़ क्यों होती खता कुछ भी नही ॥
आगया वादे पे मै मेरी खता कुछ भी नहीं ॥ १ ॥
तुझ बिना घरबार लशकर है मेरे किस काम का ॥
तू गई तो राज करने का मजा कुछ भी नहीं ॥ २ ॥
मानले मैना सती कहना मेरा मंजूर कर ॥
याद रख प्यारी सताने में नफा कुछ भी नहीं ॥ ३ ॥

छोड़ वैराग चलो महल में शृंगार करो ॥
सारे रणवास में पटराणी बनाऊं तुझको ॥ २ ॥

३३८

मैनासुन्दरी का जवाब ॥ (चाल नम्बर ३३७)

विषय भोगों की नहीं बात सुनाओ मुझको ॥
राज और पाट का लालच न दिखाओ मुझको ॥१॥
जाल दुनिया से मैं निकली हूं बड़ी मुशकिल से ॥
अय मेरे प्यारे न फिर इसमें फंसाओ मुझको ॥ २ ॥

३३९

श्रीपाल का जवाब ॥ (चाल--नंबर ३३७)

दिन बुरे दूर हुवे पुन्य सितारा चमका ॥
देख करमों का तमाशा मैं दिखाऊं तुझको ॥ १ ॥
चलके दरबार में बैठो ज़रा सिंघासन पे ॥
चीर पटरानी का एक बार बंधाऊं तुझको ॥ २ ॥

३४०

मैनासुन्दरी का जवाब ॥ (चाल--नबर ३३७)

खूब करमों का तमाशा मैं पिया देख लिया ॥
रहने दो और तमाशा न दिखाओ मुझको ॥ १ ॥
है यही दिलमें कि जा बनमें कहीं ध्यान धरूं ॥
चीर पटरानी का रक्खो न बंधाओ मुझको ॥ २ ॥

३४१

श्रीपाल का जवाब (चाल नम्बर ३३७)

अबतलक तो जो हुवा सो हुवा माफ करो ॥
और आगे को नहीं प्यारी सताऊं तुझको ॥ १ ॥
मेरी भुज बलका ज़रा कुछ तो नज़ारा देखो ॥
तेरी क़िसमत का सती जलवा दिखाऊं तुझको ॥ २ ॥

३४२

मैनासुन्दरी का जवाब देना और जान को तय्यार होना (चाल नम्बर ३३७)

बाप का प्यार तेरा राज सभी कुछ देखा ॥
ख्वाब है दुनिया की बातें न लुभाओ मुझको ॥ १ ॥
जो ख़ता आज तलक मुझसे हुई माफ करो
ज़िद मेरे से न करो बस न सताओ मुझको ॥ २ ॥

३४३

श्रीपाल का मैनासुन्दरी को पकड़ना और रोकना ॥

चाल—कत्ल मत करना मुझे तेगो तबर से देखना

बेवजे नाराज़ क्यों होती खता कुछ भी नहीं ॥
आगया वादे पे मैं मेरी ख़ता कुछ भी नहीं ॥ १ ॥
तुझ बिना घरबार लश्कर है मेरे किस काम का ॥
तू गई तो राज करने का मज़ा कुछ भी नहीं ॥ २ ॥
मानले मैना सती कहना मेरा मंजूर कर ॥
याद रख प्यारी सताने में नफा कुछ भी नहीं ॥ ३ ॥

फंसे जो जाल दुनिया मे नहीं आखिर को वह निकले ॥
वही निकले मगर दुनिया से जो दामन बचा निकले ॥ २ ॥

३४७

श्रीपालका जवाब ॥ (चाल—नंबर ३४५)

यह माना भोग दुनिया के बुरे हैं जोग अच्छा है ॥
मगर दिलका अगर अरमां निकल जाए तो अच्छा है ॥ १॥
अगरचे सार है बैराग दुनियां मे सती लेकिन ॥
मेरे कहने से कुछ दिनको ठैर जाए तो अच्छा है ॥ २ ॥

३४८

मैनासुन्दरी का जवाब (चाल नम्बर ३४५)

कुमत की चाल से कोई संभल जाए तो अच्छा है ॥
दाव जिसदम लगे उसदम निकल जाए तो अच्छा है ॥ १ ॥
हविस अरमान इन्सां के कभी पूर नहीं होते ॥
अगर दिलसे खयाल इसका निकलजाए तो अच्छा है ॥ २॥

३४९

श्रीपाल का जवाब ॥ (चाल नम्बर ३४५)

सुना था वज्र होता है निहायत सख्त पत्थर से ॥
मगर उस्से भी बढकर गर कोई निकले तो तुम निकले ॥ १॥
हज़ारों मिन्नतें करली मगर तुमने नहीं माना ॥
तुम्हें मैं बावफा समझा था तुमतो बेवफा निकले ॥ २ ॥

३५०

मैनासुन्दरी का जवाब ॥ (चाल नम्बर ३४५)

मुझे पत्थर बतावो बेवफा कहलो जो जी चाहे ॥
मैं हू तय्यार सुझेको तुम्हारा सुह आ निकले ॥१ ॥
मेरी क़िस्मत ही टेढी है किसीको दोष क्या दीजे ॥
आप जैसे महरबां भी हो मुझसे बदगुमां निकले ॥२॥
बुरा है हाए इस दुनिया में तिरियाँ का जनम देखो ॥
कि जिसका हौंसिला निकले तो इस बेकसपे आ निकले३
मुरादें दिलकी बर आवें तुम्हारा हौसला निकले ॥
कोई अहले वफ़ा ढूंडो अगर हम बेवफ़ा निकले ॥ ४ ॥

३५१

श्रीपालका सुंदरीसे क्षमा मांगना ॥
चाल नाटक— (भैरवी) हाय मैं अनाथ नाथ किससे जा कहू ॥

हाय मैं अवार भूल बेवफ़ा कहा ॥ टेक ॥
प्राणों से प्यारी-अय राजदुलारी-क्षिमा कीजे मेरा कहा ॥
किया सती जो तेरा ध्यान-मैं सिंधसे पार तिरा हाए० ॥ १॥
दुख मेरा टारा-है कुष्ट निवारा-न बदला जाएगा दिया ॥
कहा यह और भी मेरा मान-चल महलों में जोग हटा हाए० २

३५२

मैनासुन्दरी का जवाब ॥
चाल नाटक—(मकीगन भैरवी) देखुगी मैं अब्दा का मुखड़ा ॥

छोडूंगी सारी दुनियाका झगड़ा ॥ सारा सारा-सारा सारा ॥
सारा जी-सारी दुनिया का जगड़ा ॥ टेक ॥

जोग धरूंगी-ध्यान करूंगी ॥
काटूंगी सारे करमों का रगड़ा ॥ छोडूंगी० ॥ १ ॥
महल तजूंगी-सेज तजूंगी ॥
लेउंगी वन पहाड़ोंका बसरा ॥ छोडूंगी० ॥ २ ॥

३५३

श्रीपालका मैनासुन्दरीको समझाना कि तू बनमें किस तरह दुख सह सकेगी
चाल-(कव्वाली) सभी साजन बहार आई कुचाए जिनका जी चाहे ॥

जोग का भार अय कामन कहो कैसे उठाएगी
जोग खांडेकी धारा है सही तुझसे न जाएगी ॥ १ ॥
तेरा तन फूलसा कोमल सेज फूलोंकी सोती है ॥
कठिन धरती में प्यारी नींद कैसे तुझको आएगी ॥२॥

३५४

मैनासुन्दरी का जवाब ॥ चाल नम्बर ३५३)

जोग का भार जो होगा वह मैं सारा उठालूंगी ॥
अगर खांडेकी धारा है तो समतासे बचालूंगी ॥ १ ॥
नहीं है महलकी ख्वाहिश सेज धरती बनालूंगी ॥
विषय और भोगकी बातोंमे दिल अपना हटालूंगी २।

३५५

श्रीपालका जवाब ॥ चाल—नम्बर ३५३

सुनो अय गुल बदन नाजुक तुम्हारा चान्द सा मुखड़ा ॥
धूपसे रंग उड़ जाएगा सरदी भी सताएगी ॥ १ ॥
बिगड़ जाएगी सूरत आपकी गर्मीकी लूवोंसे
झुगी ऐसी चलेगी प्यारी तनके पार जाएगी ॥ २ ॥

३५६

मैनासुन्दरी का जवाब ॥ (चाल नम्बर ३५३)

बदन मट्टीका पुतला है खयाल इसके बिड़ने का ॥
न कीजे आप मैं इसको महोब्बतको घटाळूंगी ॥ १ ॥
अरूपी आतमा मेरी घटेगा रंग क्या इसका ॥
तमन्ना रूपकी रंगकी दूर दिलसे निकाळूंगी ॥ २ ॥

३५७

श्रीपाल का जवाब ॥ चाल—नम्बर ३५३

कहीं चमकेगी बिजली नीर मूसलधार बरसेगा ॥
अंधेरी रैन में प्यारी कहो तू क्या बनाएगी ॥ १ ॥
ध्यान घरमें धरो प्यारी भूल जंगलमें मत जाओ ॥
धर्म कामार्थ शिव गृहस्थाश्रमसे क्या न पाएगी ॥२॥

३५८

मैनासुन्दरी का जवाब ॥ (चाल नम्बर ३५३)

गरज बिजली पवन और नीरका भी डर नहीं मुझको ॥
अंधेरी रैनमें मैं ध्यान आपेमें लगाळूंगी ॥ १ ॥
जो मुक्ती घरमें होजाती बनों में क्यों ऋषी जाते ॥
यह बहकानेकी बातें हैं कि सब घर ही में पाळूंगी ॥२॥

३५९

श्रीपालका जवाब ॥ (चाल नम्बर ३५३)

बनो में सांप और बिच्छू डांस मच्छर सताएंगे
शेर चीते डराएंगे धीर कैसे बंधाएगी ॥ १ ॥

भूक और प्यासकी बाधा तुझे हरदम सताएगी॥
कठिन संजम बदन कोमल कहो कैसे निभाएगी ॥ २ ॥

३६०

मैनासुन्दरी का जवाब (चाल नम्बर ३५३)

शेर चीते का क्या डर है अमर है आतमा मेरी ।
मैं भूक और प्यासको सहकर बदन अपना सधालूंगी ॥ १॥
आप संजम के धरनेका मुझे क्या डर दिखाते हैं ॥
द्वादश भावना धर धीर मैं अपनी बंधालूंगी ॥ २ ॥

३६१

श्रीपाल का मैनासुन्दरीका हाथ पकड़ना और समझाना ॥
चाल—(नाटक) मेरी मानो जी मानो क्या डर है ॥

मेरी मानो अय प्यारी सुन्दरया काहे करती हो मुझसे झगड़िया
क्या पत्थरका तेरा जिगर है-नहीं होता जो कोई असर है ॥
कहा मान-हट न ठान-कर न प्यारी बस हैरान ॥
मानो अय राज दुलरिया ॥ काहे करती हो० ॥

३६२

मैनासुन्दरीका जवाब ॥ (चाल नंबर ३६१)

छोड़ो छोड़ोजी मेरी अंगुरिया ॥ मत रोको हमारी डगरिया ॥
आग पत्थर जो चाहे बनालो-और जी में हो जो कुछ सुनालो ॥
जाने दो—जाने दो—बन जानेकी आज्ञादो ॥
मानो जी मानो संवरिया ॥ मत रोको०

३६३

श्रीपालका फिर समझाना ॥ (चाल नम्बर ३६२)

मेरी मानो अय प्यारी सुन्दरिया-काहे करती हो मुझसे झगड़या
रनवास बिगड़ जावेगा-भंग राजमें पड़ जावेगा ॥
तुझबिन-सच बता-किसके बांधू पट सजा ॥
कीजे महर की नजराय ॥ काहे करती हो० ॥

३६४

मैनासुन्दरीका जवाब ॥ (चाल नम्बर ३६३)

छोड़ो छोडो जी मेरी अंगुरिया ॥ मत रोको हमारी डगरिया ॥
एक मैना अगर हट जागी-क्या रौनक तेरी घट जागी ॥
बात बना-लोभ दिखा-मत मेरे जीको भरमा ॥
तेरे हज़ारों सुन्दरिया ॥ मत रोको० ॥

३६५

श्रीपाल का नाराज होकर हाथ छोडना और राज पाट छोडकर उलटा जाने को तय्यार होना ॥ (चाल नम्बर ३६४)

नहीं मानो जो मेरी सुन्दरिया। चलो छोडूं तुम्हारी नगरिया
सब राज छोड़ जाता हूं-रनवास छोड़ जाता हूं ॥
तुझे सब कुछ दिये जाता हूं-अरमान लिये जाता हूं ॥
मेरे दिलको जो कलपावेगी-सुख तू भी नहीं पावेगी ॥
मेरी माता जो सुन पावेगी-वो सुनतेही मर जावेगी

गुणमाला–चित्ररेखा-रैन पियारी मंजूषा ॥
त्यागेंगी प्राण सुन्दरिया। पड़े तेरे पे सबका सबरया । नहीं०
(लौट चलना)

३६६

मैनासुन्दरी का घबराना व श्रीपाल को रोकना व राज बिगड़ने की बात को सोच कर बैराग्य का खयाल छोड़ना व चरणों में गिरना और रोते हुवे मुआफी मांगना ॥

चाल—(देश-ताल कहरवा) वारी जाऊं जी सांवरिया तुमपर वारनाजी ॥

ठैरो ठैरो जी कोटीभट तुमपर वारना जी ॥ टेक ॥
तन मन धन सब तुमपर वारूं ॥ सीस तेरे चरणों में डारूं ॥
प्राणपति सुन ऐसी चित नहीं धारना जी ॥ ठैरो० १॥
बस अब मैं नहीं बनको जाऊं ॥ पति सेवा में ध्यान लगाऊं॥
सती धरम दरसा के जनम सुधारना जी ॥ ठैरो० ॥२॥
बालम मेरी ओर निहारो ॥ मतना मनमे रोष बिचारो ॥
लाखों विपत उठाई तेरे कारणा जी ॥ ठैरो० ॥ ३ ॥
मैं विरहन कर्मों की मारी ॥ बारा बरस सहे दुख भारी ॥
दुखयारी कह बैठी, दोष निवारना जी ॥ ठैरो० ॥ ४ ॥

३६७

श्रीपाल का खुश होना और,मैनासुन्दरी को चरणोंपरसे उठाना और सीने से लगाना और खुश करना और दोनों का महल में जाना ॥

चाल—(इन्दरसभा) घर से यहां कौन खुदा के लिये लाया मुझको ॥

सरपे आंखों पे कलेजे पे बिठाऊं तुझको ॥
आ मेरी प्यारी गले से मैं लगाऊं तुझको ॥ १ ॥
तु तो क्षत्राणी है फिर दुक्खों से क्या डरती है ॥

३७२

श्रीपालका मैनासुन्दरीको तसल्ली देना और दोनों का दरबार को जाना

चाल—(एमन कल्याण) बढ़ादे आजकी शर और चर्खे पीर थोडीसी ॥

हंसो बोलो ज़रा रंजो महन दिलसे हटा करके ॥
गई बातोंको जानेदे धीर मनमें बंधा करके ॥ १ ॥
मैं था लाचार अय प्यारी खता मेरी मुआफ़ कीजे ॥
नहीं कुछ मैं भी सुख पाया तुझे बिरहन बना करके॥२॥
मुसीबत जो सही मैंने सती परदेश में जाकर ॥
सुनाऊंगा तुझे सारी सरे दरबार जाकरके ॥ ३ ॥
मेरी माताको लेकर अब सती दरबार को चलिये ॥
नज़ारा अपनी क़िसमतका ज़रा देखो तो आकरके॥४॥

(दरबार को जाना और परदा गिरना)

सीन ५०

श्रीपालके लशकर व दरबारका परदा

३७३

श्रीपालके लशकरमें दरबारका नजर आना और परियों का मैनासुन्दरी के आनेकी मुबारकवाद गाना ॥

चाल—(नाटक) बादे बहारां आके पुकारी गुलकी सवारी आती है ॥

आज सियानी मैना रानी धर्म निशानी आती है ॥
सुन्दर सूरत मोहनी मूरत सब मन मानी आती है ।१॥
सुन जिनवानी निश्चय ठानी सब विधि जानी, आती है ॥

परम सियानी है लासानी अमृत वानी आती है ॥ २ ॥
कोटी भटकी है महरानी वन इन्द्राणी आती है ॥
तनमन धन सब करदो अर्पण सब सुखदानी आती है ॥ ३ ॥

३७४

श्रीपालका मैनासुन्दरी व माता के साथ दरबार मे पहोंचना और सब दरबारियोंका खड़ा होकर विनय करना और तीनों का सिंहासन पर बैठना (माताका दांई तरफ व मैनासुन्दरी का बांई तरफ व श्रीपालका बीचमें) और श्रीपालका सब रानियों को बुलाना (वार्तालाप)

श्री०—अरे दरबान जाओ हमारी सब राणियों को सुनादो कि दरबारमें आएं और हमारी माता और मैनासुन्दरी को प्रणाम करें ॥

दर०—बहुत अच्छा महाराज (दरबानका चला जाना)

श्री०—अय माता देखिये यह दाईं तरफ हमारे मंत्री साहिब हैं और बाईं तरफ सैनापति साहिब हैं और यह सब दरबारी लोग है ॥

३७५

नोट-दरबान और सब रानियोंका बारी बारी आना और श्रीपालका अपनी माता व मैनासुन्दरीको सबका हाल सुनाना और सब रानियोंका सास और मैनासुन्दरीको प्रणाम करके सिंहासनसे नीचे कुर्सी पर बैठ जाना ॥

३७६

दरबानका आना और अर्ज करना ॥ (वार्तालाप)

महाराज राणीजी तशरीफ लाती हैं ॥

३७७

रैनमञ्जूषाका आना और श्रीपालका हाल बताना ॥ (वार्तालाप)

हे माता मैं आपसे रुखसत होकर एक बनमें पहोंचा जहां एक पुरुषका मंत्र सिद्ध करके आगे चला ॥ रास्ते में अपने पावों से मैंने धवल सेठका जहाज चलाया उसने मुझको अपना धर्मका बेटा बनाया ॥ जहाज पर सवार होकर धवल सेठके साथ आगे बढ़ा समुद्रमें एक लाख चोरों को बांधा ॥ हंसद्वीप पहोंचकर सहस्रकूट चैत्यालय को खोलकर दिखाया और इस सती रैनमंजूषा को ब्याहा ॥

(रैनमंजूषाका सास और मैनासुन्दरीको प्रणामकरके बैठजाना)

३७८

गुणमालाका आना और श्रीपालका हाल बताना ॥

रैनमंजूषा को साथ ले आगे चला रास्ते में एक दिन धवल सेठ रैनमंजूषा पे आशक्त हुवा उसने धोका देकर मुझको समुद्र में गिराया ॥ चक्रेश्वरी जैनदेवी ने आकर रैनमंजूषा के शील को बचाया ॥ हे माता मैं आपके चरणों की कृपा और अपनी भुजाओं के बलसे समुद्र को चीर कर कुमकुमद्वीपमें आया और इस राजकुमारी गुणमाला को ब्याहा ॥ (गुणमाला का प्रणाम करके बैठ जाना) एक दिन धवल सेठ और रैनमंजूषा का जहाज कुमकुमद्वीप में आया और धवल सेठने मुझको भांडका लड़का कहकर राजासे शूलीका हुक्म दिलाया-गुणमाला उस मुसीबत में मेरे पास

आई रैनमंजूषा ने मेरी असलीयत बताई ॥ राजा खुद दिलमें शरमिन्दा हुआ और बजाए मेरे धवल सेठको शूलीका हुक्म दिया। मैंने शिफ़ारिश करके धवल सेठको रिहा कराया मगर वह खुद अपने फेलों से शरमिन्दा होकर मुलके अदम को रवाना हुआ ॥

३७९

चित्ररेखा का आना और श्रीपालका हाल बताना।

हे माता यह राणी चित्ररेखा कुन्दनपुर के राजा की राज-दुलारी है और मेरी प्राण प्यारी है (चित्ररेखाका प्रणाम करके बैठ जाना)

३८०

विलासमती का आना और श्रीपालका हाल बताना॥

यह कंचनपुर के राजा वज्रसेन की विलासमती राजकुमारी है जो सबको आनन्दकारी है ॥ हे माता इस तरहसे कुछ दिन कुमकुमद्वीपमें राज किया और आपकी कृपासे सब प्रकार सुख भोगा (विलासमती का प्रणाम करके बैठ जाना)

३८१

श्रीपालका सब राणियों को मैनासुन्दरीका हाल बताना और उसको पटराणी बनानेकी मंशा जाहिर करना ॥ [वार्तालाप]

अय मेरी प्यारी राणियों यह वही सती मैनासुन्दरी है जिसने मेरे कुष्टको हटाया मुझको मरनेसे बचाया। पिता का जुल्म सहती हुई घरबार से मुह मोड़ा मगर अपने समयक्त और

कर्मके निश्चयको न छोड़ा ॥ मुसीवतमें पतिका साथ देकर पतिव्रता धर्मको दिखाया जैन धर्मका करशमा दिखा कर सतियों में नाम पाया ॥

शेर—गर इस सतीका मेरी तरफ़ ध्यान न होता ॥
तो आज इस इजलास का निशान न होता ॥
अहसान का, इसके हमारे सरपे भार है ॥
इसपे हमारा जानोमाल सब निसार है ॥

मैं चाहता हूं आज इस सतीको महाराणी का ताज पहनाऊं और सारे रनवासमें इसको अपनी पटराणी बनाऊं ॥

३८२

सब राणियों का मैनासुन्दरी को पटराणी मानना और नमस्कार करना और फूल बरसाना ॥

चाल (नाटक) गावोरी, सब मिलके बधय्यां ॥

आवोरी सब मिलके सजनियां ॥
मैनासतीको सीस नवाओ ॥ हँस हँसके फूल बरसाओ री ॥
हरषाओ री-जश गावो री ॥ सब मिलके० ॥ टेक ॥
सतियों में सार है-महिमा अपार है ॥
सबका बिचार है-मैना पटनार हो ॥ १ ॥
सबकी सरताज है-सतियों की लाज है ॥
शुभदिन यह आजहै—सबको सुखकार हो ॥ २ ॥
जोबन नवीन है-जिन धर्म-लीन है ॥
विद्या प्रवीन है-जय जय-जयकार हो ॥ आवो०॥३॥

३८३

मैनासुन्दरी का जवाब

चाल—कत्ल मत करना मुझे तेगो तबर से देखना

कौन कहता है मुझे मैं पटके लायक नार हूं ॥
मैं तुम्हारी खाके पा और सबकी तावेदार हूं ॥ १ ॥
यह महाराजों कि कन्या इस जगह मौजूद हैं ॥
मैं तो एक छोटेसे राजा की सुता नाकार हूं ॥ २ ॥
मैं जो कुछ होती तो रुसवाई मेरी होती नहीं ॥
मत मुझे नादिम करो किसमतसे मैं लाचार हूं ॥३ ॥
याद करलो बापने कैसी मेरी इज्जत करी ॥
ताजके लायक नहीं ना राज की हकदार हूं ॥ ४ ॥

३८४

श्रीपाल का जवाब देना और मैनासुन्दरी को पटरानी का मुकट पहनाना ॥

चाल—कत्ल मत करना मुझे तेगो तबर से देखना ॥

प्राण प्यारी और हमारी मेहरबां तूही तो है ॥
बानी इस इजलासकी हां बेगुमां तूही तो है ॥ १ ॥
कुष्ट मेरा दूर करता कौन था किसकी मजाल ॥
कुष्ट हरता जैन यन्त्रकी मत्रख्वां तूही तो है ॥ २ ॥
तू सती जिन धर्म की महिमा दिखाई आपने ।
इस हमारे राजकी नामोनिशां तूही तो है ॥ ३ ॥
ताज पहनाताहू तुझको आज पटराणीका मैं [ताज सरपर रखना]
मेरे सब रणवासकी रौनकसितां तूही तो है ॥ ४ ॥

३८५

प्यारियों का मुबारकबाद गाना।

चाल (नाटक) मुबारकबादी गावो शादी शाहेज़ादी की

बोलो प्यारी जय जयकारी अब पटरानी की ॥
यह मैनारानीकी है ॥ क्या प्यारी प्यारी राजदुलारी–
धर्म निशानी की ॥ बोलो० ॥
राजघरमें-आज सभामें-चीर बंधा पटरानीका ॥
कोटीभट की है मनमानी ॥ कलियां-खिलियां-
खुशियां मचियां ॥ सब सुखदानीकी ॥ बोलो० ॥

३८६

मैनासुन्दरीका अर्दास करना (शैर)

अय महाराज एक अरमान बाकी रह गया।
हो अगर मंजूर तो खोलूं ज़बान अपनी जरा ॥

३८७

श्रीपाल का जवाब (शैर)

आपकी खातिर मुझे मंजूर है फरमाइये ॥
कौनसा अरमान बाकी रहगया बतलाइये ॥

३८८

मैनासुन्दरी का जवाब ॥ चाल—कत्ल मत करना मुझे तेगो तवरसे देखना ॥

एक दफ़ा मेरे पिता को यहां बुलाना चाहिये ॥
और उन्हें जिन धर्मका निश्चय कराना चाहिये ॥१ ॥
था घमंड उनको वहुत अपनी बड़ी तदबीर का ॥
उनके झूटे मानको सरसे गिराना चाहिये ॥ २ ॥

वह जो कहते थे कि देखेंगे तेरी तक़दीर को ॥
अब मेरी तकदीर का जलवा दिखाना चाहिये ॥ ३ ॥

३८९

श्रीपाल का मजूर करना (शेर)

आप जो चाहें वही करना मुझे मजूर है ॥
हर तरह प्यारी तेरी खातिर मुझे मंजूर है ॥

३९०

श्रीपालका दूत भेजना ॥ (वार्तालाप)

अय दूत जाओ ! राजा पहुपालको हमारी तरफ़ से दरबार में आने के लिये समाचार दो ॥

३९१

दूत-(वार्तालाप) बहुत अच्छा महाराजकी जो आज्ञा हो ॥
(प्रणाम करके रवाना होना)

३९२

श्रीपाल और मैनासुन्दरीका बात चीत करना (वार्तालाप

श्री०-हे सती मैनासुन्दरी देखो राजा पहुपाल आपके पिता वह हमारे धर्म के पिता हैं हमको उनसे विनय पूर्वक मिलना उचित है ॥

मैना०-महाराज जैसी आपकी आज्ञा होगी वैसाही होगा ॥

३९३

दूत का आना और राजा श्रीपाल से अर्ज करना ॥ वार्तालाप)

(प्रणाम करके) हे महाराज राजा पहुपाल तशरीफ़ लाते हैं ॥

३९४

राजा पहुपालका तसरीफ लाना और श्रीपाल व मैनासुन्दरीका खडे होकर विनय पूर्वक मिलना ॥ राजा पहुपालका दोनोंको न पहिचानना और हैरत से देखना और मैनासुन्दरी का पूछना ॥

चाल—क़त्ल मत करना मुझे तेगो तवर से देखना ॥

आंख उठा कर देखिये यह कौन है मैं कौन हूं।
सोच कर फ़रमाइये तुम कौन हो मैं कौन हूं ॥ १ ॥
हाल क्या है आपका और किस लिये हैरत में हो ॥
होश कर देखो ज़रा यह कौन है मैं कौन हूं ॥ २ ॥
कौन यह महाराज हैं और किसका यह दरबार है ॥
ग़ौर करके मुझको तो बतलाइये मैं कौन हूं ॥ ३ ॥
हुक्म किसका तुमने माना शर्ण किसके आए तुम ॥
आपने देखा भी कुछ तुम कौन हो मैं कौन हूं ॥ ४ ॥

३९५

राजा पहुपाल का जवाब ॥ चाल—अरे लालदेव इस तरफ जल्द आ ॥

कहूं क्या कि हैरत में आया हूं मैं ॥
मुसीबत का इसदम सताया हूं मैं ॥ १ ॥
परेशानी दिलपर मेरे छा गई ॥
मेरी अक्ल एक दमसे चकरा गई ॥ २ ॥
चकित हो गया देख परतापको ॥
नहीं मैंने पहिचाना है आपको ॥ ३ ॥
नहीं ताब मुझको जो कुछ भी कहूं ॥
न ताक़त कि सर अपना ऊपर करूं ॥ ४ ॥

३९६

मैनासुन्दरी का अपने पिता के चरणों में गिरना और कहना

चाल-मैं वहीहु प्यारी शकुंतला तुम्हें याद हो कि न याद हो ॥

मैं वही हू मैना सितमज़दा तुम्हे याद हो कि न याद हो ॥
जिसे तुमने घरसे जुदा किया तुम्हे याद हो कि न याद हो१॥
मेरा मान तुमने गिरा दिया मुझे जाके कुष्टीसे ब्याह दिया ॥
नहीं रहम दिलमें ज़रा किया तुम्हें याद हो कि न याद हो २
मेरी माताने भी अरज़ करी पर एक तुमने नहीं सुनी ॥
वह तो रो रही थी खड़ी खड़ी तुम्हें याद हो कि न याद हो॥३॥
नहीं माना कर्मको आपने नहीं जाना धर्मको आपने ॥
किया मान बलका आपने तुम्हें याद हो कि न यादहो ॥४॥
मेरे गुरुको तुमने बुरा कहा मैने सुनके मनमें वह दुख सहा ॥
जो ज़ुबांसे जाए नहीं कहा तुम्हे याद हो कि न यादहो ॥५॥
अजी तुमने मेरेसे वह किया जो कभी किसी ने नहीं सुना ॥
कुछ खयाल मेरा नहीं किया तुम्हे याद हो कि न यादहो ॥६॥
मुझे सोंप जिसको गएथे तुम यह वही है देखो तो पुर अलम॥
जाके कुष्ट जारी था दम बदम तुम्हें याद हो कि न यादहो ॥७॥
कहो अब भी आया तुम्हें यकीं कभी कर्म टारे टरे नहीं ॥
मैंने आपसे थी यही कही तुम्हें याद हो कि न यादहो ॥८॥
अब जैनधर्मकी लो शरण कभी बोलो मुहसे न वह सखुन ॥
जो सुनाए थे मुझे दुर्वचन तुम्हें यादहो कि न यादहो ॥९॥

३९७

राजा पहुपालका मैनासुन्दरी और श्रीपालको गले से लगाना और मैनासुन्दरीसे मुवाफी मांगना और मैनासुन्दरी की तारीफ करना और जैन धर्म पर निश्चय लाना और कर्म फिलासफी का काइल होना ॥

चाल-बर से यहां कौन खुदा के लिये लाया मुझको ॥

सरपे आंखोपे कलेजेपे बिठाऊं तुझको ॥
आ मेरी बेटी गलेसे मैं लगाऊं तुझको ॥ टेक ॥
आप शरमिन्दाहूं मैं कहना न तेरा माना ॥
होके नादां तुझे तकलीफ़ में नाहक डाला ॥
मुझको अफ़सोस है पहले न तेरा गुण जाना ॥
जिदमें आ करके यूंही कर्मका झगड़ा ठाना ॥
होगया अबतो सती कर्मका निश्चय मुझको ॥
जैन बाणीका व जिन धर्मका निश्चय मुझको ॥ १ ॥
भूल जो मुझसे हुई बेटी मुझे मुवाफ़ करो ॥
सब गिला दूर करो आपका दिल साफ करो ॥
पिछली बातों को नहीं बेटी कभी नहीं याद करो ॥
अब दया दिलमें धरो और यह दिल शादकरो ॥
प्यारी अंग देशका हो राज मुबारक तुझको ॥
और पटराणीका यह ताज मुबारक तुझको ॥ २ ॥
मुझे तदबीर का दावा था वह बातिल निकला ॥
प्यारी तक़दीरका निश्चय तेरा कामिल निकला ॥
कुष्टी समझा था जिसे वह शहे आदिल निकला ॥
बादलों में था छुपा यह माह कामिल निकला ॥

जो कहा था तूने सत करके दिखाया मुझको ॥
सरे दरबार सती नीचा दिखाया मुझको ॥ ३ ॥
अय मेरी बेटी शान बढ़ाने वाली ॥
तू श्रीपालका है कुष्ट हटाने वाली ॥
तू है जिन धर्म की महिमा को दिखाने वाली ॥
और सती धर्मको दिखलाके बताने वाली ॥
अपने सत शीलका है जलवा दिखलाया मुझको ॥
उम्रभर के लिये मननून बनाया मुझको ॥ ४ ॥
बे शुबा इस सारे इजलासकी बानी तू है ॥
अय मेरी लख्ते जिगर धर्म निशानी तू है ॥
लाज तू कुलकी मेरी आखों की पुतली तू है ॥
तू ध्वजा धर्म की और शीलकी पुतली तू है ॥
तूने जिन धर्मका हामी है बनाया मुझको ॥
तूने ही कर्मका है निश्चय कराया मुझको ॥ ५ ॥

३९८

मैनासुन्दरी का हाथ जोड़कर अपने पिता से मुआफी मांगना ॥
चाल—सोरठिया प्यारी बोलीजो भरने दो जल नीर ॥

अब-माफ पिता कर दीजे जी बेटीकी तकसीर ॥ टेक ॥
मैं कहा जो बालापन में ॥ तुम मतना रखियो मनमें ॥
मैं सीस धरूं चर्णन में जी ॥ बेटी की० ॥१॥
था कुछ नहीं दोष तुम्हारा ॥ यूंही था करम हमारा ॥
करमन वश सब संसारा जी बेटी की० ॥ २ ॥

नहीं करते जो तुम मन मानी ॥ किम होती मैं पटरानी ॥
इस कोटीभटकी रानीजी ॥ बेटीकी० ॥ ३ ॥

३९९

राजा पहुपाल का मैनासुन्दरी से उज्जैन जाने के लिये कहना ॥
चाल—(इन्दरसभा) अरे लालदेव इस तरफ़ [illegible] आ ॥

सुनो बेटी मुझको नहीं कुछ खयाल ॥
मैं हूं अपनी करनी पे नादिम कमाल ॥ १ ॥
जो कुछ रंज है दिलसे तू दूर कर ॥
मेरा एक कहना तू मंजूर कर ॥ २ ॥
गमन यहां से उज्जैन को कीजिये ॥
दरश अपनी माताको भी दीजिये ॥
वह ग़ममें तेरे बेटी बीमार है ॥
तेरी यादमें सारा दरबार है ॥ ४ ॥

४००

मैनासुन्दरी का उज्जैन जाना मंज़ूर करना
चाल—(क़व्वाली) [illegible] ॥

दिलो जानसे पिताजीका हुक्म मंजूर है मुझको ॥
नहीं जो मानना गरचे वह मंज़ूर है [illegible] १ ॥
आप मेरे पिता हैं मैं तेरी नाचार बेटी हूं ॥ [illegible]
[illegible] २
मैं हूं नादिम मेरे [illegible] तेरी [illegible]
[illegible] ३

सज़ावारे सज़ा गर हूं तो देदीजे सज़ा मुझको ॥
सेर तसलीम खम है हर सज़ा मंजूर है मुझको ॥४॥
साथ श्रीपाल को लेकर तेरे दरबार आऊंगी ॥
हुकम कुछ और हो फ़रमाइये मंजूर है मुझको ॥ ५ ॥
(परदा गिरना)

सीन ५१

उज्जैन के राजा पहुपाल के दरबार का परदा

४०१

नोट—राजा पहुपाल ने मैनासुन्दरी से रुखसत होकर और उज्जैन में आकर श्रीपाल व मैनासुन्दरी की आमद में दरबार किया ॥

४०२

राजा पहुपाल व रानी निपुणासुन्दरी व सुरसुन्दरी व सब दरबारियोंका दरबार में बैठे हुवे नजर आना और दरबान का आकर खबर देना ॥

(वार्तालाप)

महाराज के चर्णों में प्रणाम, आज महाराज कोटीभट श्रीपाल ए महासती मैनासुन्दरी के दरबार में तशरीफ़ लाते हैं ॥

४०३

रियोंका मुबारकबाद गाना ॥ चाल—(नाटक) दर्शीवाली का नीर दिखाना

नासुन्दरी का धनवाद गाना ॥
सरको झुका झुका ॥ मैना० ॥ टेक ॥

आती है वह सती श्रीमण ॥ जिसको दिया—कुष्टी से ब्याह
जिसके दुखका नहीं था ठिकाना ॥ सरको० ॥ १ ॥
यज्ञ रचाकर ध्यान लगाकर ॥ छिनमें दिया-कुष्ट मिटा ॥
बना जैसे कि इन्द्र समाना ॥ सरको० ॥ २ ॥
उसके लिये दरबार लगा है ॥ माता पिता—छोटा बड़ा ॥
सारे गाते हैं गुण उसके नाना ॥ सरको० ॥ ३ ॥

४०४

श्रीपाल व मैनासुन्दरी का मय गुणमाला व रैनमंजूषा व सैनापती के दरबार में आना ॥ सब दरबारियों का जय जयकार करना व फूल बरसाना ॥ श्रीपाल व मैनासुन्दरी व रानियों का निपुणसुन्दरी को प्रणाम करना ॥ निपुणसुन्दरी का सबको गले लगाना ॥ सुरसुन्दरी (मैनासुन्दरी की बड़ी बहन) का मैनासुन्दरी का गले लगाना ॥ राजा का श्रीपाल व मैनासुन्दरी को व निपुणसुन्दरी को सिंहासन पर बिठाना और सब रानियों का व सुरसुन्दरी का नीचे कुरसियों पर बैठाना ॥ और परियों का धर्म की और मैनासुन्दरी की महिमा वर्णन करना॥

चाल—(गजल) कत्ल मत करना मुझे तेगो तबर से देखना ॥

सत धरम जिनराज का है इसकी महिमा देखलो ॥
देखलो मैनासती, करमों की महिमा देखलो ॥ १ ॥
देखलो श्रीपाल को जो कुष्ट से लाचार था ॥
जिन धरम सिद्धचक्रकी पूजा की महिमा देखलो ॥२॥
मैनासुन्दर है वही कुष्टी से जिसको ब्याह दिया ॥
शीलकी महिमा सती मैना की महिमा देखलो ॥ ३ ॥
सेठजीने रैनमंजूषा को देखा बद नज़र ॥
वह पड़ा है नर्क में यहां इसकी महिमा देखलो ॥ ४ ॥

धर्म ही है सार जगमें धर्म का निश्चय करो ॥
धर्मका परताप देखो इसकी महिमा देखलो ॥ ५ ॥

४०५

राजा पहुपाल का मैनासुन्दरी से धर्म उपदेश के लिये प्रार्थना करना ॥ (वार्तालाप ॥

अय बेटी मैनासुन्दरी सती श्रोमणी मैंने झूटा तदबीर का दावा किया और तुझको दुख दिया ॥ अब मैं अपनी पिछली बात पर पिचताता हूं और तेरी कर्म मीमानसा पर निश्चय लाता हूं ॥ अय मेरी आखों की पुतली और मेरे कुलको उज्जल करनेवाली कुछ धर्म का उपदेश सुनाओ और मुझको धर्म मार्ग में लगाओ ।

४०६

मैनासुन्दरी का धर्म उपदेश देना और सबको जैन धर्म का और कर्मों का निश्चय कराना ॥

दोहा—सकलज्ञेय ज्ञायक सदा हित उपदेशक सार ॥
वीतराग जिन राजको नमों सो बारम बार ॥

चौपाई १६ मात्र (रामायण)

जगत विषे यह जीव अपारा । दुखसे डरें चहें सुख सारा ॥
पर नहीं काम करें सुखकारा । कर विषय भोग सहें दुखभारा १
पी मद मोह भ्रमे जग माहीं । निज सरूप कभू चेतत नांही ।
धारें सत्य तत्व मन नांही । कर मिथ्यात कुगत गत जांही२॥
जैन धरम जगमें सुखकारी । अन्य सभी जानों दुखकारी ॥

सो अब सुनलो सभी नरनारी । हो भवभव सबसुख करतारी ३
सात तत्व जीवादिक जानो । यहही प्रयोजन भूत बखानो ॥
इनही को निश्चय मन आनो । और सकल मिथ्या कर मानो ४
दर्शन ज्ञान चरण चित लावो । राग द्वेष सब दूर हटावो ॥
छोड़ अशुभ शुभ भावन भावो । फिर दोऊ छोड़ शुद्ध पदपावो ५
स्याद बाद मुद्रित जिन बाणी । यह बाणी तिरभवन में मानी ॥
सत्यरूप और धरम निशानी । ध्यावें सब सुरनर मुनि ज्ञानी ६
हैं दस लक्षण धरम बताए । सो ही जिन शासन में गाए ॥
जब यह धर्म जीव चितलाए । तबही वह सुर शिवपद पाए ७
आकिंचन सत धर्म सुनीजे । संजम शौच सरल मन कीजें
ब्रह्मचर्य्य तप त्याग करीजै । मार्दव भाव छिमा धर लीजे ८
धर्म मात पितु बंधू भाई । धर्म बिना नहीं कोई सहाई ॥
धर्म देत सम्पत प्रभुताई । योग पुत्र नारी सुखदाई ॥ ९ ॥
धर्म तजे सो सदा दुख पावे । बैरी सम भाई हो जावे ॥
नारी धन सुत हीन कहावे । दुखसे मर दुर्गत में जावे ॥१०॥
पाप और पुन्य करे जो कोई । जगमें कर्म कहावे सोई ॥
करता हरता और न कोई । कर्म गति जो हो सोई होई ॥११
ताते धर्म करो नर नारी । शंकट मोचन सुख करतारी ॥
तनधन लाज राज सुखकारी । एक धरम पर दो सब वारी १२॥

परियों का बैन धर्म की महिमा वर्णन करना और परदा गिरना

चाल (नाटक) जैसी करनी वैसी भरनी निश्चय नहीं तो कर कर देख ॥

है जिनबानी—सब सुखदानी—निश्चय नहीं तो पढ़कर देख ॥

है हितकारी—दुख पर हारी—है सुखकारी सुनकर देख ॥
शंकटमोचान—तिहुंजगलोचन—रहित विदूपन हितकर देख ॥
है तू बशर—परमेश्वर होजा—नेक हिये में धारकर देख ॥
हिरदे में जो धरे—जग से सुगम तिरे ॥
सब दुखको पर हरे—पशु नर्क गत टरे ॥
षट मत में सार है—महिमा अपार है ॥
जय जय जयकार है—तनमन निसार है ॥ पढ़कर देख० ॥

सीन ५२

श्रीपाल के दरबारका परदा

४०८

श्रीपाल व मैनासुन्दरी उज्जैन से विदा होकर अपने दरबार में आए ॥
एक दिन श्रीपाल का अपने देश चम्पापुर को याद करना और मैनासुन्दरी से चलने का इरादा जाहिर करना ॥

चाल—सखी सावन बहार आई झुलाए जिसका जी चाहे ॥

मेरा चम्पा नगर प्यारा मुझे अब याद आता है ॥
जनम भूमी मेरी परजा मेरा घर याद आता है ॥१॥
अगरचे मिलगई हशमत बना राजों का मैं राजा ॥
मगर मुझको वतन मेरा अभी तक याद आताहै ॥ २ ॥
भला किस काम का वह सुत जो चक्री भी हवा तो क्या ॥
नहीं भोगा पिता का राज सो वह याद आताहै॥ ३ ॥

प्रभू कीजो मदद मेरी हरो चिन्ता मेरे दिलकी ॥
मुझे हरदम वतन चम्पा पियारा याद आता है ॥ ४ ॥
वतन के सामने सब हेच राज और पाट दुनिया का ॥
है सच हब्बुल वतन अपना सभी को याद आता है ॥५
मेरी प्यारी सती मैना कहो क्या आपकी मंशा ॥
मेरा लगता नहीं है जी यहां, घर याद आताहै ॥ ६ ॥

४०९

मैनासुन्दरी का जवाब ॥ (शैर)

मुनासिब और मुबारक बात यह तुमने बिचारी है ॥
वही मंशा हमारी है जो कुछ मंशा तुम्हारी है ॥

४१०

श्रीपालका रवानगी का हुक्म देना ॥ (वार्तालाप

श्री०-मंत्री साहिब हमारा चम्पापुर जाने का मंशा है फौरन चलने का इन्तज़ाम किया जाए ॥

मंत्री बहुत अच्छा महाराज फौरन हुकमकी तामील होगी ॥

दरबान-(प्रणाम करके) महाराज सैनापती साहिब तशरीफ लाते हैं ॥

सैनापती-(तलवार की सलामी देना)

श्री०-सैनापती साहिब हमारा चम्पापुर जानेका इरादा है ॥ फौरन तमाम लशकर तय्यार हो जाए और चम्पापुर की तरफ रवाना किया जाए ॥

सैनापती-बहुत अच्छा सरकार आजही कूचका हुक्म देताहूं

सीन ५३

श्रीपाल की सैनाका परदा

४११

श्रीपालका सैना सहित चम्पापुर के करीब पहोंचना और मंत्री से बातचीत करना ॥

श्री०--अय मंत्री चम्पापुर नगर करीब है तमाम सैना को तय्यार करो और नगर में प्रवेश करो ॥

मंत्री--हे महाराज ज़रा ग़ौर फरमाइये कि महाराज कोटी भट श्रीवीरदमन आपके चचा अभी तक आपको लेने को नहीं आए हैं इससे मालूम होता है कि उनको कुछ ग़रूर है और आपको उलटा राज देने में उजर है मुनासिब है कि पहिले एक दूत को भेजा जाए ताकि जो असलीयत है वह खुल जाए

श्री०--बेशक आपकी राय माकूल है (दूत की तरफ देख कर) अय दूत फौरन महाराज वीरदमन के पास जावो और हमारी तरफ से निवेदन करो कि वे हम से आकर मिलें और हमारा राज हमको दें ॥

दूत--बहुत अच्छा महाराज जो महाराज की आज्ञाहो ॥

(दूत का चला जाना)

सीन ५४

बीरदमनके दरबार का परदा

४१२

दूतका बीरदमनके दरबार में पहोंचना और संदेशा देना ॥ (वार्तालाप)

अय महाराज बीरदमन ताजवर—अय बहादुर कोटीभट नामवर, अय महाराज अरीदमन की दाहनी भुजा-अय महाराजा श्रीपाल के बहादुर चचा, आज महाराजा अधिपति कोटीभट श्रीपाल सामान चक्रवर्ती अपने दल बल के साथ तशरीफ लाए हैं चम्पापुर के करीब पड़ाव किया है और आपके लिये एक संदेशा दिया है ॥

४१३

बीरदमन का जवाब ॥ (वार्तालाप)

अय दूत कहिये श्रीपालका क्या हाल है और क्या खयाल है। किसलिये इधर का इरादा कियाहै और क्या संदेशा दिया है ॥

४१४

दूतका जवाब ॥

हे नाथ महाराजा श्रीपाल इस तमाम भूमंडल के शहंशाह जीशान हैं-दुष्ट और मगरूर राजाओं के लिये मानो कालके समान हैं ॥ पहले जो उनके तनमें रोग था वह सब दूर हुवा तमाम बदन जलवे पुरनूर हुवा ॥ हजारों राजाओं को जीत

उनकी राज कुमारियों को ब्याह कर लाए हैं, चतुरंग सैना को साथ लेकर अपने देश में आए हैं ॥

शैर—कुमकुम नगर के राव को भी ज़ेर किया है ॥
कब्जे में हंसद्वीप और लंका को लिया है ॥ १ ॥
सोरठ का देश मरहठ और गुजरात को लिया ॥
पाटन ईरान चीन को है ज़ेरे पा किया ॥ २ ॥
जीता है जा उज्जैन को काबुल कंधार को ॥
फ़तह किया है उसने सारी मारवाड़ को ॥ ३ ॥
नरपार देश पांडु में क़ब्ज़ अपना जमाया ॥
कुछ तुर्क और जापान को आधीन बनाया ॥४॥
सब रूम शाम रूस भी कब्जे में आगए ॥
इकबाल है कि आपसे आ सर झुका गए ॥५॥

हे राजन उस बरबीर कोटीभट श्रीपाल ने अनेक राजाओं को अपने चरणों में गिराया है और उनकी राज कन्याओं को अपनी राणी बनाया है ॥

शैर—गरचे वह श्रीपाल चकरवर्त है नहीं ॥
पर बलमें दलमें आज वह चक्री से कम नहीं॥१॥
अय नाथ श्रीपाल ने यह बात कही है ॥
खिदमत में दस्तबस्ता यही अर्ज़ करी है ॥ २ ॥
आ प्यार महोब्बत से मुलाक़ात कीजिये ॥
कुछ और खयाल अपने नहीं दिलमें कीजिये ॥३॥
तुम बाप के समान हो मैं पुत्र तुम्हारा ॥
लाज़िम है तुम्हे देदो हमें राज हमारा ॥ ४ ॥

४१५

नीरदमन का जवाब ॥

अय दूत तू बड़ा गुस्ताख़ है जो हमारे सामने ऐसे सख्त कलाम कहता है ॥ तेरा राजा अभी तक बच्चा अक़ल का कच्चा है जो राज के लिये हमसे दरख्वास्त करता है ॥

शैर—अरे मूरख कहीं यह राज भी मांगे से मिलता है ॥
बिना शमशीर चमकाए नहीं हरगिज़ यह मिलता है १॥
राज के वास्ते गुरुको पिता को मार देते हैं ॥
यारको नारको सुतको सभी को वार देते हैं ॥ २ ॥
जान अपनी भी दे देते हैं एक इस राज की खातिर ॥
बता मैं किस तरह देदूं राज उसकी अर्ज़ सुनकर ॥ ३ ॥

अरे दूत तू भी बड़ा मूरख है जो ऐसे नादान राजा की दरख्वास्त को लेकर हमारे सामने आया ॥ देखो यह राज और सलतनत का मुआमला बड़ा टेढ़ा होता है--इस में बाप बेटे का भी भरोसा नहीं होता है ॥

शैर—किया नहीं भर्तचक्री ने भी टाला ॥
राज के वास्ते भाई निकाला ॥ १ ॥
विभीषण ने राम की तर्फ़ आके ॥
क़त्ल करवा दिया रावण को जाके ॥ २ ॥
कोरु पांडु भिरे इसही की खातिर ॥
मरे आपस में लड़ इसही की ख़ातिर ॥ ३ ॥

जाओ जाओ उस श्रीपाल से कहदो कि अगर कुछ जान है तो मैदान में आए--अपनी भुजाओं का बल दिखलाए-

सामने आकर शमशीर चमकाए-अपने राज का दावा जित लाए ॥ जबतक दोनों तरफ़ से संग्राम न होगा-हरगिज़ हरगिज़ राज का फ़ैसला न होगा ॥

४१६

दूत का जवाब ॥ (चाल—सवय्या)

बाल न जान अरे नृपको, प्रचंड अखंड भ्रड बड़े हैं ॥
फ़ौज प्यादे इते हैं संगमें, जैसे टिड्डी के दल कहीं आन पड़े हैं१
या सम और न राज कोई, महि मंडल के नृप पाए पड़े हैं ॥
देश नगर सब उजाड़ दिये, वाके जो नर मूरख आन अड़े हैं॥२
(दोहा)-याते राजा छोड़ कर, निज दल बलका मान ॥
जल्दी यहां से चालिये, धरो सीस पर आन ॥
शैर--राज श्रीपाल को दीजे कि यह उसकी अमानत है ॥
तेरा इंकार का करना अमानत में खयानत है ॥

४१७

वीरधमनका कोप करना और जवाब देना ॥

अरे गंवार दूत कहां वह श्रीपाल कलका लड़का नातजरबे कार बुद्धि हीन और कहां मैं कोटीभट युद्ध विद्या में प्रवीण ॥
शैर--हमारे देख बलको इन्द्र भी तो कांप जाते है ॥
हजारों देवता आकर चरण में सर झुकाते हैं ॥ १ ॥
मैं जिसदम म्यान से तलवार अपनी को निकारूंगा ॥
एकही बारमें उसको मार धरती में डारूंगा ॥ २ ॥
हमारे सामने श्रीपाल हरगिज़ हो नहीं सकता ॥
अकलमें दलमें और बलमें बराबर हो नहीं सकता२

४१८

धूतका जबाब (शैर

सब राजपाट छोड़दे मतकर गुमान तू ॥
यह मुफ्तकी लड़ाई बस हमसे न ठान तू ॥ १ ॥
कबतक लड़ेगा देख तू फौजे अजीम से ॥
यह जुरअतें बईद हैं मर्दे फ़हीमसे ॥ २ ॥
गर तू है कोटीभट तो हां वह भी है कोटीभट ॥
बल्के है वह तो देख कोटीभटका कोटीभट ३ ॥
यह बात जो सुन पाए तेरा सर क़लम करे ॥
हस्ती तेरी ख्वानए मुल्के अदम करे ॥ ४ ॥
लाज़िम है तुझको जल्दी से चल करके प्यार कर ॥
तकरार छोड़ ताबेदारी अख़्तियार कर ॥ ५ ॥

४१९

वीरदमन का जवाब ॥

अय नाबकार नाहंजार—
शैर—चाहता हूं काट सर तेरा ज़मी में डार दूं ॥
क्या करूं मैं राजनीतिसे मगर लाचार हूं ॥ १ ॥
मेरे दरबार में श्रीपालकी तारीफ़ करता है ॥
हमारे शान शौकतकी तू यों तोहीन करता है ॥ २ ॥
मरा जब बाप उसका मैंनेही हाथों से पाला था ॥
हुवा जब कुष्ट तब मैंनेही उसे घरसे निकाला था ॥५॥
आज क्या हमसे वह यों हमसरी करने को आता है ॥
जा कहदे क्यों हमारे हाथसे मरने को आता है ॥ ४ ॥

४२०

दूत का जवाब ॥

हे नाथ मान न कीजे--

ौर-मान करना चाहिये हरगिज़ नहीं इन्सान को ॥

तीरको देखा है हमने सरके बल गिरता हुवा ॥ १ ॥

मान सूरज करता है आकाश में चलते हुए ॥

शामको देखा उसीको आड़में छुपते हुए ॥ २ ॥

बातजो मानी नहीं रावणने अपने मानसे ॥

देखलो मारा गया वह एक लखनके बानसे ॥ ३ ॥

जब जरासिंधरायको कुछ मान दिलमें आगया ॥

कर दिया श्रीकृष्णने एकदम में सर उसका जुदा ॥४॥

इसलिये तुमको न इतना मान करना चाहिये ॥

बस हुकम श्रीपालका माथे पे धरना चाहिये ॥ ५ ॥

४२१

वीरदमनका जवाब ॥ (शैर)

ासिल है हमको आज ज़माने में सरवरी ॥

चारों तरफ़से हिन्द है हमने फ़ते करी ॥ १ ॥

ावाज़ आ रही है नाम बीरदमनकी ॥

और धाक पड़रही है नाम बीरदमनकी ॥ २ ॥

ा कहदे श्रीपालसे गर जां में जान है ॥

सीनेमें अगर दिल है और तरकशमें बान है ॥ ३ ॥

ो आके सामने लड़े वह कारज़ार में ॥

वरना न मूह दिखाए कभी इस दयार में ॥ ४ ॥

४२२

दूत का जवाब ॥ शैर

गो तू तजरबेकार है और होशियार है ॥
बल भी है, तेरा हाथमें भी आबदार है ॥ १ ॥
पर आपके इक़बालका अब इख्तताम है ॥
बस आबो ताब आपकी सारी तमाम है ॥ २ ॥
श्रीपालके इकबालकी यह पहली रात है ॥
इस वास्ते समझले फ़ते उसके हाथ है ॥ ३ ॥
यूं खाने.जंगी करना जहालतका काम है ॥
मालिक से सर फिराना हिमाकत का काम है ॥ ४ ॥
करनी बहादुरोंको ज़लालत न चाहिये ॥
हरगिज़ भी अमानत में ख़यानत न चाहिये ॥ ५ ॥
कोई भी इसमें आपका हामी न बनेगा ॥
यह काम, तेरी बाइसे बदनामी बनेगा ॥ ६ ॥

४२३

वीरदमन का कोप करना और दूत को निकाल देना (वार्तालाप)

शैर--बस बस ज़ुबान बन्दकर यह बात छोड़दे ॥
वरना अय दूत जीने की अब आस छोड़दे ॥
अय दुष्ट बदकार धीठ नाबकार क्या तुझको मौतका डर नहीं जो ऐसा बेख़ौफ़ होकर सरे दरबार हमारी निन्दा करता है ॥ जाओ दूर हो जाओ हमारी नज़रसे और निकल जाओ हमारे दरबार से और कहदो उस श्रीपालसे कि अगर राजकी ख़ुवाहिश है तो मैदान में आए फिर जिसकी किसमत में हो राज पाए (दूतका चला जाना)

सीन ५५

श्रीपालके लशकरका परदा ॥

४२४

दूतका वापिस आकर श्रीपालको हाल सुनाना (वार्तालाप)

हे महाराज राजा वीरदमन को आपका संदेसा दिया और
अनेक प्रकार ऊंच नीच दिखाकर उसको समझाया साम दाम
भय भेदको भी काम में लाया मगर उस मूरखने आपसे आ-
कर मिलना और राज देना मंजूर नहीं किया बल्कि आमादे
जंग हुवा ॥ वह अपने दलबल का इस क़दर घमंड करता है
कि अपने बराबर किसीको नहीं समझता है ॥

४२५

श्रीपालका कोप करना और तलवार सूतना और लडाई का इरादा करना
(सैनापती आदिका सामने खडे हुवे नजर आना) ॥ (वार्तालाप)

हा ! जालसाज़ दग़ाबाज़ वीरदमन तूने धोका देकर मुझको
चम्पापुर से निकाला और मेरे बापके तख्तका मालिक बन
क्या अमानत में ख़यानत करना नामवरों का काम है क्य
धोका देना बहादुरों का काम है ॥ तूने आज क्षत्रीकुल क
बट्टा लगाया हमारे ख़ानदानके नामपर धब्बा लगाया ॥ अ
ज़रा मेरे सामने मैदान में आ और अपना बल दिखा ॥

४२६

श्रीपालका सैनापती को लडाई का हुकम देना और सबका लडाई के लिये रवाना होना ॥ चाल—(नाटक)

(तलवार सूतकर)

बहादुर जंगी एकदम नंगी म्यान करो शमशीर ॥
बीरदमन को चलकर मारो करो नहीं ताखीर ॥ १ ॥
सब फ़ौजें तय्यार करावो राजपूत बरबीर ॥
अरमन जरमन तुर्क पठान और रूस चीन कशमीर ॥ २ ॥
एकदम मिलकर चलकर घेरो नगरी और जागीर ॥
देव बशर जिन भूत असुरकों डारो दममें चीर ॥ ३ ॥

(सबका रवाना होना)

सीन ५६

परदा मैदाने जंग

४२७

(१) श्रीपालकी फौजोंका सैनापती के साथ गुजरते हुवे नजर आना (२) वीरदमनकी फौजोंका सैनापती के साथ गुजरते हुवे नजर आना ॥ [३] लडाईका बाजा बजते हुवे और दोनों फौजोंका लडते हुवे नजर आना (४) वीरदमनकाफौजके साथ गुजरतेहुवे नजर आना [५] श्रीपालका सातसौ वीरोंके साथ गुजरते हुवे नजर आना [६) दोनों तरफके मत्रियोंका आपस में विचार करते हुवे नजर आना और फैसला करना कि चूं कि मुआमुला बरकाहै इसलिये लडाई बन्दकी जाय और श्रीपाल और वीरदमन दोनों आपस में लडे जो जीत जाय वही चम्पापुर का राज पाय ॥ (७] श्रीपाल और वीरदमन दोनो का मैदाने जंगमें आना और श्रीपालका वीरदमन से कहना ॥

श्री०—(शान्ती से) अय चचा वीरदमन मैंने आपको अपना राज बतौर अमानत दिया था अब आप मेरा राज मुझको दें ॥ अमानत में खयानत करना क्षत्री का धर्म नहीं है ॥ आप मेरे पिता के बराबर हैं आप पर हाथ उठाना मेरा धर्म नहीं है ॥

४२८

वीर०-(गुस्से से) अरे नादान श्रीपाल तू राजनीति को नहीं जानता जब हम तुम दोनों रणभूमि में आ गए तो फिर चचा और भतीजा कैसा ॥ तूने पहले ही मेरा कहना क्यों न माना अब हरने से क्या फ़ायदा अब तू मेरे हाथ से जान बचाकर नहीं जा सकता ॥

४२९

श्री०-(गुस्से से) अय दग़ाबाज़ वीरदमन तूने बहादुरों के नाम को डबोया और ईक्ष्वाक खानदान की शानको खोया ॥ अब (तलवार उठाकर) यह मेरी तलवार होगी और तेरा सर होगा-अब मेरे आगे तेरा युद्ध का अपील करना लाहासिल होगा ॥ देख कोई दम में तू मेरे हाथ से मारा जायगा-और अपने किये की सज़ा पाएगा ॥ तेरी मौत का फ़ैसला अब मेरी तलवार इशारे पर है ॥ यह क्षत्री की [illegible] है इसमें [illegible]

४२६

श्रीपालका सैनापती को लडाई का हुकम देना और सबका लडाई के लिये रवाना होना ॥ चाल—(नाटक)

(तलवार सूतकर)

बहादुर जंगी एकदम नंगी म्यान करो शमशीर ॥
वीरदमन को चलकर मारो करो नहीं तारवीर ॥ १ ॥
सब फ़ौजें तय्यार करावो राजपूत बरबीर ॥
अरमन जरमन तुर्क पठान और रूस चीन कशमीर ॥ २ ॥
एकदम मिलकर चलकर घेरो नगरी और जागीर ॥
देव बशर जिन भूत असुरको डारो दममें चीर ॥ ३ ॥

(सबका रवाना होना)

सीन ५६

परदा मैदाने जंग

४२७

(१) श्रीपालकी फौजोंका सैनापती के साथ गुजरते हुवे नजर आना (२) वीरदमनकी फौजोंका सेनापती के साथ गुजरते हुवे नजर आना ॥ [३] लडाईका बाजा बजते हुवे और दोनों फौजोंका लडते हुवे नजर आना (४) वीरदमनकाफौजके साथ गुजरतेहुवे नजर आना [५] श्रीपालका सातसौ वीरोंके साथ गुजरते हुवे नजर आना [६) दोनों तरफके मन्त्रियोंका आपस में विचार करते हुवे नजर आना और फैसला करना कि चूंकि मुआमुला घरकाहै इसलिये लडाई बन्दकी जाए और श्रीपाल और वीरदमन दोनों आपस में लडे जो जीत जाए वही चम्पापुर का राज पाए ॥ (७] श्रीपाल और वीरदमन दोनो का मैदाने जंगमें आना और श्रीपालका वीरदमन से कहना ॥

श्री०—(शान्ती से) अय चचा वीरदमन मैंने आपको अपना राज बतौर अमानत दिया था अब आप मेरा राज मुझको दें ॥ अमानत में खयानत करना क्षत्री का धर्म नहीं है ॥ आप मेरे पिता के बराबर हैं आप पर हाथ उठाना मेरा धर्म नहीं है ॥

४२८

वीर०-(गुस्से से) अरे नादान श्रीपाल तू राजनीति को नहीं जानता जब हम तुम दोनों रणभूमि में आ गए तो फिर चचा और भतीजा कैसा ॥ तूने पहले ही मेरा कहना क्यों न माना अब डरने से क्या फायदा अब तू मेरे हाथ से जान बचाकर नहीं जा सकता ॥

४२९

श्री०-(गुस्से से) अय दगाबाज़ वीरदमन तूने बहादुरों के नाम को डबोया और इक्ष्वाक खानदान की शानको खोया ॥ अब (तलवार उठाकर) यह मेरी तलवार होगी और तेरा सर होगा-अब मेरे आगे तेरा सुलह का अपील करना लाहासिल होगा ॥ देख कोई दममें तू मेरे हाथ से मारा जायगा-और अपने किये की सज़ा पाएगा ॥ तेरी मौत का फ़ैसला अब मेरी तलवार के इशारे पर है ॥ यह क्षत्री की तलवार है इसमें इन्तजा

सीन ५७

चम्पापुर के दरबार का परदा ॥

४३४

चम्पापुर का राजदरबार नजर आना और श्रीपाल का मय राणियों व मन्त्री व सैनापती के दरबार में आना और परियोंका महाराज श्रीपाल की आमद में मुबारकबाद गाना ॥

चाल (नाटक) आज प्यारी देखो गुलशन में आई बहार ॥

आज प्यारी कैसी गुलशन में आई बहार ॥ टेक ॥
कर दिग विजय आए श्रीपाल राजा ॥
रानी हैं आठ हजार ॥ हजार प्यारी० ॥ १ ॥
रैनमंजूषा व गुणमाला प्यारी ॥
मैना की महिमा अपार ॥ अपार प्यारी० ॥ २ ॥
नाचो नचय्या व गावो बधय्या ॥
कर करके सोला सिंगार॥ सिंगार प्यारी० ॥ ३ ॥
राजा को चम्पा का राज मुबारक ॥
बोलो जय सारे पुकार ॥ पुकार प्यारी० ॥ ४ ॥

४३५

वीरदमनका श्रीपाल के सर पर ताज रखना और आप बन में जाने को तय्यार होना ॥

चाल--कतल मत करना मुझे तेगो तबर से देखना ॥

कौन कहता है कि दुनिया में बड़ा आराम है ॥

ग़ौर कर देखा सरासर यह दुखों का धाम है ॥ १ ॥
जगमें सुख होता तो तिर्थंकर इसे क्यों छोड़ते ॥
चारों गतमें देखलो सुखका कहीं नहीं नाम है ॥ २ ॥
अय मेरे बेटा श्रीपाल अय मेरे लख़्ते जिगर ॥
ताज धरता हूं तेरे सरपे तू नेक अंजाम है ॥ ३ ॥
जैन दिक्षा लेने को मैं बनमें जाता हूं कहीं ॥
अब मेरा इस राज से क्या वास्ता क्या काम है ॥ ४ ॥

४३६

श्रीपालका वीरदमनको प्रणाम करना और वीरदमन का दिक्षा लेनेको बनमें चला जाना ॥

चाल—(यमन कल्यान (बढ़ादे क़ाज की शय और चखें पीर थोड़ी सी ॥

तुम्हें धनवाद है स्वामी बड़ी महिमा तुम्हारी है ॥
तुम्हें धन है पिता जो बनमें जाने की बिचारी है ॥ १ ॥
मुझे अपना समझ करके ख़ता मेरी मुआफ़ करना ॥
राज सब कुछ तुम्हारा है यह सब परजा तुम्हारी है ॥ २ ॥
मुबारक हो तुम्हें स्वामी परम बैराग जिन दिक्षा ॥
तुम्हारे सार चरणों में धोक हरदम हमारी है ॥ ३ ॥

(वीरदमन का चला जाना)

४३७

परियोंका जैनधर्म की महिमा वर्णन करना और, तमाशा समाप्त होना ॥

चाल-(नाटक) ला ला ला-भर भर जाम पिला गुललाला बनादे मतवाला

जय जय जय जय—निश दिन नाम जपो भगवत का—
बना के गुणमाला ॥ जय० ॥ टेक ॥

सीन ५७

चम्पापुर के दरबार का परदा ॥

४३४

चम्पापुर का राजदरबार नजर आना और श्रीपाल का मय रानियों व मंत्री व सैनापती के दरबार में आना और परियोंका महाराज श्रीपाल की आमद में मुबारकबाद गाना ॥

चाल (नाटक) आज प्यारी देखो गुलशन में आई बहार ॥

आज प्यारी कैसी गुलशन में आई बहार ॥ टेक ॥
कर दिग बिजय आए श्रीपाल राजा ॥
रानी हैं आठ हजार ॥ हजार प्यारी० ॥ १ ॥
रैनमंजूषा व गुणमाला प्यारी ॥
मैना की महिमा अपार ॥ अपार प्यारी० ॥ २ ॥
नाचो नचय्या व गावो बधय्या ॥
कर करके सोला सिंगार॥ सिंगार प्यारी० ॥ ३ ॥
राजा को चम्पा का राज मुबारक ॥
बोलो जय सारे पुकार ॥ पुकार प्यारी० ॥ ४ ॥

४३५

वीरदमनका श्रीपाल के सर पर ताज रखना और आप बन में जाने को तय्यार होना ॥

चाल--कतल मत करना मुझे तेगो तबर से देखना ॥

कौन कहता है कि दुनिया में बड़ा आराम है ॥

गौर कर देखा सरासर यह दुखों का धाम है ॥ १ ॥
जगमें सुख होता तो तिर्थंकर इसे क्यों छोड़ते ॥
चारों गतमें देखलो सुखका कहीं नहीं नाम है ॥ २ ॥
अय मेरे बेटा श्रीपाल अय मेरे लख्ते जिगर ॥
ताज धरता हूं तेरे सरपे तू नेक अंजाम है ॥ ३ ॥
जैन दिक्षा लेने को मैं बनमें जाता हूं कहीं ॥
अब मेरा इस राज से क्या वास्ता क्या काम है ॥ ४ ॥

४३६

श्रीपालका वीरदमनको प्रणाम करना और वीरदमन का दिक्षा लेनेको बनमें चला जाना ॥

चाल—(यमन कल्यान (बढ़ाई काज की शय और चर्खे पीर थोडी सी ॥

तुम्हें धनवाद है स्वामी बड़ी महिमा तुम्हारी है ॥
तुम्हें धन है पिता जो बनमें जाने की बिचारी है ॥ १ ॥
मुझे अपना समझ करके खता मेरी मुआफ़ करना ॥
राज सब कुछ तुम्हारा है यह सब परजा तुम्हारी है ॥ २ ॥
मुबारक हो तुम्हें स्वामी परम बैराग जिन दिक्षा ॥
तुम्हारे सार चरणों में धोक हरदम हमारी है ॥ ३ ॥
(वीरदमन का चला जाना)

४३७

परियोंका जैनधर्म की महिमा वर्णन करना और तमाशा समाप्त होना ॥

चाल-(नाटक) ला ला ला-भर भर जाम पिला गुलराला बनादे मतवाला

जय जय जय जय—निश दिन नाम जपो भगवत का—
बना के गुणमाला ॥ जय० ॥ टेक ॥

शुभ दिन यह आज है—श्रीपाल राज है ॥
सर जिसके ताज है—आनन्द समाज है ॥ जय० ॥ १ ॥
सत जगमें सार है—महिमा अपार है ॥
वह जगमें ख्वार है—जो माया चार है ॥ जय० ॥ २ ॥
जिसने धर्म तजा।—आखिर को दुख सहा ॥
जय धर्म की सदा—सबने यही कहा ॥ जय० ॥ ३॥
न्यामत धरम करो—सब पर दया करो ॥
हिंसा को परहरो—विषय भोग को तजो ॥ जय० ॥ ४ ॥

(ड्रोप सीन)

इति न्यामतसिंह रचित मैनासुन्दरी नाटक का
छठा ऐक्ट समाप्तम् शुभम्

श्रीपाल का राज करना

४३८

नोट—

(१) जब श्री बीरदमन नें जिन दिक्षा लेली तो महाराज श्रीपाल न्यायपूर्वक भूमंडल का राज करने लगे और आठ हज़ार राणियों सहित इन्द्र के समान काल व्यतीत करने लगे परन्तु हरवक्त धर्म में तत्पर रहते थे ॥

(२) नित्य नियमानुसार षट आवश्यकों (देव पूजा, गुरु सेवा, स्वाध्याय, संयम, तप और दान) में यथेष्ट प्रवृत्ति करते थे ॥

(३) मैनासुन्दरी से श्रीपाल के चार पुत्र (धनपाल मही पाल, देवरथ, महारथ, बड़े बलवान व उत्तम लक्षणोंवाले हुवे।

(४) रैनमंजूषा के सात पुत्र और गुणमाला के पांच पुत्र हुवे और अन्य राणियों से भी बहुत से पुत्र हुवे—कुल बारा हज़ार पुत्र हुवे. जो बड़े महाबली धीर बीर और गुणवान थे

(५) एक दिन महाराजा श्रीपाल दरबार में बैठे थे और सती मैनासुन्दरी भी सिंघासन पर बिराजमान थी कि एक बनमाली ने आकर खबर दी कि वनमें श्रीमुनि महाराज पधारे हैं जिनके प्रभाव से सब ऋतुओं के फल फूल फले और फूल गए हैं ॥ राजा ने सिंघासन से उठ कर परोक्ष नमस्कार

किया और अपने परिवार और परजा सहित दर्शन करने को बनमें पहोंचे ॥

(६) श्रीपाल ने प्रार्थना की, कि महाराज संसार से पार उतारनेवाला धर्म का उपदेश दीजिये ॥ श्रीमुनी महाराज ने धर्म उपदेश दिया और राजा श्रीमुनि महाराज की स्तुति करके वापिस घरको चले गए ॥

(७) एक दिन श्रीपाल ने उल्कानपात (बिजली की चमक) देखा तो आपको बिजली की चमकवत संसार असार मालूम होने लगा और वैराग्य पैदा होगया-अपने बड़े बेटे धनपालको बुलाकर कहा कि बेटा अब तुम राज करो और हम जिन दिक्षालेंगे, चुनांचे पुत्रको राज देकर आपने जिन दिक्षा लेली ॥

(८) सातसौ वीरों ने भी दिक्षा लेली और कुन्दप्रभा व मैनासुन्दरी व रैनमंजूषा व गुणमाला व चित्ररेखा आदि बहुत सी राणियां अर्जिकां होगई ॥

(९) महाराज श्रीपाल ने कुछ काल तक तप किया और केवल ज्ञानको हासिल करके दुनिया को धर्म उपदेश देकर मोक्षको प्राप्त हुवे ॥

(१०) महासती मैनासुन्दरी तप करके सोल्हवें स्वर्ग में देव हुवा और वहां से चयकर मोक्ष पाएगा ॥ कुन्दप्रभा ने भी सोल्हवें स्वर्ग में देव पर्याय पाई तथा अन्य राणियें भी अपने अपने तपके अनुसार गति को प्राप्त हुई ॥

श्रीपालका भवान्तर कथन

४३९

श्रीपालने श्रीमुनि महाराजसे अपने पिछले भव पूछे और श्रीमुनिराजने अवध ज्ञानसे इस तरह वर्णन किया —

(१) आर्य्य खंड में रतनसचयपुर एक नगर था जहां श्रीकंठ विद्याधर राज करता था और श्रीमती पटराणी थी ॥

(२) एक दिन राजा राणी सहित श्री मंदिरजी में गए और श्री मुनि महाराजजी से धर्म उपदेश सुनकर श्रावक के व्रत लिये, कुछ दिन बाद राजाने वह व्रत छोड़ दिये और मिथ्याती बनकर जैन धर्मकी निन्दा करने लगा ॥

(३) एक दिन राजा सातसौ वीरों को लेकर वनमें गए वहां एक मुनि महाराज को देखकर उनको "कोढी कोढ़ी" कहकर पुकारा और समुद्रमें गिरवा दिया, बादमें राजाको कुछ दया आई और मुनि महाराज को समुद्रसे निकलवा दिया ॥

(४) राजा एक दिन फिर वन क्रीडाको गए और मुनि महाराजको नगन देखकर उनकी निन्दा करी और उनको मारनेके लिये तलवार निकाली और मारने का हुकम दिया, पश्चात कुछ दया करके छोड़ दिया और अपने महल को चले गए ॥

(५) एक दिन किसीने यह सब समाचार राणी श्रीमती से कहदिये, राणी को बड़ा दुख हुवा और सोचन लगी कि हे प्रभू मुझे ऐसा पापी भरतार क्यों मिला ॥

(६) इस तरह राणी अपनी और करमों की निन्दा करती हुई उदास होकर पिलंग पर गिर पड़ी, इतने में राजा आगया राजाने राणीसे हाल पूछा मगर राणी न बोली, तब एक बांदीने राणीके उदास होने का कारण राजाको बताया राजा यह सुनकर लज्जित हुवा और अपनी भूल विचारने लगा और राणीको समझाने लगा कि हे प्रिये मुझसे बड़ी भूल हुई मैं बड़ा पापी हूं, अब मुझे नर्क में गिरने से बचाओ ॥

(७) तब राणी ने कहा कि हे महाराज आपने बहुत बुरा किया जो जैन धर्म को छोड़ दिया, अब आप श्री मुनि महाराज के पास जाकर प्रायश्चित लें और दोबारा जैनव्रत अंगीकार करें और अपने किये पर पश्चाताप करें ॥

(८) चुनांचे राजा श्री मंदिर जी में गया और श्री मुनि महाराज जी से जैनव्रत देने की प्रार्थना करी ॥

(९) श्री मुनी महाराजने राजा को सिद्धचक्र का व्रत दिया और पांच अणुव्रत दिये राजा मिथ्यात को छोड़कर और सिद्ध चक्रका व्रत और पांच अणुव्रत लेकर अपने घर आया और विधि पूर्वक व्रत पालने लगा ॥

(१०) जब आठ वर्ष पूर्ण हुवे तब भाव सहित उद्यापन किया और अन्त समय समाधि मरण करके सोलहवें स्वर्ग में देव हुवा ॥

(११) राणी श्रीमती भी समाधि मरण करके स्वर्ग में देवी हुई और भी अपने अपने कर्मानुसार गतिको प्राप्त हुवे।

(१२) वह राजा श्रीकंठका जीव स्वर्गसे चयकर श्रीपाल हुवा और राणी श्रीमती का जीव मैनासुन्दरी हुई ॥

(१३) निम्न लिखित फल हुवाः-

(१) मुनिको कोढ़ी कहनेसे श्रीपाल और सात सौ वीरों को कुष्ट हुवा ॥

(२) मुनिको समुद्रमे डालने से श्रीपाल समुद्रमें गिरा ॥

(३) मुनिको समुद्रसे निकालने से श्रीपाल समुद्र से निकला ॥

(४) मुनिकी निन्दा करनेसे श्रीपालको भांडोंने निन्दाकरी

(५) मुनिको मारनेका हुक्म देनेसे श्रीपालको शूलीका हुक्म हुवा ॥

(६) सिद्धचक्रकी पूजाके प्रभावसे कुष्ट अच्छा हुवा और राज सम्पदा पाई ॥

(७) पूर्व संयोगसे मैनासुन्दरी मिली ॥

४४०

दोहा-आदि अन्त जिन धर्मसे, सुखी होत है जीव ॥
याते तन मन बचनसे, सेवो धर्म सदीव ॥ १ ॥
न्यामत एक जिनधर्मसे, मिले स्वर्ग निर्वाण ॥
याते धर्म न छोड़िये, जबलग घटमें प्राण ॥ २ ॥

शुभम्

इति मैनासुन्दरी नाटक समाप्तम् शुभम्

(मिति मंगसर शुदी दशमी सम्वत १९६९
श्रीवीर निर्वाण सम्वत २४३९)

शुभम्

नोटिस

निम्न लिखित भाषा छंद बद्ध चरित्र प्राचीन जैन पंडितोंने रचेथे जिनके अब संशोधन करके मोटे कागज पर मोटे अक्षरों में सर्व साधारणके हितार्थ छपवाया है सब भाइयोंको पढकर धर्म लाभ उठाना चाहिये-यह दोनो जैन शास्त्र स्त्री पुरुषोंके लिये वडे उपयोगी हैं, इनकी कविता प्राचीन है और सुन्दर है ॥ दोनो शास्त्र जैन मंदिरों में पढने योग्य हैं —

(१) भविसदत्त चरित्रः—यह जैन शास्त्र श्रीमान् पंडित बनवारी लालजी जैनने सम्वन् १६६६ में कविता रूप चौपाई आदि भाषा में बनाया था जिसको कई प्रतियों द्वारा मिलान करके शुद्धता पूर्वक छपवाया है और कठिन शब्दोंका अर्थ भी प्रत्येक सुफे के नीचे लिखा गया है इसमें महाराज भविसदत्त और सती कमलश्री व तिलकासुन्दरी का पवित्र चारित्र भले प्रकार दर्शाया गया है। सजिल्द मूल्य २)

(२) धन कुमार चरित्रः—यह जैन शास्त्र श्रीमान् पंडित खुशहाल चन्द जी जैन ने कविता रूप चौपाई आदि भाषा में रचा था इसको भी भले प्रकार संशोधन करके छपवाया है इसमें श्रीमान् धनकुमार जी का जो का जीवन चरित्र अच्छी तरह दिखाया गया है। सजिल्द मूल्य १।)

(३) नमोंकार मंत्रः——फूलदार बढ़िया मोटा कागज मूल्य -)

पुस्तक मिलनेका पता —

बा० न्यामतसिंह जैनी सेक्रेटरी डिस्टिरिक्ट बोर्ड हिसार।

मु० हिसार (जिला खास हिसार)

पञ्जाब)